इंदिराज़

–नीलम सिन्हा

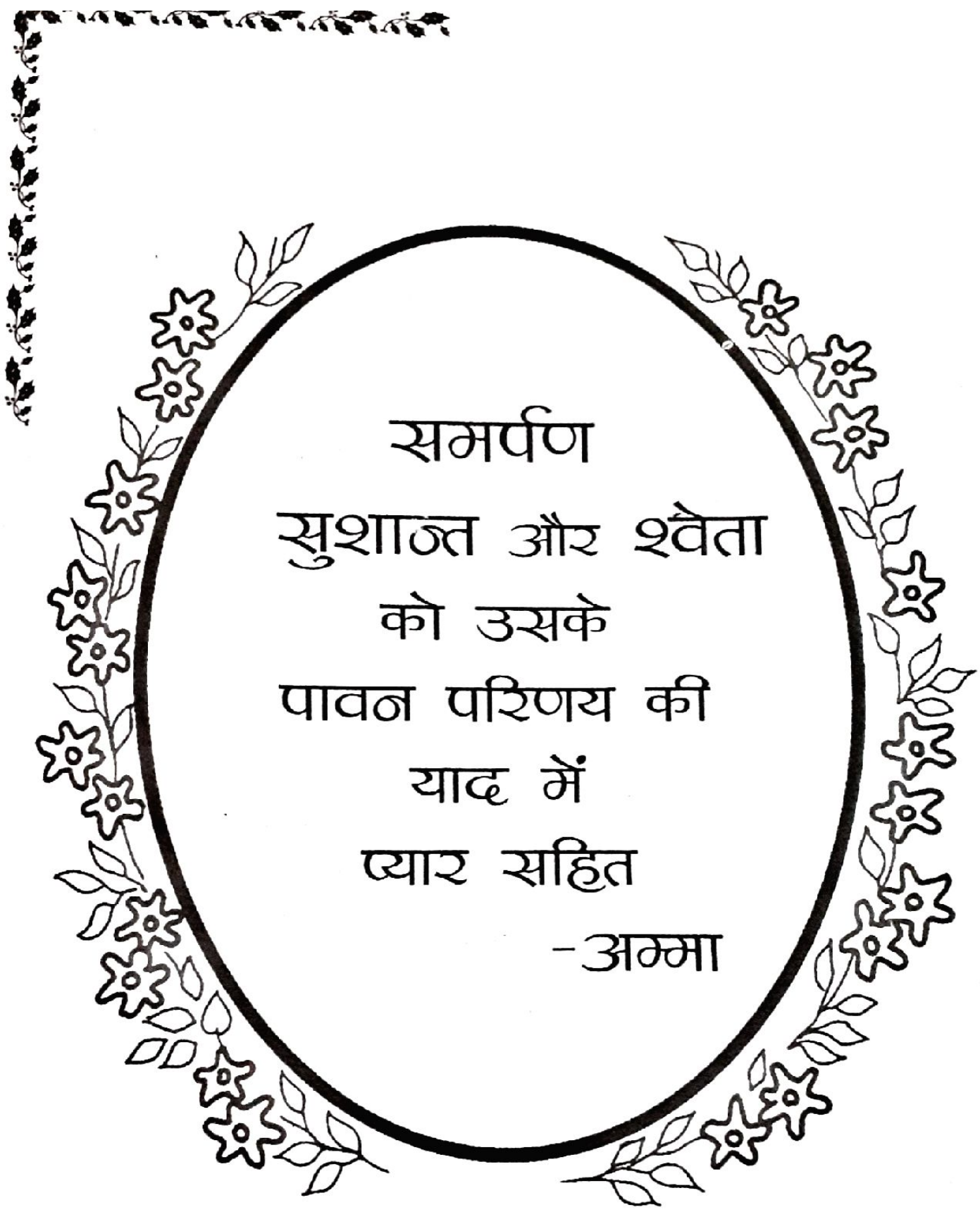

समर्पण

सुशान्त और श्वेता
को उसके
पावन परिणय की
याद में
प्यार सहित

-अम्मा

1

जीना है तो सँभल के रहो, स्वीट प्वाईज़न
इर्द-गिर्द हैं हाथ में लिए खास लोग
जमाना वह नहीं रहा, कि एक-दूसरे को
चैन से जीने देंगे लोग

2

दूसरों के जीने से, नफरत करने लगे हैं
अपने भी और पराये लोग
भरी बरसात में दूसरों का छत टपके तो टपके
सिर्फ अपने छत छवाने लगे हैं लोग,

3

मकानों में साथ रहते-रहते
सिर्फ अपने लिए कमरा ढूँढ़ने लगे हैं लोग
रोटी कम तो कौर, सालन कंम तो नमक-अचार
एक-दूसरे से बाँट लेते थे लोग,

4

हर शाम हर, घर में चूल्हा जले परस्पर
अँगीठी की आग बाँट लेते थे लोग
जहाँ तक संभव हो, दूसरे दालानों, दरवाजों तक रौशनी जाए
ऐसी जगह लालटेन, लटकाते थे लोग,

5

बरसात की अंधेरी पगडंडियों पर डरें नहीं, इसलिए
बिना कहे हम राह ..... हो लेते थे लोग
बिटिया की डोली हो, या अर्थी - जनाजा
हँसी-खुशी कांधा लगा लेते थे लोग,

6

पहचान ले कोई गाँव की बिटिया सीता या रजिया
का है घरबाला - गुड़ पानी - सलामी बिना नहीं जाने देते थे लोग
बहू - मेरी गाँव घर में मिलने-जुलने आयें
खाली आँचल ..... नहीं आने देते थे लोग

7

कमी का दिखना ..... मना था, सहयोग का था कमाल
कोई धान-दूब-हल्दी-पान मिलकर करते थे इन्तजाम लोग
सुहाग टीका-भरा-आँचल आशीर्वाद से भर देते लोग
रहीम की बेटी न राधे की, हर घर मायका तेरा
ऐसे बुलाते थे लोग

8

राम को, कोई रहीम का अपना चाचा बता
परिचय कराते थे लोग,
किसी का खेत-खलिहान न रहे उदास
अपना हल-बैल भिजवा देते थे लोग,

9

हाथ खाली, जेब खाली अपनी दिलेरी से
मन भर देते थे लोग
बड़ों को सम्मान से सर झुका पाँव में झूक जाते थे
बड़ों को बड़ा मान देते थे लोग

10

छोटे जो मिल जाए तो, हथेली की गरमाहट
शीश सहला आशीर्वाद से नहला देते थे लोग

कुछ पास नहीं - फिर भी निराश नहीं
उत्साह-उमंग की बातों से-राह दिखा देते थे लोग

11

अपनों से अपने बचने लगे हैं
हर घर में कुछ तो हुआ है
अपने लोगों से मिलने से
आम तौर पर डरने लगे हैं लोग

12

हर शाम अपनी छतों से
आँखों के कैमरे में
हर - घर - वालों की नजर - खबर होती थी
अब तो अपने मुहल्ले से दूर फ्लैट बनाने लगे हैं लोग

13

सब कुछ पाकर भी, गुम-सुम गुस्सा
अरुचि में जीते हैं लोग
दिखने में सर्वगुण सम्पन्न पर
भीतर से आधे-अधूरे हैं लोग

14

होली पे रंग अबीर, ईद पे सेवइयाँ खिला
खट्टे भी हो, उन रिश्तों को बताशा बना लेते थे लोग
अपनो को छोड़ो परायों को भी बाँहों में समेट
हृदय की धड़कन सुनते-सुना लेते थे लोग.

15

बताये कोई नई सदी में पुरानी बातें भूल
क्या-कौन-सी आधुनिक अदा दिखा रहे हैं लोग
पंच तत्त्व जस का तस - रक्त का रंग लाल का लाल
साँस भी वही हवाएँ दे रही फिर हम क्यों बदले - बेहाल ?

हमारे पुराने समाज में जो प्रेम - स्वाभाविक मिलनसरिता - सरभाव - स्नेह था जातिगत कोई नफरत-रीति-रिवाज का भेदभाव नहीं दिखता था - उसका मिलना महामुश्किल है -

वर्तमान जीवन में पीछे छूट गया - हमारा स्नेहमय अतीत आज भी बड़े बुजर्गों की जुवानी ..... सुनने पर यकीन नहीं आता है हम ऐसे थे।

16

अजनबी चेहरों से भी
नजर मिले, मुस्कराया करो
पल भर के लिए भी किसे के
दिल में उतरो, उतारा करो,
एक झरने-सी बही जा रही
रात-दिन ..... जिन्दगी
जो पल बीत रहा, फिर नही आनेवाली
कुछ तो दूसरों के लिए, वक्त निकाला करो

मुस्कराने में कुछ नहीं जाता - बस भीतर के भाव को होठों तक लाना है .... हम इससे अक्सर कंजूसी कर जाते हैं ....., करना नहीं चाहिए। हर पल सपने सा नहीं, हकीकत में बीत रहा है ..... फिर न जाने ये लोग - ये खुबसूरत धरती ..... पर हम सब की मुलाकात हो, न हो, मेहमान की तरह हम सब मिले हैं मुस्कुराते नजर ..... से क्यों न मिला करें, पता नहीं यह भाव हमेशा गुम क्यों हो जाता है।

17

कुछ होता नहीं, सिर्फ काफिया मिलाने से
मंजिल नहीं मिलती बिन चले सिर्फ पैर हिलाने से
बातें बनाने से कुछ नहीं होता है।

18

किसी के खिदमत में, कसीदे पढ़ने की फुर्सत नहीं हो
तो व्यवहार किसे मुहावरों - कहावतों से काम लेना ही सही हो
कुछ लोग - बिना काम, नाकाम जिन्दगी जीते हैं।

19

लोग आपके अपने हैं आप कहते हैं न,
कभी परखा है, वे आपके बारे में क्या कहते हैं।
किसी को अक्सर 'अपने है' कहते रहते हैं–कभी सोच है वे आपको खुले-आप–'पराया है' कहते हैं।

20

अजनबी सा अपनी गलियों में गुजरने से बेहतर है
सच में अजनबी गलियों में खो जाए
अपनों की बीच अजनबी सा दिखने से अच्छा है अजनबी जगहों में रहा जाए।

21

यह ठंडे लोगों की बस्ती है पता है ?
इसलिए चाय-कॉफी मुफ्त में मिलती है
कुछ ठण्डे किस्म के लोगों को मुफ़्त की चीजें ही आकर्षित करती हैं।

22

अपने खून के लिए, मत चिल्लाओ

ब्लड बैंक जाओ जो ग्रूप चाहिए खरीद लाओ

अपने खून की बड़ी तलाश रहती है ब्लड बैंकों की कमी तो नहीं।

23

यह चौथी दुनिया है मत हो भयभीत
कोई प्रीत रंग नहीं सिर्फ मुस्कुराने की है रीत

सब कुछ अभिनय-मुस्कान भी एक अभिनय का हिस्सा ही है।

24

कौन है अपना, कौन पराया ?
परेशानी क्या है ? एक से मिला करो, एक को मिलने कहो

मिलना एक बात है मिलने कहना दूसरी बात।

25

जिन खिड़कियों दरवाजों के पर्दे नहीं स्वच्छन्द निर्भय साँसों का होना तय है
जिन पे पड़े हो पर्दे, यकीनन घुटन, छुपन भय है

पढ़ते ही तीर जिगर के पार है ..... इन पंक्तियों के बारे में पढ़नेवाले के अलावे किसी को कुछ विचार व्यक्त करना बेकार है।

26

बालों को सुलझा के
चोटियों को बाँध के रखो
किसी की नजर उलझ जाएगी
दादी आप सही कहती थी
फिर सुलझाने की लाख कोशिश में
कंघी की उम्र निकल जाएगी

एक उम्र होती है जब कुछ स्वछन्द होना चाहता है - वही अनुभव हमारा हाथ पकड़ती है ..... इस बात का एहसास सभल गुजरने के बाद होता है।

27

चाय की प्याली से
करते हैं सुबह-सुबह दो बातें
यही तो समझती है, कैसी गुजरी है
हम सब की रातें
रात की बात पहले - पहल
आँखें ..... चाय की प्याली से ही
कहती है यह एक दम सही है।

रात की कहानी आँखों से – पहली प्याली चाय से नहीं छुपती ।

28

जब सामने वाले के चेहरे की
लिखावट पढ़ जाती है
बात करनी भी हो तो
चुप्पी छा जाती है
मनुष्य का चेहरा होता है एक किताब
पढ़ने आना चाहिए तब उसकी
ओर कदम बढ़ाना चाहिए।

आदमी का भाव उसके चेहरे के किताब पे छप ही जाती है और तब बढ़ने या रुकने की नौबत आती है।

29

तुम्हें मेरी कमी खलती नहीं
पत्थर बनते हो
पर पता है मौसम माहौल बदलता है
मोम-सा पिघलते हो
किसी से नफरत का, दिखावा कोई कर लेता है पर यदि स्नेह
होता है तो समय-समय प्रकट भी होता है।
क्यों गोली-बन्दूक बारूद पे उतरते हो

विष भरी बोली - हर युद्ध
जिनके जीतने का राज
उनसें क्यों नहीं मिलते हो
हमेशा गोली ही वार नहीं
करती - बोली भी वार करती है, और बोली-गोली से कम
निशानेबाज नहीं होती है।

कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके बोलते ही तीसरा विश्वयुद्ध हो जाए बिना – सेना के, गोली के सामने मानवबम कम है 'बोली-बम' को चलाकर देख लिखा जाए।

30

तपती धूप में शीतल फूहार बन
आवारा हवा के झोंकों से जो बचा लेता है
आदमी अपनों-परायों की भीड़ से
कितना कम पसंदीदा चेहरा ढूँढ पाता है
हर कोई एक मुट्ठी धूप-हवा-जमीन-आसमान खोजता है
पर इससे भी सत्य है कि वह अपने आस-पास अपने या परायों के बीच
एक पसन्दीदा चेहरा भी ढूँढ़ता है।

किसी के चहरे का भाव ..... बोलने की हिम्मत देता है- किसी की बोली ही एक युद्ध दिखा देता है ..... ! आदमियों की भीड़ - रिश्ते ..... जाने कितने जाने-अनजाने लोगों से सामना होता है ..... पर सम्पूर्ण पसन्द का .... एक चेहरा ढूँढ़ने के लिए कभी-कभी एक जिन्दगी कम पड़ जाती है।

31

'गर आसानियाँ हो जिन्दगी
दुश्वार हो जाए'
कहनेवाले वर्षों पहले कह गए
सारा खेल आसानियों का है ..... जिधर नजर जाए

इन पंक्तियों में वर्तमान की विडम्बनाएँ हैं लोग आसानियों के इतने आदी हो गये हैं, कि छोड़ नहीं सकते हैं, पीछे लौटने की गुंजाइश ही नही है- भौतिक जीवन की

आसानियों के नाम सहज - सुन्दर जीवन ..... बहुत पीछे छूट गया - सारा . ..... रिश्ता-नाता टूट गया, अपनी सुबहें - शामें - गोधूलि ..... चाँदनी रातें ..... सब खो चुकी हैं प्राकृतिक को भौतिकता सें हार मिली है।

32

घूँघट उठाया, तुमने, झनकार सी लगी थी,
नजरों से नजरों का जो हुआ सामना, वो पल बरसात की फूहार सी लगी थी
हाथों ने रखा, मेरी हथेलियों पे हाथ .. आजीवन साथ की कामना जगी थी,
आँखों से उड़ी - नींद पतंग, वो चाँद पे जा रुकी
धड़कनें लेती रहीं, तेरी साँसों के संग साँसें
हवा के किसी झोंके की जरूरत कहाँ रहीं ?
जो एक-दूसरे के लिए थे अजनबीं-अजनबीं
उसके लिए करने लगे, मन ही मन कामना, मनोकामना
बिछड़े नही दोनों, अंतिम साँस लेने से पहले कभी।

अब शादियों की स्थिति में लड़के-लड़की पहले ही एक-दूसरे से जान-पहचान लेते हैं - पर पहले ऐसा नही था, तो शायद इसी भावना के कारण दो अजनबी आसानी से आजीवन एक-दूसरे का साथ निभा जाते थे, और आज कल-इन भावों की संभावना नहीं - इसलिए आजीवन साथ की कामना भी नहीं।

33

वक्त को मापने का
जो भी पैमाना हो
उसके साथ उसी हिसाब से
चलते हैं लोग
कभी तारीखें - साल गुम जाते हैं
पैमाना छूट जाता है
घड़ी रुक-सी, रूठ-सी जाती है गिनती उसकी
ऐसे में बस यह ख्याल रहे
न लम्बी है
न छोटी है

बस चौबीस घंटे की कहानी होती है
लाख उलट-पलट जाए वक्त
बस वक्त को छोटा करके देखिए
सोचने से राहत मिलती है
छोटा करके राई भर फर्क न भी आये
तो भी दु:ख का, पहाड़ छोटा लगेगा

जितनी भी मारा - मारी करे
तीन सौ पैंसठ - तीस - इक्कतीस - सात - चौबीस - दिन - रात..... को बदलना प्रकृति और घड़ी के अलावे कोई छू नहीं सकता - इसे साल कहके बड़ा ..... करके न देखकर..... छोटा सा 365.....दिनों को काटने जैसा देखें तो ..... जरूर अच्छा - सहज लगेगा ।

34

मन के साथ कुछ देर मौन रहना चाहिए
मैं कौन हूँ ? मै क्या हूँ खुद से सवाल करना चाहिए

अपनी औकात को – मौन होकर समझना चाहिए, बोलने से समझ में यह आने वाली नहीं है ।

35

अपनी कीमत कभी मत लगाना
किसी खरीदार की आँखों पे आँखें रखना

अपनी कीमत खूद लगाना, सम्मान जनक नहीं है आपके पारखी – अक्सर सामने होते हैं ।

36

जरा दूर से देख रहे थे अस्पष्ट देख रहे थे
एक गेंद लुढ़क रहा था, उसे ही जिन्दगी कह रहे थे

जिन्दगी को जब तक दूर से देखो मूल्यवान सी कोई चीज दिखती है पर पास जाओ समझो तो एक अदना सी गेंद ही तो है।

37

धरे हुए हम सबको, इसलिए धरती है
हमको जिलाने को मिटती है, इसलिए मिट्टी है
काटो-पीटो-रौदों माँ जैसी है
इसलिए चुप रह जाती है, कोई सवाल नहीं करती है

धरती पर उसके अपने ही शयों से, जितना अत्याचार होता रहता है फिर भी सजीव माँ सी सब सहती है।

38

सड़कें तो सीधी बनती हैं, हमीं टेढ़ी चाल चलते हैं
हादसे हो जाए तो, अपनी गलती दूसरों के सर मढ़ते हैं

हम कितने टेढ़े-मेढ़े हैं हमें कहाँ दिखता है – दूसरों पे इल्ज़ाम लगाने के आदी हैं हम लोग।

39

समय से उलझो मत, जैसे भी हो बीत जाता है
जीवन घट लाख भरा हो, किसी दिन रीत जाता है

भरे थे तो थमा था – खाली हैं तो क्या हो रहा है। मत उलझें हम सब – स्वाभाविक है यह तो होता ही रहता है।

40

कुछ के स्वभाव में अच्छी बातों का अभाव होता है
डेटॉल में डुबाये रहो, तब भी इनका साथ घाव देता है

कुछ लोग जन्म से ही अच्छी बातें के विरोधी होते हैं, शिक्षा, संस्कार-वातावरण और विचार उनको बदल नहीं पाते।

41

भौतिकता में डूबा जीवन, ध्यान से देखो अजीब होता है
दिखावा जो भी कर ले - मन से बेहद गरीब होता है
रोज का जीना साँसों का खेल सारा है
धीरे - धीरे मृत्यु घट भरनेवाली धारा है

हम सब अनेकों मनोभावों के साथ सोते जागते हैं अनेक अच्छी-बुरी प्रतिक्रियाएँ साथ चलती रहती हैं, पर कोई असर नहीं सब क्षणभंगुर ही हैं ।

42

बड़ी खुशी
प्रतीक्षा, परीक्षा, मूल्य, इन्तजार
के बाद आती है, वह भी कभी-कभी
फिर एक एहसान दिखा
कभी - कभी सकुचाती भी है
पर कोटि-कोटि खुशियाँ
सुबह - दोपहर
शाम - रात
बिना दस्तक दिये
एकाएक आती रहती हैं
अपनी उत्सुकता हमें
कई दिनों तक हर्षाये रखती है
छोटी-छोटी खुशियों में ही
जीवन स्पंदित होता है
यह बिना मुहुर्त देखे -
किसी के पास
कभी भी पहुँच जाती है
बड़ी खुशी-बड़ी प्रतीक्षा
पर छोटी खुशी
लाये हरदम हँसी

बड़े होने से कुछ नहीं होता है
छोटा बच्चा बिन बोले
मुस्कुरा कर ही, दिल जीत लेता है-

बड़ों की हँसी बनावटी हो - बड़ी हों ..... खुशियों का अम्बार हो, पर एक तीन चार महीने के बच्चे की हँसी निश्छलता सौन्दर्य की जो घटा बिखेरती है उसका जवाब है क्या।

43

ससुराल जाना बिटिया
जो भी पकाना
खाना - खिलाना
पर रखना इतना
सखी से याद
अपनी रसोई में
टमाटर न रखना
मेहनत तुम्हारी
श्रेय वो ले जाएगा
तुम्हारे हाथों के
गुण को, कोई गुणगान न कर पायेगा

है तो मजाकिया पर सच है, टमाटर सारे गुणों में खुद को ऊपर ..... ले जाता है सब श्रेय वाहक।

44

एक अदना सा
नन्हा दाना
जीते जी बिना कसूर
दफन कर दिया जाता है
चूँ तक नहीं करता,
मौन हो - मिट्टी में ..... पानी - धूप की मार सहता है

क्या जाने ?
फिर जी जाने की जिद्द - या प्रतिकार प्रकृति से ?
मौन फल उसे मिलता है -
कोमल बन उठ खड़ा होता है
समय के साथ नन्हा पौधा बन - पेड़ बन
खिलता है फूल - फल
फैलाता है, शाखाएँ
अपने ही रूप रंग से भर जाता है
अपने फूल - फलों के नशे में
अनाजों के लहलहाते बालियों के संग
झूमता है, गाता है, हवाओं के राग पर
खुशबुओं से भरे डालियों में
परिन्दे बनाते हैं, घोसलों - गाते हैं
सुबह प्रभाती तो शाम संध्यावंदन
सूरज की रोशनी चाँद की चाँदनी
एक नन्हा बीज बन जाता है अनेक बीजों का राजा
मिट्टी में दबा - कुचला मौन बीज
कितना वृहत - मुखर - सज सँवर कर
फिर ..... आ जाता है
अक्षर-सा अक्षय बीज .....

सोना तपता है तो निखरता है - बीज दफन होता है तो नवजीवन आता है ..... कर्म में - त्याग में जीवन मर्म छुपा है और वह मर्म अक्षय है अक्षय रहेगा।

45

लड़के के विदाई पर
माँ कहती है
बेटा तू मेरा, बीस वर्षों का मात्र साथ तेरा,
आज जिसे वरेगा, जीवन भर साथ रहेगा,
कन्या रत्न,
कन्यादान से मिल रही है-

माँग सजा के, उसके वरदान बन रहे हो,
भगवान के बाद उसके लिए तुम्हीं हो,
साथ निभाना ऐसे
आसमान में सूरज चाँद जैसे,
मन को देना चन्दन की ठण्डक,
आँचल में लाल-पीले-फूल
उसको दु:ख देने की कभी न करना भूल,
मेरे दूध की लाज रखना
उसको दिये, सात वचन सदा याद रखना .
मानव जीवन में दो नारी जरूरी है
उसके बिन पुरुष की जिन्दगी भी अधूरी है–
तुम दोनों का साथ - वक्त के हाथ
वो एक-दूसरे को सुख दे या दु:ख दे
ऐसे में एक दूसरे को देना हिम्मत हौसलों
की सौगात, - कदम मिलाकर चलना, लिये हाथ में हाथ,
कभी विगत में मैं थी अब वह है, और रहेगी
माना वह दूसरी नारी है–
पर वह परायी नहीं, अर्धांगिनी तुम्हारी है
जो अरमान लेके आई है
सब पूरे करना, सिन्दूर की छोटी डिब्बी में
सदा सुहागन का आशीर्वाद छुपाकर रखती है
पूरी करना उसकी कामना,
उससे पहले तुम उससे मत बिछड़ना'

ऐसा होता तो कैसा होता ? ..... हर घर स्वर्ग .... हर घर तुलसीदल।

बेटे ऐसी बातें माँ से ग्रहण करके, जीवन का नया अध्याय प्रारंभ करें, तो जीवन बहुत ही खुबसूरत हो जाए - पर माँयें अकसर ऐसी शिक्षा दे नहीं पातीं - शायद या सत्य जो भी हो पर ऐसी शिक्षा पे हर घर के युवक चले तो जीवन ..... अच्छा ही नहीं काफी अच्छा हो जाएगा - एक घर आँगन एक माँ का आँचल घुटने का गम भी खत्म हो जाएगा और नया घर आँगन और नई मां, मिल जाएगी पर ..... लड़के-लड़कियाँ - माँ ..... जाने क्यों सदियों से समस्या सी दिखती है - सम्पूर्ण विश्व

की समस्याओं में एक कभी न खत्म होनेवाली समस्या है - माँ-बहू संबध क्यों बेटों को जगा नहीं पा रही ? माँ नहीं उठायेगी तो कौन उड़ायेगा यह जिम्मेवारी ।

46

कानून बनाते हो, बातें बना मंच की शोभा होते हैं
जैसा कल था - वैसा ही सब कुछ आज है
कभी सोचकर देखो, हमारे लिए क्यों नहीं
निर्भय - सुहानी सपनों वाली रात

हमेशा नारी सम्मान - बेटियाँ महान - बराबर हक ..... जाने क्या-क्या मंच सें वाक्य बना तीर सा फेंका जाता है जाने कब से ? उसका कोई उत्तर नहीं है..... सच्चाई जो विगत में था, वही आज भी है नारियाँ निर्भय नहीं हैं..... उनके लिए हर रात डरावनी है हर सड़क सन्नाटों भरी है कोई जगह कोई घर.... कोई बिस्तर ऐसा नहीं दिखती है जिस पर चैन से सोकर..... वह सुहाने सपनों की दुनिया में निडर..... स्वछन्द सपने देख सकें ।

47

खत्म के कगार पर हर एक आस
शायद आनेवाले कल ने थाम रखी है साँस

खुशनसीब वह पौधा, जो तुलसी के आस पास
फलता-फूलता है
बदनसीब होता है वो पौधा जो गली झाड़-
झँखाड़ में खिलता मुरझाता गुमनाम मिट्टी में मिलता है

48

घर आँगन - गोद - कंधा
बड़े नसीब से मिलता है
वरना इसके अभाव में
बचपन बड़ा बिलखता है

49

आज बिगड़ा है, कल सँवर जाएगा
ऐसे विश्वास को
कौन किसी से .....
कभी कैसे छिन पाएगा

50

अँधेरा है घंटे - दो - घंटे में
उजाला होगा
प्राची बता रही है उषा से
सूरज आँख खोलने वाला होगा

आशा की किरण – तुलसी से सटे पनपने का सुख – किसी का सच्चा स्नेह – आत्म विश्वास – हर सुबह सूरज से जीने की प्रेरणा कोई पल कभी सब कुछ खत्म कर देता है और यही कोई पल उत्साह का संचार कर देता है..... यानि उत्साह प्रकृति दे-मनुष्य दे ..... या वातावरण में दिखे निराशा के आकाश वे बूँदों की चादर तान मन में आशा के अंकुर बो जाती है।

51

मुझे कोई पढ़ता है
या पढ़ेगा
इस सोच के साथ
लेखनी चलती नहीं,
लिख जाती है
कुछ बेहतरीन पंक्तियाँ तो
दस के नजरों से जब तक न गुजरे
किस्मत सँवरती नहीं

लिखने वाले जैसा लालची नहीं होता कोई, खुद आपनी पंक्तियों पर फिदा होने के बाद, औरों को फना कराने को बेहद तत्पर होता है।

52

चालाक और चालाकी का परिणाम
सिर्फ यही होता आया है
सहजता खुद से जुदा होता है
जिससे चालाकी की जाती है
मुँह मोड़ खड़ा होता है
महामूर्ख है महामूर्ख
इसे जीत समझते हैं ?
पर इससे बड़ी पराजय
रोग दूसरा नहीं होता है

जिस व्यक्ति में चालाकी है- वह बेहद बदनसीब है- सब उससे नफरत करते हैं- वह समझता है, हमारी बुद्धिमता से सब जलते हैं- हँसी आती है, जिस चालाकी का गर्व है, वह उसकी बदनसीबी है..... लोग उससे दूर होते जाते हैं ..... इससे ज्यादा पराजय और क्या होगी ?

53

मिजाज की बात है
छत- चौबारे देहरी
बरसात में बचा लेते हैं
तपती है जेठ दुपहरी तो
छत ही उड़ा लेते हैं

प्रकृति के-
मन मिजाज से जो चीजें आराम देती है, मिजाज बदला तो दिन दुपहरी में भी आँखों के सामने सब है पल में लेकर जाती है ।

54

न कोई मान
न कोई अपमान

न कोई तन्हा
न कोई साथ
न कोई जीत
न कोई पराजित
न कोई वाह !
न कोई आह !
धड़कते दिल की मात्र कहानी है
खुली आँखों तक की जिन्दगानी है

मान - अपमान - लोभ - लालच - अहंकार - अधिकार जीत - पराजय कहीं कुछ नहीं ..... हैं आँखें खुली खेल चल रहा है धड़कनें बन्द पटाक्षेप । उसके लिए इतनी मारा - मारी ।

55

ये सड़कें हमारे लिए
दिन-रात जगी रहती हैं
मंजिलें - मकसूद तक पहुँचाये न जब तक
हमारे कदमों तले चुपचाप बिछी रहती हैं

सड़क सा साथी नहीं ..... सड़क सा विश्वासी नहीं, सड़क सा सहनशील दूसरा कोई नही, मौन कदमों तले - रौंदाता ..... फिर भी प्रशस्त राह करने की कस्में निभाता ।

56

समय बहुत ही बेवफा है
एक दिन-
एक पल - उठा के बिठा देता है
गगन पे,
नाम - शोहरत - दौलत का अम्बार
और वही समय–

समय के साथ
गुमनाम - कर देती है
न नाम, न शोहरत न
न बचती अपनी शख्सीयत,
यही जिन्दगी है
यही इसका ताना - बाना
शोहरत हो या गुमनामी
एक दिन तो है सब कुछ का खो जाना

ये पाना ..... कुछ भी पाना ..... भरपूर भाव भर देता है ....., पर समय के साथ ..... जब सामना होता है तो इसका मन डगमगाता है, पर सच्चाई से सामना भी होता है और तब ..... आज नहीं तो कल समय की धारा में बह जाती है, न वह तेरी न वह मेरी कहानी, वह तो समय के साथ बहने वाली खूबसूरत समय रूपी धारा है।

57

बीत गई चाँदनी - पूरवाइयों भरी वो रात
अब तो ग्रहण लगी - धुँधली सी अंधेरी रात
जीवन का प्रारंभ बड़े ख्यालों
सपनों सें होकर गुजरता है- पर जैसे
प्रात:काल की कच्ची धूप दोपहर में
पकती है तपती है..... और जब संध्यावेला
यानि जीवन की संध्यावेला आती है वैसे
वैसे-वैसे धुँधली स्याह अंधेरी रात
का भान होना लाजिमी है..... यानि
जिन्दगी की सुबह हो गई, शाम हो गई .....
यानि जिन्दगी तमाम हो गई।
बस ..... यही हम यही हम-
फिर किसलिए, किसी बात का गम,
किस लिए क्यों करते हैं प्रश्न

तुम्हारा अल्हड़पन, मेरी आवारगी
खिलाएगी गुल - गुलशन बन, गुलफाम
या देंगी - तिष्णगी ..... बेचारगी
या हो जाएगी यूं ही तमाम

कभी - कभी जिन्दगी को गंभीरता सें नहीं भी लिया जाए, तो कदम सही उठते हैं मंजिल मिल जाती है, पर कभी - कभी - संजीगदी का न होना - तमाम उम्र की प्यास व दिन - महीने - सालों के कलेण्डर में तब्दील हो जाती है ..... तो किसी को कुछ किसी को कुछ इल्ज़ाम ।

58

सब कुछ यहीं मिला, रहेगा भी यहीं,
दो खंडहरों के बीच सारा बवंडर
दोनों का सजाओ - सँवारो
ईंट-पत्थरों का खण्डहर हो
या हो यह हाड़ मांस का अस्थिपंजर
दोनों कभी न कभी गिरेगा
ईंट के घर यानि खण्डहरों में तब्दील
होने वालों में हमारा शरीर रहता है-
और हमारे शरीर के भीतर के खंडहर
में हम रहते हैं ..... उसमें हमारी संगिनी
साँसें भी रहती हैं।

संगिनी एक न एक दिन हमसे ऊबकर, हमें धोखा देती ही है और तब हमें दोनों खंडहर दगाबाज नजर आने लगते हैं। आश्चर्य इस बात का है, कि जब तक ये हमें धोखा न दें, हम इसे ताजमहल या बुर्ज खलीफा समझते रहते हैं ..... और शरीर के भीतर के खंडहर को मन मन्दिर - वाह रे खंडहरों को मूर्ख बाशिंदे हम लोग।

59

कुछ चीजें दिल याद रखती हैं
कुछ दिमाग - फर्क है दोनों में

दिल की यादें दिखे न फिर भी
दिल दुखता है
दिमाग - अपने विवेक सें
उन यादों पे महरम बन जाता है।

दिल भी अपना दिमाग भी अपना ..... पर दोनों अलग-अलग राहत देती हैं. ..... दिल नाजुक है, नाजुक मसलों पर कमजोर पड़ जाती है, उदास हो जाती है, पर दिमाग ठोस कदम उठाता है, और उन यादों पर विवेक का मरहम लगा - समझने की स्थिति लाकर मन - को हल्का कर देता है।

60

कोई किसी से शिकायत करता है
मेरा क्या ? मेरी क्या पहचान
पर तुम्हारी राह भी नहीं आसान

मैं पथ समझी तुम पगडण्डी निकले
जिन्दगी .....
मेरे लिए गीत - गजल - शतरंज
तुमने बना दिया, कबड्डी और पतंग

एक अगर किसी कारण दूसरे के जीवन को भट्ठी बनाता है, तो उसके ताप से लाख दूर रहे खुद को बचा नहीं पाता है- दूसरों को - बिना सोचे समझे लोग कितना बेकसूर ..... दु:ख देते हैं ..... लेकिन वह समझदार निकला तो गीत - गज़ल ..... सा उसे सहज समझ जी लेता है- कठिनाई तो उसके लिए है जो कभी पतंग सी ..... कहीं गिरेगा तो उसकी क्या दुर्गति होती है यह सोचने वाली बात है-

महत्त्वाकांक्षा तय करो
चलते रहो - चलते रहो,
बीच राह पे थक जाओ तो ?
जिद्द छोड़ो - लौटने का साहस करो

तय तक पहुँच, जाते तो क्या हुआ ?
तय तक, नहीं पहुँचे तो क्या हुआ ?
प्राप्ति
अप्राप्ति
दोनों के बाद भी कुछ नहीं होता आया है

जीवन में सफलता मिलती है या असफलता ..... सोचे बिना चलना - चलना ..... बस चलना। मंजिल मिले अच्छी बात न मिले तब भी अच्छी बात .... यदि दोनों में सम भाव रहना बड़ी बात है
न प्राप्ति का आनन्द न अप्राप्ति का रूदन

61

जब तक कोई स्वीकार नहीं करे
तब तक
कोई चीज
बात - व्यवहार - विचार
कोई किसी पर थोप तो सकता है
हृदय में अंगीकार कराना
असंभव है।

एकदम सही है, ध्यान से देखने पर लगता है, कि कोई चीज बेमन से पहन-ओढ़ लेना अलग बात है, किसी का मन रखने के लिए, पर हृदय से स्वीकारने के लिए ..... किसी को बाध्य नहीं किया जा सकता।

62

'जो घड़ा है भरा
वही तो प्यास बुझायेगा
वो क्या जो
खुद आधा खाली है'
जी ! मैं कुछ कहना चाह रही हूँ

भरा घड़ा
छलकता है-
प्रदर्शनकारी दिखता है
जो आधा है भरा
वो ही अंजूरी भरता है-

63

खुश रहेंगे, वे लोग तुमसे
जिनके लिए मौन हो जाओगे
वो तो सवा किलो लडडू बाँटेंगे जिनके लिए
जीते जी 'कौन' हो जाओगे,

64

किताबें पढ़के परीक्षा पास कर लेते हैं
पर सार्थकता उन्हीं की हो जाती है
जिन चन्द शब्दों वाक्यों के कुछ सीख
जीवन भर के लिए, व्यवहार में उतर आते हैं।

65

बन्द खिड़कियाँ, दरवाजे बन्द
दूर-दूर तक पसरा सन्नाटा
आवाज की गुंजाइश नहीं दिखती
क्या ? गूँगे - बहरों का मकां

कुछ आधा होकर ही पूर्ण भाव में होता है - जिन रिश्तों में मौन भाव हो, वह निभता है। चारों तरफ भीड़ - भीड़ ..... पर इसी भीड़ में कभी ऐसा सन्नाटा पसरता है ..... गूँगे बस्ती का एहसास होने लगता है।

न जाने कितनी किताबें पढ़ते हैं - पढ़ाते हैं - सब याद नहीं रहती हैं पर किन्हीं - किन्हीं पंक्तियों की यादें - अर्थ सब जीवन भर याद ही नहीं रहती, बल्कि उनका प्रयोग उपयुक्त समय पर ..... अपनी अहमियत ..... रखती है और सही अपनी ..... यादें विगत में जाकर अच्छा महसूस करती हैं।

66

हर प्रश्न का उत्तर मौन
बन जाया करेगा
शोर खुद व खुद कम हो जाया करेगा
पर एक प्रश्न के हजार, उत्तर बोलने की आदत है
हाँ - ना से जहाँ काम चल जाएगा
वहाँ शब्दों की आँधी चलती है
ज्ञानी है - विज्ञानी हैं
आखिर यही तो मौका होता है
गँवाया क्यों जाय
मुफ्त की बोली है
वाक्य पर वाक्य क्यों न
बनाया जाए

ईश्वर पर इल्जाम है मुकदमा करने का मन है उन्होंने सब चीज की कीमत रखी और शब्दों को बेकीमत कर दिया - वरना इसकी ऐसी बर्बादी नहीं होती। किस तरह उस कचहरी में जाए – भगवान को कैसे कटघरे में लाए ?

67

जीत और हार का
नफरत और प्यार का
ठीक से पता तब तक चलता नहीं
एक गेम तक व्यक्ति खेलता नहीं

किसी भी चीज की परख जरूरी है, यह अनुभव से ही आती है।

अपने स्वप्न डोर, किसी को मत थमाना
संभावना है बीच राह में छोड़ दें
अपने सपनों को आप सँभालो
साकार तो आभार, बेकार तो खुद ही जिम्मेदार

अपने अपने केवल अपने ही रहे तो अधूरे भी रहे तो ज्यादा गम नहीं होता है।

68

जिस किरदार को देखा नहीं
अनुभव नहीं
उस किरदार के अभिनय में
मत उतरना
सफल कभी नही होंगे

अभिनय में टेक पर - टेक लेते, उम्र गुजर जाएगी यदि उस बात के किरदार का अनुभव नहीं हो।

69

बदनाम हुए तो भी नाम है
नेक नाम हुए तो नाम है
जो न बदनाम है न नेकनाम है
वो क्या ? वो तो वस राम नाम है

सीधे-सादे लोगों के लायक यह दुनिया नहीं है।

70

यह आदमियों का घर नहीं है
परिन्दों का घोसला है
अन्तर बस यही है वे दाना लेकर आते हैं
आदमी देर रात कमरे में एक बल्ब जलाने आता है

आप खुद देखिए ..... गलत हो तो उँगली उठाइए।

71

सब घर श्रवण से भरा है
देखते - देखते मन भर गया
भागे ही रहे ..... इन घरों से
भूलना मत माता-पिता के कारण ही
श्रवण ..... और उसका घर उजड़ गया

माता-पिता की उपस्थिति कुछ मायनों में सुखद है, तो उससे ज्यादा दुःखद भी। समझदारों के लिए इशारा काफी है। विश्व इतिहास सें एक माँ ला दो ..... जो बेटे की पत्नी के साथ सहज हो ..... और एक पत्नी ऐसी ला दो, जो पति के माँ के साथ सहज हो।

ये अजीब रिश्ता है भगवान इस रिश्ते को परिभाषित करना भूल गए इसलिए यह जब से संसार है और जब तक रहेगा - इसे कोई किसी भी कोण से इसें विश्लेषित नहीं कर पाएगा, सबसे अबूझ कठिन ..... लाजवाब - मुश्किल।

72

अपनी जिन्दगी जगी ही थी
अभी-अभी थी आँख खोली कि चलना, बोलना - शुरू।
जिन्दगी जीने की शुरुआत
हो सकती ठीक से उसे समझ पाते
उससे पूर्व ही, दूसरे जिन्दगी की
तैयारी-जिम्मेवारी आ गई
अपनी जिन्दगी ..... खो गई
सदा के लिए खोती चली गई .....

जिन्दगी हमेशा से मजाक करती रही है ..... जब तक हाथ-पैर सँभालो खड़े होओ ..... अपने बारे में कुछ सोचो, तब तक दूसरे का हाथ थमा दिया जाता है, और क्षण में अपने को समझने की पहली सीढ़ी, छिन जाती है, और दूसरे आप को सीढ़ी बना हाथ थामे ..... जिम्मेवारियों का एहसांस करा देते हैं, और अपनी पहचान, अपना वजूद, हमेशा के लिए सतह से उठ जाता है, और आदमी फिर अपना नहीं हो पाता - दूसरों के पीछ एक चक्रव्यूह में घूमता है, उसी में जीता है उसी में मरता है .....

73

ख्वाब देखने से, कोई किसी को रोक नहीं सकता
व्यक्ति खुद चाहे तो वंचित कर सकता है
जब किसी के एक ख्वाब बिगड़ते हैं

धराशायी होते हैं
हतोत्साहित मनुष्य
दुबारा ..... कम-से-कम जल्दी तो
हिम्मत कर नहीं पाता,
अजीब हैं हम सब, मानव जाति की
हकीकत - हिम्मत नहीं, कमजोर हिम्मत
उन्हें ख्वाब भी डरा जाते हैं
हरा जाते हैं ?

कभी-कभी सपने सोते में डराते हैं, कुछ जगी आँखों के सपने हैं जो इतना डराते हैं कि हिम्मत टूट जाती है-

74

आलिशान घरों में भी
हैवान हो सकते हैं
साधारण घरों में भी
भगवान हो सकते हैं
इसका फैसला तो उनके
बात - व्यवहार विचार से
ही कर सकते हैं-
चेहरे तो मूखौटे भी लगाए रहते हैं

बड़े घरों में बात-विचार से, बड़े लोग हो, ऐसा नहीं होता है। सादा जीवन उच्च विचार साधारण घरों की देन होता है।

75

अपना - अपना करते
सारी उम्र गुजर गई -
भ्रम के इन तटों से
टकरा-टकरा कर
अपनेपन सा सच भ्रम-भंग के रूप में सामने आता है।

76

किसी गलत बात पे भी
मौन रखती है
'अभाग्य - बुज़दिली - कायरता
लाचारी - ?'
या किसी और के भाग्य की
मजबूत शोषण शक्ति
या.....
किसी की समझदारी
या एक तटस्थ शक्ति

व्यक्ति कभी किं: कर्त्तव्य विमूढ़ होता है तो यह शंका मूखर हो उठती है।

77

बना के
रखना चाहते हैं दूरियाँ
शायद बीच में आ रही हैं
दोनों ओर की कमजोरियाँ,
वक्त का ही खेल होता है
ये वो ही रिश्ते हैं
जिनके लिए, एक दिन जिये जाते थे
आज मर भी जाएँ तो
कांधे तो दूर .....
श्मशान के रस्म भी नहीं निभाते हैं।

उम्मीदों के टूटने में कुछ कमजोरियों का हाथ भी होता है।

78

पहले सोचती थी .....
पर अब नहीं

कर्मशील भी अभागा हो सकता है
अकर्मण्य सौभाग्यशाली
कर्म को निष्फल देख कभी-कभी मन में ये बातें आ ही जाती हैं।

79

मत ..... ढूँढ़ना
दु:ख में कांधा
सुख में बाहें या गर्म हथेली
अपने सुख में अकेले मुस्कराना
अपने दु:ख को खुद सहलाना
मत बनाना .....
सुख-दु:ख में किसी को साझेदार
कोई नहीं होता ..... किसी के लिए
बनना पड़ता है खुद अपना कर्णधार

इन पंक्तियों में बहुत सहज भावों में जिन्दगी की सच्चाई प्रकट हो रही है - बहुत लोग मानेंगे, बहुत लोग नहीं पर ..... ध्यान देने पर ये बातें एकदम स्पष्ट है सच है।

80

तूर्क यम जाल
था कह रहा वो अपने पसन्द का राज,
वो जैसी है जो भी है
दही बनाती है लाजवाब।
पसन्द का तुला दही ?
सबका दिमाग घूम गया, पसन्द का तुला दही ?
पर उसके पसन्द पे
गर्व व संजीदगी साथ - साथ दिखी आज।
स्टेट बैंक का पहला कमरा

बैंक मनैजर पद पर बैठी थी वो आज,
खुश था बेहद खुश
शरमाया सा मानो कहना चाहता था
'मेरी शरीके - हयात .....
और मैं कहना चाहती थी
नववर्ष पर बहू, मेरी, निभा रही, इतनी बड़ी जिम्मेदारी
नववर्ष पर आशीर्वाद दूँ आ गई अब मेरी बारी।
दिल से निकली दुआ'
'बेटी हो, कभी हरना नहीं
न बहू बन डरना
जिन्दगी जूआ सा है
तुम उससे कभी मत भागना'
धैर्य देना अपने प्यार को,
अपने जीवन नैया को साथ-साथ
मुस्करा कर, स्वस्थ रह कर खेना
'चलो दिलदार चलो
चाँद के पार चलो' गीत गाना
किसी के बच्चे सफलता की सीढ़ी
पर दिखते हैं तो मन गर्व से भरती ही है
जन्मदाता को भी आज
कर रही – आभाव-आभाव आभार

81

गाछ के पके स्वाभाविक
फलों में, जो खुशबू
और होती मिठास होती है आसपास
वैसे ही हमारे .....
बुजुर्गों सें मिलो तो
मिलती है

अनुभव की खुशबू
और बोली में धुली
बोली - की मिठास

जहाँ अनुभव है वहाँ कोई कमी नहीं है।

82

प्रेम उढ़ेलने के लिए
पात्र चाहिए
उसें संभाले सबल हाथों से -
एक सुपात्र भी चाहिए,
इसका ख्याल हमें ही रखना है
जो ऐसा नहीं करते,
उनका प्रेम छलक-छलक पात्र को खाली करता है
सुपात्र हाथ पे हाथ धरे खड़ा रहता है

ऐसे तो सब चीजों का उसके लिए जगह - मौसम - वगैरह चाहिए, तभी वह बच पाता है - पर प्रेम के साथ और भी परेशानी है यदि उसे सुपात्र में नहीं सँभाला जाए, तो छलक-छलक खत्म हो जाना तय है।

83

आपके पास -
अपनी बातों को लेकर
कोई आये
उसे और उसके बातों को
उचित सम्मान दो,
पर भूल कर भी
अपनी बातों को लेकर
किसी के पास मत जाओ,
हो सकता है

उसकी विचार धारा तुमसे अलग हो
इस लिए -
खुद को बचाओ और बचाओ
अपनी बातों को -
इन बातों का वाक्यों का रहस्य,
खुद ही समझ जाओगे
जब सोने से पूर्व .....
आती नींद को रोक .....
चिन्तन करोगे ..... इस बात को,

कोई किसी के लिए
चिन्तित नहीं
न कोई करता है चिन्तन,
हम यूँ हीं ..... ढूँढ़ते रहते
किसी और में अपनी धड़कन

अपनी समस्याएँ इतनी अपनी हो जाती हैं कि हमें दूसरों से प्रकट करने की जरूरत नही होनी चाहिए।

84

धरती कितना समझाती है
पर हम मानते नहीं-
रूमाल - है।
दुपट्टा नहीं है।
चादर है
टेंट नहीं है।
टेंट है
आकाश नहीं है।
इसी चक्कर में जिन्दगी खो जाती है
अभी भी वक्त है

सब छोड़ो
शांति और स्वास्थ्य साथ
मेरे से जुड़े रहो
माँ हूँ..... सिर्फ मिट्टी नहीं
अन्न - हवा - पानी
इनकी कमी न होने दूँगी कभी

असंतुष्टि ही हमारे सारे दु:खों की जड़ है यह कभी समझ में ही नहीं आती कि जीने के लिए धरती ने जरूरी चीजों का जिम्मा ले रखा है फिर हम क्यों बेचैन हैं? अन्तहीन प्रश्न अन्तहीन कामनाएँ ..... अंतिम साँस तक ? आखिर क्यों ?

85

प्रेम - प्यार - मोहब्बत
रही हो
किसी सदी में
जिस - तिस सबके लिए
पर आज ?
पर आज नि-शुल्क
बाँटते जा रहे हैं
कभी सोचा है इसका अंजाम ?
शायद आपको पता नहीं
हृदय सागर सूख रहा है
मन सागर कब सें सुखा पड़ा है
मस्तिष्क सागर में बची है थोड़ी सी जान
ऐसे में
छिट-फूट नदियों
झरनों झीलों से
चल रहा है काम
इसलिए सँभलिए
अभी भी थोड़ा वक्त है

शुल्क दर बिठाइये
ताकि हीरे - मोती से भी
आगे दाम भाग जाए
ऐसे - गैरा
प्रेम की छाया छू न पाए

प्रेम देना अच्छी बात है लेना भी -पर एक तरफा हो, तो एक का मिटना तय है।

86

प्यार दो
प्यार लो
भिक्षा सा-
आदान - प्रदान है
इसके परे सोचते-समझते हो ?
तो खुद धोखा खाते हो
दूसरों को धोखा देते हो
इसे साबित करने के लिए
कसमें - वादे
न जानें कितने गण्डे - ताबीज
पंडित - पुरोहित
सूफी ..... संत .....
मंदिर - मस्जिद
शीश नवाते हो,
दलीलों की अनगिनत फाइलों में
खुद को उलझाते हो,
आज की बात छोड़ो
सदियों का सच यही है
लवकुश का बचपन लावारिश है
भरत जंगल में जन्म ले लेता है

न जाने कितने उदाहरणों से
यह संसार भरा पड़ा है
अब भी समझो, कहीं कुछ नहीं है
मतलब - का फेरा है सब
कोई नहीं, किसी को प्यारा है
खुली आँखों से, सपने देखने का
सारा बखेड़ा है-

प्रेम देकर - प्रतिदान की आशा भिक्षाटन है बस।

87

कभी-कभी कुछ हो जाता है
न फर्ज था न कर्ज
एक कोई उन्माद-सा
स्पष्टीकरण - दलील - तर्क
गंगाजल - तुलसीदल की सौगंध खा
इल्जाम लगा देता हैं ऐसे में ये,
चन्द लोगों को खा जाता है

कभी-कभी अनजाने में कुछ अजीब स्पष्टीकरण का शिकार बन जाते हैं हमलोग कसमें - पवित्रता सब के इर्द-गिर्द भटक जाते हैं यह होता है किसी अंध बहरेपन की जिद्द के कारण।

88

सिर झुका के रहने का रस्म है
सामने वाले के पसन्द का
विरूदावलि गाना है
सिर उठा नहीं कि
शाम-दाम-दण्ड-भेद

हास्य-व्यंग्य का बखिया उधेड़कर
भूत - भविष्य - वर्तमान का
सिर कुचल दिया जाएगा
या स्वीट प्वायजन ..... दिया जाएगा

कुछ लोगों की ऐसी मनोभावनाएँ होती हैं कि वे सब पर हावी होना पसन्द करते हैं। इन लोगों को अपने को बड़ा और सामने वाले को नीचा दिखाने की कला आती है। उन्हें हर समय आत्मप्रशंसा। करवाने की जिद्द-सी होती है - ऐसे में शरीफ़ आदमी की स्थिति बड़ी खराब हो जाती है। यानि स्वीट प्वायजन दे दिया जा रहा हो ऐसी स्थिति में जीने लगता है।

89

थके तन के लिए
किसी बाँहों का,
दीवारों का,
छड़ी का सहारा हो जाता है,
अपना नहीं तो पराया ही सही
हाथ थाम लेता है।
पर थके मन को जब सहारा चाहिए
तो बड़े-बड़े प्रेरणादायी शब्द
शब्द-शब्द विचार
सहलाते-सुलाते हैं,
शब्दों की शक्ति देखना
एक शब्द भी कितना दमदार होता है
इसमें एक सफल प्रयोग से
एक इन्सान का तकदीर ही नहीं
विश्व इतिहास - भूगोल
लॉजिक और मनोविज्ञान
रात और दिन ही नहीं
इन्सान बदल जाते हैं-

कमजोर को बाँहों का सहारा, भूखे को रोटी का सहारा, धूप में छतरी का सहारा, प्यासे को पानी का सहारा, और न जाने - ..... मन से थके को, शब्दों का सम्बल सबसे बड़ा सहायक साबित होता है।

एक छोटा-सा शब्द मिसाइल से कम नहीं - शब्दों में बड़ी शक्ति है सब कुछ पल में बदल जाता है।

90

आदमी को कुछ जोड़े न जोड़े
एक से दूसरे के व्यवहार से जोड़ता है
कोई तोड़े न तोड़े .....
विचार तोड़ता है

91

यूँ तस्वीर बन के टँगे रहे
आजीवन का हो साथ
ये है दुनियावी बात
दिल में उतर के साथ रहना,
दो कदम ही सही
साथ चलना
यह भी सात जन्मों के साथ सा ही है

92

दुःख भी न हो, किसी बात का
खुश होने की सोचना भी नहीं,
दुःख उधार मिल भी जाता है
सुख अपनी कीमत बताता नहीं संसार से

93

मना किया था, माने नहीं
खरीदने निकल गये बाजार में,

अरे ! वो तुम्हें छुपा मिलेगा
अपने कमरे के दरो दीवार पे, दिन आपका नहीं है न होगा
जब तक आप उसके न होंगे
आप ऐसा करके देखिए-
रात खुद नींद लेके आगोश में आएगी

ये चार सहज विचार, ये सहज शब्द ..... आपके सामने बाँहें फैलाए खड़ी है ..... बाँहों में भरिए - माथे पे झुकिये महसूस कीजिए। ये चारों हो तो, रात जाऐगी कहाँ ?

94

आखिर ऐसा क्यों होता है ?
जिन मसलों सें कोई लेना-देना नहीं
वहीं घुँघरू सा बजते रहते हैं
पाँवों में-
जिसका अर्थ ही है नाचना - नचाना
कहीं भी जाइये
बज-बजकर अपने होने का
एहसास दिलाते हैं
एक भी करवट चैन से ले सके
ऐसा होने नहीं देते
इसलिए मसले पीछा करते रहे
इससे पहले उसे
जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिए

कभी-कभी जहाँ न आपको कुछ लेना है, न देना है उस मसले से बार - बार सामना करना पड़ जाता है ..... यानि आप उसमें घसीटे जा रहे हैं तो ऐसी समस्या से बच कर रहें ..... या जड़ दिख जाए तो उखाड़ फेंके।

95

जीवन से मृत्यु का देवता भी डरता है
डर-डर कर उपस्थित लोगों में से
अपने इच्छित पात्र के, साँसों को छूने से पहले
सबकी आँखों को धूमिल - बुद्धि को भ्रमित कर,
क्षणांश में अपने पात्र के साँसों को ले उड़ता है।
तब टूटती हैं सबकी तन्द्राएँ,
नीचे मिट्टी पे मिट्टी के लिए इन्सान रोता है
ऊपर अपने तरतीब पर भगवान हँसता है।
कितना ही सबल - कितना ही सहज हो हम सब
वह आकाश पे बैठा
धरती वालों को, हमेशा मात कर देता है।
इसका अधिकार भी मात्र उसे है
उसी ने दिया था - वही ले जाएगा,
उसके फैसले से कोई बच के कहाँ जाएगा ?
कोई आज ही भर है, कोई कल भर –
किसी को अपने पास बुलाने का,
टिकट परसों काटेगा.....
अपने सृजन का विध्वंस खुद ही कर जाएगा
तभी तो निर्माता या भगवान कहलायेगा

सृजनकर्ता संहारक भी होता है यह सत्य है- जीवन सत्य है तो मृत्यु झूठ नहीं है। जब अपने-पराये सकते में आ जाते हैं, और वह समय होता है जब उन्हें भान भी नहीं होता, और उनके आँखों के सामने से प्रिय पात्र चुपचाप निकल जाता है यानि मृत्यु का देवता, भी जीवन से डरता है- भ्रमित किये बिना इच्छित पात्र को स्पर्श करते डरता है- पर अपने देने, जिसे जीवन कहते हैं और अपने लेने को जिसे मृत्यु कहते हैं। रोचक है न जीवन को आते देखते हैं न जीवन को जाते, बस खोये-खोये हम जीवन जी लेते हैं कमाल है।

96

जो सोच कर चलते हैं
वो मंजिल किसी - किसी को मिलती है
वरना अक्सर राह में
पाँव के छालों को सहलाते
बहलाते रह जाते हैं

अक्सर कुछ सोच कर चलना - उस
मंजिल पर हमें नहीं ले जाता -
राहें भटका कर थका कर - पाँव के
छालों को सहलाने पर विवश
कर देती है और दुबारा फिर हम कदम
उठा नहीं पाते।

जो सोचा मिल जाए - जो चाहा कर जाए - जीवन की राहों में, ऐसा कभी-कभी नही होता है और तब भटकना तय है। छालों को सहलाते हुए दुबारा हिम्मत कर पाना भी, कभी-कभी नहीं होता है।

सबकी सूनें
जो - जो कहे, करे
पर अपनी कोई
बात - विचार
सिर्फ कागज से कहे।
मन की खुद्दारी के मोल पर
प्राप्त सुख
अपने स्वभाव के प्रति
प्रतिघात ही है...

अक्सर जब अपने मन की हम किसी से कहते हैं तो शायद ही सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है, फिर हम किसी से अपनी बात कहते क्यों हैं ? प्रश्न है पर उत्तर नही हैं - इसलिए तो किसी ने कहा है कोई सवाल हो, हरगिज जवाब मत देना किसी को, अपने गमों का हिसाब मत देना और फिर अगर–

हिसाब-किताब करना ही है, तो सबसे अच्छी जगह है कागज। और अगर इससे परे, हम कभी करते हैं खुद्दारी पर बन आती है और यह कहीं-न-कहीं से अपने प्रति प्रतिघात ही है।

प्यार दो या प्यार लो
भिक्षा सा आदान-प्रदान है
इससे परे कुछ सोचते
समझते हो ?-
तो खुद धोखा खाते हो,
दूसरों को धोखा देते हो–
इसे सच साबित करने के लिए
कसमें - वादे
न जाने क्या - क्या।
दलीलों की फाइलें बना
खुद को उलझाते हो–
आज की बात छोड़ो
सदियों का सच है
लवकुश का बचपन लावारिस है
भरत जंगल में जन्म लेता है

राम हो या सीता - दुष्यंत या शकुन्तला - प्यार में धोखा ही मिला। न जाने कितने उदास क्षणों से, यह संसार भरा पड़ा है कहीं कुछ नहीं है मतलब का फेरा है सब। खुली आँखों सें सपने देखने का बखेड़ा है सब - प्यार कोई देता है न लेता है - प्यार का तुला धोबी के हाथ में होता है, तो कभी मछुआरा और अँगूठी का लफड़ा होता है।

97

हवाएँ ही उड़ाती हैं
मुलायम - नर्म - जुल्फों को
हवाएँ ही उड़ाती हैं ख्वाबों को
जानी - अनजानी दिशाओं में

98

हवा न हो जीना मुश्किल
हवा जो है तो भी परेशानी
इन हवाओं के आगे - पीछे
खो रही जिन्दगानी

99

पता है ..... जिसकी साख है
कल की तारीख ..... राख है
फिर भी सपने सँवारने की जिद्द
बड़ी निडर सी बेखौफ है

100

हवा के एक रूप को आँधी भी कहते हैं
हम कितने जिद्दी हैं उसे भी सहते हैं
जितनी जरूरत है जीने के लिए
हम तो उससे अधिक स्टोर करते हैं

हवाओं में जानें कितनी बातें एक साथ घुली रहती हैं ..... खुशबू - अल्हड़ता निडरता - आँधी ..... और इन सबके होते हुए भी ..... वह सबकी जिन्दगी है - उसके बिना सब राख है- खाक है।

101

अपने खेतों का गुड़
और दरवाजे पे
कुएँ का ठण्डा - ठण्डा जल
गरमी की दोपहरी
अनजाना सा दरों दरवाजों पे
पथिक की-

मीठा - गुड़ - पानी
प्यास बुझाती होगी
तो दुआओं का दरिया
सदा - सदा उस दरवाजे
पालथी मार के बैठ जाता होगा

भूख के लिए रोटी-नमक, प्यास के लिए - चूल्लू भर पानी, सारी जिन्दगी की कमाई से नहीं तौल सकते - किसी प्यास के लिए पानी, किसी भूख के लिए रोटी .... आपके पास आशीर्वाद का खजाना खोल देता है।

102

दहलीज के भीतर
पनपते रिश्ते
बन्द कमरों की तरह
घुटन भरे होते हैं
रिश्तों को देखने के लिए
घोसले लौटते पंछियों की उड़ान देखनी चाहिए
एक के साथ दूसरे की तालमेल भरे
उड़ान का, अरमान देखना चाहिए
छोटे - छोटे ये परिन्दे
इन्सान से बड़े, काफी बड़े दिखने लगते हैं
इनके स्वछन्द जीवन का अनुराग देखना चाहिए

घरों को रिश्तों से जोड़ कर देखना छोड़ना होगा अब घरों में यह नहीं है ..... चाहिए तो उड़ान भरते परिन्दों में इसके दर्शन हो जाए – पर इसके लिए आपका मन अकल्पनाशील होना चाहिए।

103

जिसके पास जो है
घृणा - व्यंग्य - अपशब्द

वही तो वह देगा
परेशानी की बात नहीं - जान लिजिए
वह डिक्शनरी से भी
अच्छे शब्दों का
उधार नही लेगा
जो-जो करे, करने देना उसके पास वही है वही देगा लेगा।

104

कुछ लोग बिना रुके चल लेते हैं
कुछ राह में थोड़ा सो लेते हैं
कछुआ - खरगोश की कहानी सा
जीवन जी लेते हैं

कुछ लोग आलस को इल्जाम लगा देते हैं। अपनी असफलताओं के कारण का सही फैसला सबको देखने नहीं आता है। गलती अपने सिर की हो पर वह इल्जाम की पोटली किसी और के सिर पर दे देते हैं .....

105

शून्य सें अंक
बार - बार टकराता है
बाएँ जाएँ, कि दाएँ शून्य
उसका भी जी घबड़ाता है
शून्य भाव में खोया वह
जान ही नहीं पाता
बाएँ शून्य जीरो सही, दाएँ हीरो - हीरो

शून्य के भाग्य पर रस्क होता है ..... पर बेचारा कभी - कभी खुद असमंजस में आ जाता है ..... बाएँ जाएँ तो ? दाएँ जाएँ तो ? जीरो और हीरो ..... सबके नसीब में नहीं होता।

106

ईशा बनो - पैगम्बर बनो
नानक बनो या रहीम
नसीब में सबके एक कफन
ढाई गज जमीन,
इसलिए कुछ पाओ - खोओ
कोई फर्क नहीं पड़ता
साँसों की सौगात जो भी मिले
खुशी से जिओ उसी के साथ

आदमी का वजूद बहुत कम दिनों का है उसकी में इन्सान ..... ऊँचा उठता है बड़े-बड़े काम करता है ..... भौगोलिक सीमा से परे उसके नाम का परचम दसों दिशाओं से आकाश तक का सफर कर आता है-

उसका नाम उसका ज्ञान-विज्ञान अच्छे काम धरती पर उसके बाद भी अमर से दिखते हैं - मौके बेमौके धरती अपने पुत्रों-पुत्रियों को याद रखती है - रखवाती है पर उसे ढाई गज जमीन में सुलाने का काम वह नहीं भूलती - इसलिए साँसों की सौगात जब तक है व्यक्ति खुशी से जिएँ बस ..... जिन्दगी में बहुत अर्थ - ढूँढना बड़ा व्यर्थ साबित होता है।

107

न सूरत, न बदसूरत
न चाह न निर्वाह
जिन्दगी मिल गई है
इसलिए जीना एक जरूरत,
इसके सिवा शायद ही कुछ
न कोई बुरा न कोई भला
जी रहा है, सब जिसको जैसा मौका मिला,
इतनी ही थी बात समझने में बड़ी देर लगी
कभी-कभी जिन्दगी, इसलिए इतनी कड़वी नीम सी लगी

शायद ही कोई हो, जिसे जीवन से शिकायत नहीं हो - कुछ न कुछ कमी - खराबी उसमें दिख जाती है, और व्यक्ति दु:ख होता। जीवन व्यतीत करता है, कभी सूरत के लिए कमी, सीरत के लिए कभी, जरूरत के लिए, जद्दोजहद करता व्यक्तित्व संतुष्ट होता है नहीं। शिकायत ही शिकायत, पर ऐसी ही स्थिति में कभी-कभी बिजली सी कौंधती है, और मन का कोहरा बरस ..... मन के शीशा का मैल हटाता है, तो न कोई बुरा न कोई भला न ..... सुन्दर न असुन्दर ..... बस परिस्थितियाँ जैसे मनुष्य को ढाल रही है मनुष्य वैसे जी रहा है। इतनी सी है वास्तविकता है, इसके लिए इतनी जद्दोजहद थी - कड़वा नीम की तासीर थी। यह समझ में आ गई तो जिन्दगी सहज होने लगती है।

108

आँखों पर इल्जाम है
वह दूसरों को देखती है
दूसरे का दलील, वो भी उसको देखते हैं
बात बड़ी अजीब है पर सही है
पर मानता कोई नहीं है,
यही बात तर्जनी के साथ है
किसी पर खट से उठ जाती है–
मध्यमा - कनिष्ठा - अनामिका
एक के तीन कर जाती है
आदमी था है, रहेगा ऐसा ही
दूसरों को देखती आँखें - उठी उँगली
सस्ती लगती है
अपना सम्पूर्ण अस्तित्व महँगा–
अपना रंग पता नहीं होता है
सामने वाले की आँखों में वो दिखता है
पर हर आदमी, अपना असली रंग
देखने से डरता है
दूसरों के एक अवगुण पर
उँगली उठाने से पूर्व

तीन अवगुण दूर करिए
हम सब के सब
मनुष्य हैं
लगभग - थोड़ा बहुत आगे-पीछे
रंग-रूप - गुण थोड़ा अलग
पर सबके सब एक जैसे

दूसरों को इल्जाम देने में माहिर हमारी तर्जनी, पर मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा की हिम्मत का जवाब नहीं - अपने पर भारी पड़ जाती है वाह !

109

मन भाग रहा है
सोया था वर्षों से
अपनी मर्जी का मालिक बन
अस्सी नब्बे साथ दिया
कोई काम नहीं है
अब मन अपने आप से
भाग खड़ा होता है
यह मन मुफ्त का साथी रहा था
अब तो आजाद करो
जितना साथ दिया
कम या ज्यादा
बस - बस - इस तन से उसका
धन्यवाद करो

जन्म से होश सँभालते-सँभालते ..... मन हमारा संगी बनने लगता है ..... हर समय ..... साथ - साथ बस साँसों के बाद इसी का नम्बर आता है-

आजीवन साथ निभाते - निभाते मन हमसे भागने भी लगता है ..... और तब हम अकेलापन महसूस करते हैं - खोजते हैं–तरसते हैं ..... वह क्यों छोड़ गया ?

यहाँ तथ्य यह होना चाहिए जो हमें खुद में विकसित करना चाहिए, मन ही तो था - बहुत साथ निभाया, मेरे पास कैदी बना रहा है आजीवन सिर्फ मेरे लिए .... उसे भी आजादी का आनन्द मिलना चाहिए ..... मन के पीछे मत भागें .....मन छोटी - छोटी बातों के पीछे कभी नहीं भागता - भटकता है- हम धरती से धैर्य सीख जाएँ, तो भौतिकता के भागम-भाग के बीच भी कुछ पल सुख के पा जाएँ।

110

प्रश्नों का अम्बार था
चारों ओर 'सिक्का' उछल रहा था
खनकती आवाज - झन-झनाझन,
'नोट', कबूतर के पंख से
होड़ लगा चिल्ला रहा था
'सारे समस्याओं का हूँ
मैं ही सारे जहाँ का बल'
सारे प्रश्न
मौन - नत,
पैसों के सामने बोले भला कौन ?
सदियों से रही चुप्पी - जमाना बदला।
बदला इन्सान, सर चढ़के बोला
ज्ञान - विज्ञान।
'जन्म' प्रश्नों के अम्बार से प्रकट हुआ,
पैसों के सामने पहली बार मुँह खोला
'तुम सारे प्रश्नों के हल रहे हो, रहोगे
तुमसे ही दुनिया चल रही है, सब सही है
पर मैं 'जन्म' हूँ- तूम कभी मेरा हल नहीं हो सकते
पैसा हँसा बहुत, जा ?
था इशारा टेस्ट टयूब बेबी' की ओर।
बेचारा प्रश्न थोड़ा लज्जित सा - मुड़ा 'जन्म'
और अपने ढेर में जा छुपा

सारी बातों को दूर, खड़ा चुपचाप देख रहा था
'मृत्यु' चुपचाप ..... ही रहता था
पर आज कुछ सोचता - समझता ललकारता
आ खड़ा हुआ पैसे के पास,
आमने - सामने - सीना ताने,
पैसा व्यंग्यात्मक लहजे में बोला 'हू ..... क्या काम ? बताओ
मृत्यु बोला 'बताना है एक बात सून'
'मेरा उत्तर तेरे पास नहीं' बोलकर,
हौले-हौले - इत्मिनान से, मृत्यु चलता बना।
न बायाँ देखा न दायाँ
मृत्यु था - रुकता क्यों
चलना काम था, चलता बना
'पैसा' पहली बार किया था
सत्य का सामना - सच्ची बात थी
लज्जित - पराजित होना पड़ा,
सिक्के की खनखनाहट नि:शब्द
नोट का फड़फड़ाना बन्द,
बायाँ - देखा, देखा दायाँ
मौन तिजोरी में छुप जाना पड़ा।
मृत्यु से मुँह लगाना खेल नहीं–
पैसों की क्या हस्ती है ?
इसके सामने दुआ - आशीर्वाद भी
झुक - जाती हैं।
जिसके दिन, जब पूरे होंगे
उस दिन आके ले जाता है–
हर कोई, भी कम नहीं होता
जिसके इच्छा मृत्यु का
वह प्रतीक्षा करता हैं-
सारी सम्पदा एक तरफ
मृत्यु का मन एक तरफ

भले पैसों से सारे प्रश्नों को हल,
कर लिया जाए - पर मृत्यु को
पैसा खरीद नहीं सकता

नहीं सकता - न उससे वह कोई समझौता कर सकता है । पैसों से हार न माननेवाला यही है सिक्कों के सामने न झुकनेवाला यही है ..... यदि ऐसा नही होता, तो सारे पैसे वालों से ही यह धरती भरी होती ..... कोई अमीर मरता नहीं - तो गरीब से यह धरती खाली हो गई होती । जीवन और मृत्यु का हर उत्तर का सिक्का उत्तरदायी नहीं तो ..... न जीवन उससे खरीद सकते हैं न ..... मृत्यु उससे बेच सकते हैं ।

111

नन्हा सा पौधा
कोमल - निर्मल पवित्र मिट्टी में जड़ें
जाने कितने दिनों आपस में टकराती हैं
फिर अपनी जड़ों के फैलने को
जगह बनाती हैं,
इसकी शिरायें दर्द सहती हैं, मिट्टी के दबाव का
उसकी मजबूत जकड़न जरूरी है, मजबूरी है
इस प्रक्रिया में साँस लेना है, खुली हवाओं में
नहाना जरूरी है, बरसात के पानी से,
बचना भी पड़ता है तेज, धूप की मनमानी से ।
अपने अस्तित्व को बचा कर ही,
सौन्दर्य खिलता है फूल - फल बन डाली पे,
आते - जाते को नयन सुख
प्रसाद बन
नत भगवान के सामने चढ़ता है–
गर्व देता है वनमाली को,
मिट्टी में अपने जड़ों की पीड़ा
भूल जाता है
जब पक्षी करें कलरव, हरी-भरी डाली पे

जल जीवन है, हवा जीवन है..... पर मिट्टी सबसे ऊपर है - इसमें बीज दबता है नवजीवन के लिए घोर संघर्ष करता है फल - फूल - बनने के ईश्वर के चरणों में अर्पित होने के लिए जाने कितना दर्द सहता है। मिट्टी सें निकलने के लिए संघर्ष करता है - पर, जब ..... अपने सम्पूर्ण रूप स्वरूप पर संसार को फिदा देखता है, तो सारे दु:ख दर्द भूल ..... भाग्य पर मुस्कराता है।

112

मौन की आयु
कम होती है
बोल की ज्यादा
मौन यूँ भी मौन है
बोल मुखर
मौन कभी प्रश्न नहीं करता
'बता तू कौन ?'
मुखर खुद अपने बारे में बताता है
मौन दूसरों को मौका देता है
'बता मैं कौन ?'
मौन - और बोल
दो पलड़ो के बीच
तुला को अक्सर
निष्पक्ष रहना चाहिए
कभी भी अपने बारे में
खूद नही बोलना चाहिए

बोल ..... बोल तक सीमित रहे, तो अच्छी बात ....., वरना इसके मुखर होते ही लगता है इससे बेहतर तो मौन था मुखर अपने बारे में चिल्लाता है अपना परिचय देता है।

इसके विपरीत मौन दूसरों से, अपने बारे में जानना चाहता है बता मैं कौन ? है अपने-आप में यही बात कोई आत्मप्रशंसा करे, और कोई किसी और की प्रशंसा करे।

113

1

किसी - किसी का
नसीब अजीब होता है
उसे समझनेवाला
कोई उसके करीब नहीं होता है
कुछ भी करो - कोई नहीं समझनेवाला
हवाओं को दोष दो, वही है कुछ मिलानेवाला

2

न देखने की जरूरत
न सुनने की
चलो मूक बधिर हो जाएँ
जब किसी चीज की जरूरत ही नहीं
इस धरती से दूर ही, क्यों न हो जाए

3

कुछ का हो या नहीं
पर बातों का बड़ा होता है अपमान
जिससे भी बात करो - सब बर्बाद
कोई नही देता है ध्यान,
और जो देता है ध्यान
वो कहलाता है मूर्ख
ऐसे में मन की मन में
रह जाते अरमान

कोई इनकार नहीं कर सकता ..... कि उसे सब ठीक ही समझते हैं। लगता वातावरण में कुछ ऐसी तासीर घुल-मिल गई है जो ..... समझे या समझने दे - ऐसे में कभी - कभी मन इस धरती से ही उठ जाने का करता है - यह छोटी-सी जिन्दगी, इतने उलझनों का बोझ ..... ओफ !

114

अपने तराजू सें सबको तौलते हैं लोग,
किसी और के तराजू की चर्चा से
डगमगाते हैं चिल्लाते हैं लोग,
पता नहीं क्यों अपने को समझदार - होशियार
दूसरों को बकवास - बेकार समझते हैं लोग,
कहा गया 'हर जर्रा जहाँ है आफताब होता है
अपने से दूसरों को क्यों कम आँकते हैं लोग,
मन चेतावनी देता है, पर जूवां खुद को रोक नहीं पाती
ऐसे में बोलने लायक नहीं हो, उसे भी बोल जाते हैं लोग,
कितने सपने सजाते - अपना कारनाम - हँसना - बोलना है
समय बर्वाद करने, सपने और साथ तोड़ने आ जाते अपने लोग,
क्या - क्या सोचते हैं, बहुत कुछ सोचते रह जाएँगे
आपके मन की रह जाए मन में - मन में ताला लगा चाभी फेंकते हैं लोग
जब अपना खून बेगाना हो जाए - रिश्तों का नाम गुम जाए
ऐसे में बेगुनाह हों तो भी, आँखें चुरा चल देते हैं लोग
जितने दूर - दूर रहो, मिलन कहीं से आवाज देता है
जब मिलो, कुछ देर बाद ही, गुमसुम बेआवाज हो जाते हैं लोग,
नफरत - प्यार को सात पर्दों में छुपा के रखो
जिसके मतलब का जो होता है, देख ही लेते हैं लोग
लाख सॉरी करो - बेख्याली भूल के लिए
लाल कलम से अण्डरलाइन लगा ही देते हैं लोग ।

दसों दिशाएँ सूरज - चाँद - अंधेरा - उजाला धरती - गगन - पेड़-पौधों - पहाड़ हवा - किसी को आदमी के स्वभाव जिन्दगी - सफलता असफलता से कुछ लेना-देना नहीं है ..... वे कभी किसी पर ध्यान भी नहीं देते-

पर इसी धरती पर, लोग के पीछे हाथ धोकर लोग पड़ते हैं अच्छा - बुरा राय बनाते हैं- एक-दूसरे को बेचैन करते हैं - लोग व्यस्तता का दावा करते हैं समझदारी का अहं भरते हैं पर जितना फालतू वक्त आदमी के पास है संसार में अन्य किसी के पास नहीं है ।

115

नानी है
दादी है
उनकी भी मधुर कहानी है
मानने से करते रहे इनकार
उनकी बातें बोझिल पुरानी बेमतलब, सब बेकार,
बात समझ में तब आती है
जब बातें उनकी याद आती हैं
तो क्षमा माँगने का मन होता है
क्योंकि अब जीना है वही किरदार

हर किरदार महत्त्वपूर्ण होता है पर दादी - नानी के किरदार की विडम्बना है उन्हें सदा से सिर्फ दादी नानी माना जाता है। काश ! हम याद रख पाए उनकी भी जिन्दगी भी – जवानी भी, जो अभी थी जिन्दगी से सुहानी थी।

116

जिधर उठाऊँ नजर
दिखते हैं घात-ही-घात
शुक्रिया अंधेरी रात का
जिसमें दिखती नहीं कोई बात
कुछ घंटों के लिए
सच्चाई छुपा लेती है
भ्रम ही सही थोड़ी देर का
पर निद्रा की गोद में सुला
सब कुछ भुला देती है
हम सोये थे गहरी नींद
सपनों को गवाह बना
उजालों के हवाले कर देती है

नींद और अंधेरे का बड़ा गहरा रिश्ता है। नींद सच्चाई से परे स्वप्न लोक की सैर करा कभी-कभी सुखद एहसास करा जाती है..... हम अंधेरे में एक दहशत

महसूस करते हैं कारण की वो उजाले की सारी सच्चाई को हमसे दूर कर.....
राहत देती है नींद की आगोश में यही तो ले जाता है।

117

न सीधी राह चलते हैं न दूसरों को चलने देते हैं
न जाने औरों के चाल को कदम ताल बना लेते हैं

जब प्रसाशनिक मुद्दों पे सवाल उठता है तो नेताओं के प्रति मन खीजता है और अपने प्रति भी गुस्सा आता है हम गलत चयन करते हैं और आलोचना भी करते हैं - फिर समालोचना का कदम ताल शुरू।

118

न घाटे पे सवाल
न नफे पे चर्चा
इन दोनों के बिन जीये
वाह ! कितना कमाल हो

अनेक विसंगतियों के बीच जीना एक कमाल ही है, आश्चर्य भी।

119

रोटी-चावल सें ही भरता है पेट
फिर जाने क्यों खिचड़ी पकाते हैं लोग
अपना तो पेट नहीं ही भरता
दूसरों का दिमाग बेकसूर खाते हैं लोग

रोटी-चावल सें जितनी भूख मिटती है उतनी किसी चीज से नहीं..... यानि सीधी बात रहनी चाहिए तो सब सहज लगता है, पर लोगों की, खास कर राजनैतिक मंच खिचड़ी से ही अपने पेट भरता है।

120

ये कागज
ये कलम,
ये किताबें
ये न होती तो
मैं कहाँ होती ?
प्लास्टिक की चाभी वाली
डॉल होती-
बोलने के लिए
हँसने के लिए
नाचने के लिए
किसी हाथों की, चाभी के अधीन होती

अपने वजूद की निरर्थक कभी-कभी सबको दिखती है..... तो ऐसे कुछ सार्थक सहारे भी दिख जाते हैं तो मन आभार से भर जाता है । कागज का कैनवास होता है. ..... किताबें होती हैं....., वरना दूसरों की ..... दुनिया का एक हिस्सा वह भी अनचाहा बनना तय होता है ।

121

बालों को सुलझा के
चोटी बांध के रखो
किसी की नजर उलझ जाएगी
दादी आप सही कहती थी
सुलझाने की लाख कोशिश में
कंघी की उम्र निकल जाएगी

हर दौर में
सोलहवाँ सावन बरसता है । प्रेम की आँधी आती है ..... या कभी-कभी बुला भी लिया जाता है प्रेम के लिए सभी का मन तरसता है ।

उस भवुकता से, विवेक टकराता है तो
व्यक्ति दार्शनिकता पर उतर आता है तब ख़्याल आता है

है सोलहवें साल का उलझा - बिखरा प्रेम जिसने जाने अनजाने क्या क्या उलझाया था - कि जिन्दगी ही निकल गई पर टीस की भरपाई नहीं हो पाई।

122

वातावरण
क्षणिक भी हो सकता है
इसलिए-
इसे दोष कभी मत देना
हो सके तो
अपने हाथों .....
उन कारणों को मिटा देना

अक्सर किसी बात के लिए वातावरण को दोषी ठहरा दिया जाता है, ध्यान से देखने पर वो क्षणिक भी हो सकता है, इसलिए इसे दोष नही देना चाहिए ..... जिन कारणों पर शक हो, उसे खुद हैंडिल करना चाहिए- दोष देना बेकार है।

123

सुख की गठरी हो
या दु:खों की पिटारी
जैसा भी हो - है अपनी धरोहर है
सिर्फ-सिर्फ हमारी

सुख समूह ढूँढ़ता है दु:ख वीराना। सुख को सब देख लेते हैं दु:ख अपने सिवा कोई और समझ नहीं पाता। सुख की गठरी ढीली हो जाए, ताक-झाँक हो जाए, कोई बात नहीं। पर दु:ख की पिटारी, अपनी धरोहर सी सँभाल कर, छुपाकर रखी जाए इसी में भलाई है।

124

प्रशंसा के एक शब्द
अमृत बने रहते हैं

अवहेलना के एक शब्द
जहर बन हँसते हैं
एक शब्द जिन्दा
एक शब्द मुर्दा भी कर सकते हैं
शब्दों के समन्दर से
शब्द सीप चुनना चाहिए
मोती सा चमक जाए
सुननेवाले का मन ऐसे बोलना चाहिए
सोना चाँदी दे दो
इससे कुछ नहीं होता है
एक बेहतर शब्द के सामने
उनका मूल्य भाग खड़ा होता है
शब्दों का मूल्य साँसों के बराबर होता है

अच्छे रिश्तों में बहुत सारी चीजों के साथ शब्दों का भी बहुत बड़ा हाथ होता है। शब्दों की कमी इस संसार में नहीं है- पर उन्हें चुन-चुन कर मोती सा - माला बनाना बड़ी बात है, मूल्यवान है। किसी को, कुछ कि चाहत नहीं होती, किसी से, पर अच्छे शब्दों के लिए ..... सबकी झोली खाली ही रहती है- हमें भरने की कोशिश करनी है।

125

यूँ तो गुण-अवगुण
थोड़ा बहुत
सबके जानते हैं सब
पर..... मौका परस्ती में माहिर
होते कुछ लोग
गुण चाहिए गुण
अवगुण चाहिए अवगुण
हाथ झट से
मिला लेते हैं सब-

किसी बीमारी से गुण
किसी से अवगुण
औषधि बना लेते हैं सब
गुण-अवगुण हथियार
जब जो चाहिए व्यवहार
यूँ गुणी को मूर्ख
अवगुणी को होशियार
कहते हैं सब
हम सब से तो
हमारे भगवान भी जाते हैं हार
कभी बड़ी मन्नत
कभी छोटी मन्नत
पूरी करते - करते
मुस्कराते हैं भगवान
उनकी रचना उन्हीं के सामने महान
छोटी मन्नत के लिए सिर्फ फूल चढ़ाते
बड़ी मन्नत के लिए नंगे पाँव पहाड़ों पे चढ़ जाते
राम ने सीता मां को ठगा था
क्या इसलिए
संतानें बदला चुका रही हैं।

मनुष्य सा मतलबी - मौका परस्त कोई अन्य ..... चीज नजर नहीं आती - यह भगवान का मोल लगा लेता है तभी कुछ वादा करता है- उसी को उसी की देनों में कटौती करता है।

126

पुत्र एक प्यास है
बुझ जाए तो भी बुझती कहाँ ?
इस जन्म के मुखाग्नि से, उस जन्म के
तर्पण तक बागडोर धर्ता है
कर्म-कांड कर्ता है

मूल्य बिना कहाँ कुछ मिलता है
मात्र इतनी सी बात को पहाड़ बना
हिन्दुस्तान का पिता जीता है
अपने जिन्दगी की सारी कमाई
इसलिए उतराधिकार शब्द के आस-पास
सौंपकर चल देता है ?
सवाल है बवाल है
क्या हिन्दुस्तानी पिता ही प्यासे हैं
प्यासे जीत है मरने पर प्यासे हैं ?

हम सब क्या इसलिए अपने जिन्दगी की गाढ़ी कमाई पुत्र के हवाले करते आये हैं कि हमारी प्यास इस जिन्दगी मे नहीं बुझती - जिन्दगी के पार भी प्यासे हैं जब कि न हाड है न मज्जा मांस - राख हो चुके हैं ..... नामो निशान नहीं हमारा ... . फिर यह प्यास कहाँ से जगी रहती है ? अनुत्तरित प्रश्न ? कभी ब्रहम मुहर्त्त में सोचना चाहिए बैठकर कि - विश्व के अन्य पिताओं की प्यास कहाँ चली गई है जो मरने के बाद उनके सामने पाप - पुण्य - प्यास का झमेला नहीं है ?

127

जिन्दगी भर पानी पिलाए, वो होता है बेटा
मरने बाद भी तर्पण के बहाने जल दे वही लोटा

इसमें भी एक साल में प्यास खत्म नहीं होती हर - साल गंगा तट - तर्पण निरांजना नदी के किनारे एक लोटा जल यानि बेटा चाहिए - हमारी अबुझ प्यास जिन्दगी ? सब को बेटे की कामना है, यह भी नहीं सोच पाते इससे ज्यादा जरूरत बेटियों की है वरना बेटे कहाँ से आएँगे ?
क्या बेटे जमीन से उपजेंगे ?
न हवा मे टपकेंगे ?
न सूरज हमारी गोद में आके पटकेंगे ?
कुन्ती युग नहीं है, अब न हमारी सोच इतनी अवैज्ञानिक ।
फिर भी बेटा - समझ से परे यह मुद्दा है
जिन्दगी में पुलिंग संतानें नाको चने चबवाती है

यानि कदम - कदम पर पानी पिलाती है - न जाने कितने प्यासे हैं युगों - युगों से, हमारी प्यास इस जन्म में बुझती ही नहीं - अगला जन्म चाहिए।

128

जो खेल खेलना नहीं था
वही खेल खेल लेते हैं लोग
इसलिए तो बाउण्डरी से बाहर
मुँह छिपाते - फिरते हैं लोग

किसी कारण से बेसुरा राग गाया जाता है, फिर कान बन्द करना पड़ता है - क्या किया जाए, हम सबकी मजबूरी - आदत से लाचार।

129

हरी भरी पत्तियों
लहरा के झूम लो
आने को है किसी दिन
सत्य का पैगाम
जल - थल - नभ
पवन - अगन है गवाह
रहेंगे सदा
झरेंगी पत्तियाँ
सूखेंगी टहनियाँ
कण-कण का यही परिणाम
क्या इस परिणति के लिए
आँधी-पानी - से होता रहता है
संग्राम

पत्तियाँ जिद्दी तो है, इसमें दो मत नहीं। जल - थल - आँधी पानी सबमें टकराती हैं, अपने वजूद के लिए - पता है हार जाएँगी ..... पर वे जीवन संग्राम में, मुकाबला के लिए डटी रहेंगी - उनमें अपने टूटने का डर नहीं - झूम-झूम सबको ललकारती रहती है जब तक है अपनी डाली पे मस्ता।

130

सम्मान माँगा नहीं, जाना चाहिए
बस सत्य है
बच्चों ये बड़े - बूढ़े तक को, सहज सम्मान चाहिए
इसके लिए बस
सम्मान दिजिए
सम्मान मिलेगा
पर.....
इसमें बेचारगी न हो
लाचारगी भी नहीं,
कोई करे न करे
इस चिन्ता से परे
अपना सम्मान आप कीजिए
अपनें ही सम्मान से
अपनी झोली भरिये।

आप से बेहतर सम्मान आपको कोई नहीं दे सकता।

131

तन के भीतर का मन ही सम्पूर्ण जीवन
मन स्वस्थ
तन स्वस्थ
व्यवस्था और विचार स्वस्थ
कभी न टूटने दीजिए
जीवन पहिये का रथ
तभी तो मानव जीवन सार्थक

अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व का साज - सँभाल व्यक्ति पर..... निर्भर है .....
अपने जीवन - रथ के सारथी ..... हम-हम केवल हम।

132

मैं तंग करती थी
मार लेती
यूँ सजा-सँवार के
मय डोली कहार के
बलि के बकरे सा सर झुकाये
रोज कटने को क्यों भेज दी ?
मैं देहरी दालान में उछल रही थी,
गुड़िया को दूल्हन बना
खेल रही थी–
माँ होकर गुड़िया वह भी अपनी
जन्म देने की सजा के तहत,
दुल्हन बना जेल भेज रही थी।
कुछ लोग पर कतरने जा रहे थे
बाबा। तुम बहेलिया से
क्यों हँस रहे थे

बाल विवाह प्रश्न है ? सर्पदंश है जो व्यक्ति अपने ही अंग को देता है खुश न होने की स्थिति हो, तब भी खुश होना पड़ता है। न जाने कितनी मीना गीता - राधा - रेखा, नयना गुम हो गई इस खोखली हँसी और रीति-रिवाज के नाम ..... हम सब सजग हुए हैं बेटियों के लिए - पर कहीं ..... कोई हिस्सा सँभल नहीं पाया है आज भी।

133

मकान जीने का मक्का है
मन बिना कब्रिस्तान

व्यक्ति के व्यवहार में दीवारें - व्यक्ति की हँसी से खिड़कियाँ - व्यक्ति के व्यक्तित्व से छत - और उसके मेहनत हिम्मत से मकान बनता है- इनका अभाव हो तो कब्रिस्तान ही है।

134

'रोटी - कपड़ा - मकान' के भुट्टो के नारे पे
व क्रम, पर आज ध्यान गया,
रोटी नहीं तो कुछ भी नहीं
कपड़ा नहीं तो नंगे - मकान नहीं तो धरती
जाना चाहते हैं कहाँ किस ओर
कभी - कभी न जाने मन ले जाता है कहाँ
करना कुछ और करवाता कुछ और
दिमाग पर क्यों अक्सर चल जाता दूसरों का जोर
इन तीनों के अलावे कुछ और पाने के लिए है सारा शोर
किसी के लिए बिना बात जद्दोजहद बढ़ जाती है
हम सीमित न होकर अमित होना चाहते हैं।

कभी-कभी बिना सोचे दूसरों के विचारधारा में अपनी धारा भी शामिल हो जाती है पर प्राथमिकता पर, बयान दिया जाए तो असलियत स्वतः सामने आती है–'रोटी-रोटी-रोटी' बस रोटी ही है सच।

135

मैं छोटी - मेरी हथेली छोटी
तुम्हीं खिलाती भी सुबह-शाम रोटी
क्या गुनाह हुआ अपनी ही जात को दी सजा
बनाऊँ दूसरे की रोटी - सूनती रहूँ हमेशा खरी-खोटी

बाल विवाह की वेदी से, माँ के लिए यह सवाल सटीक है।

136

माँ की जरूरत मुझे
मै खुद माँ बन गई
तुम्हारी गुड़िया मैं
सबके लिए रोबोट बन गई

मन थर्रा रहा है इन पंक्तियों में- कहीं बेटियाँ सजीव - सुन्दर - हँसती - गाती झूमती-नाचती नहीं दिखतीं, वो बस रोबोट रूप में दान-दहेज में चली जाती हैं।

137

गलती है आपकी
समय साथ चल नहीं पाये
राह में अच्छे-बुरे .....
सबकी जरूरत पड़ती है
समझ नहीं पाये
बालू के कण-सा
वक्त मुट्ठी से फिसल रहा है
रात-दिन सोचते हैं
कैसे बचाएँ ?
हिम्मत बड़ी दूर से करके इशारे
'दिल सें बुलाओ'
गले लगाने आऊँगी तेरे द्वारे
शायद हिम्मत के
हौसलों से
कुछ बिगड़ी सँवर जाए
सच है पछताने से कुछ नहीं होता है
उसी बल पर धरती से ही
इन्सान ..... आकाश को ललकार जाता है

किसी कारण से वक्त निकल जाता है ..... पर पछताने से अच्छा है, हिम्मत से फिर उठ खड़े होने में- क्योंकि इसी के बदौलत हम आकाश का भी सफर कर आते हैं। हर हालत में हमको अपने रूठे वक्त को मनाना है ..... उससे हाथ मिलाना है और जब दो मिलेंगे तो ..... फिर सब सहज होता जाएगा .....

138

सच है
व्यक्ति या तो खुद सबल हो
या हो पीठ पर आश्वासन भरा कोई हाथ,
यह तन - मन के खुश होने के लिए

औषधि का काम करता है
पर ऐसा नहीं भी होता है-
जीने के लिए खुद रोटी कमाना
कफन के लिए ..... कुछ जमा रखना
कुछ लोग जो ऐसे होते हैं
उनसे कुछ कहना है
साँसों के रहते, ऊपर-नीचे
अच्छा बुरा हो ही जाता है
जीवन है सब चलता है
पर ..... काबिले तारीफ है
जीवन से जीवन की बाजी हारने वालों को है
कहना .....
उस हार का गम नहीं करना
अंतिम विजय तुम्हारी है-

अपने-आप में सबल होना अच्छी बात है खुद्दारी का होना उससे बड़ी बात है । इसके जीवन जंग जीत-हार सें नापना-तौलना भी चलता है ..... जीवन जीतना है या हारना- सबको खत्म होना ही है ..... फिर गम करना फालतू है ।

139

जिन्दगी भुलावे में
भटकती है
इसलिए सब सहजता से
जी लेते हैं
अपमान की पराकाष्ठा के बाद भी
अपमान की स्थिति आती है
तो बात स्पष्ट हो जाती है
जिन्दगी ऐसे वातावरण से
दूर जाना चाहती है
तन - मन - धन - जीवन

सब रूठता है
तन की निस्सारता ..... अब ही तो
सम्पूर्ण समझ में आती है

सिद्धार्थ को जिस दिन, जीवन रहस्य समझ में आ गया- और निस्सारता का दर्शन साँसों में दिखा ..... उन्होनें पलायन किया गौतम ..... की कहानी हम सब के जीवन के दुहराता रहता है बस हम उनके समान हिम्मती नहीं है। सच्चाई से पलायन - सबके बस में नहीं, वरना गौतमों की भीड़ होती न।

140

हमेशा मान कर चाहिए
'हम मरे हुए हैं'
जीवन जाल में बिना खुद्दारी
मछली जैसे बिन पानी
जीने की बेचारगी
जीना, यह कहीं से नहीं है
पर कटे पक्षी सी
पिंजरे में घुट-घुट कर
तिली के टूटने पर भी
उड़ न पाने की लाचारी-

कभी - कहीं - कहीं जिन्दगी लाशों को भी जीनी पड़ती है..... साँसें लेती लाशों की जिन्दगी पानी बिन मछली - पर कटे पक्षी से भी बदतर होती हैं।

141

यह परीक्षा नही है
यह प्रश्न-पत्र भी नहीं है
यह तो प्रश्नोत्तर है
प्रश्नकर्ता का मन
जो भी हो उत्तर डाले

आप तो रहेंगे सोचते ही
इतना पढ़ा - इतनी की तैयारी
एक भी प्रश्न हल करें
प्रश्नकर्ता के प्रति
जूर्रत होगी हमारी

सबके जीवन में कभी - न कभी ऐसा पल आता है कि प्रश्न समझ से परे हो जाता है तो उत्तर नदारत - गजब तो जब यह दिखता है कि प्रश्नकर्ता ही उत्तर भी देकर ..... स्वीकारने की शर्त रखता है..... धर्मसंकट का यह क्षण ओह ।

142

किसी के चले जाने का
दु:ख होता है
लगता है बंचित हो गया
अनेकों सुख से
पर सुख की सच्चाई
समय-समय पर
जो दिखा है
तो लगा अच्छा हुआ
भाग्यवान था पहले निकल लिया
ऐसे सुख के कालिख से
दामन बचा लिया-

किसी लेखक ने, कम उम्र में मौत पर बड़ी अच्छी बात कही हैं..... कि जो जितना जिएगा..... उसी हिसाब सें इस संसार रूपी सराय का मुल्य चुकाना पड़ता है । भावनारूपी दु:ख-सुख भी ..... किसी-किसी बातों का मूल्य बनता है - आदमी खुश होता है पर अभी के दौर में खुशियों को पाने के लिए - या सुख की बनावटी सच्चाई जानने के बाद लगता है, अच्छा है जो कोई कम उम्र में ही निकल गया - ऐसे सुख से - बंचित रहने में ही भलाई है..... सब चीज में मिलावटी है, इसलिए सुख-दु:ख भी मिलावटी है ।

143

किसी की जीत होगी, मेरी हार
पता था, पर मन ने कर दिया लाचार
हुआ वही आशंका थी जिसकी
मैं ऐसी कैदी हूँ - भूल क्यों जाती हूँ
फाँसी की घड़ी में भी
जिस की पूरी नहीं की जाएगी
'अंतिम इच्छा'
इसलिए तय करती हूँ अपने लिए
निम्न नियम
'प्यास माँग पानी
भूख माँगे रोटी
साँस माँगे हवा
बस जो होना है हो जाए इनके बिन
अब नहीं मन के पवित्र
लब्जों को
ऐरों - गैरों को बता कर
इनको अपमानित करना

व्यक्ति जब नासमझ लोगों से घिरता है, ... जब सामने वाला की समझ में सामने वाले की बातें नही आती है, तो मन दु:खी हो जाता हैं, पर ध्यान देने पर अपनी ही गलती का एहसास होता है बिना सोचे-समझे उसकी योग्यता का आभास मिले बिना, यदि मुँह खोलने की जुर्रत करेंगे तो ..... यही फल होगा - इसलिए बिना ..... देखें ..... सोचे-समझे शरीर और मन को अपमानित होने से बचाइए।

144

किसी के पास गाड़ी
किसी के पास अन्य सवारी
कोई पाँव पैदल किसी की लाचारी
जीते जी अन्तर चलता है

पूँजीवाद है- जीवन यात्रा है सब चलता है
अंतिम यात्रा में समाजवाद
स्पष्ट दिखता है
चार कांधे के सहारे
सब श्मसान निकलता है
लकड़ी की चिता में ही सब जलता है
जहाँ से आया था
सब वहीं जाता है
सच्चाई इतनी है
जानता है सब
पर जीते जी भेद मिटा नही पाता है
राम - रहीम - झोपड़ी महल का लफड़ा है
साँस रुकी
सब भेद मिटा
पंचतत्त्व का सब
सबका पंचतत्त्व
गोरा रंग हो या काला
सबका राख एक रंग हो जाता है

आदमी - आदमी में अन्तर हर चीज रूप रंग, स्वभाव अमीरी - गरीबी ..... महल - झोपड़ी जानें क्या अन्तर स्पष्ट है। पर सारा खेल आँख खुले का है आँख बन्द के बाद सबकी सवारी एक समान - सबका जलना - गोरा या काले रंग का सारा भेद मिट ..... सब पंचतत्त्व। जल कर बस एक ही रंग के राख में तब्दील हो जाते हैं। यहीं पर एक मुश्किल दिख रही है कि आँख बन्द होने से पहले किसी को अपने राख का रंग याद ही नहीं आता।

145

परीक्षा
प्रतीक्षा
दोनों डिक्शनरी के उबाऊ शब्द

दोनों का-
मन बेमन करना पड़ता स्वागत
इन दोनों की है एक आदत
आपके लिए कुछ न कुछ रखते हैं
प्रतीक्षा फलता-फूलता सा
घर आँगन महका देता है
परीक्षाफल
धरती से आसमान तक
उड़ने का आधार बना देता है।

परीक्षा बहुत उबाऊ - प्रतीक्षा उससे भी उबाऊ पर ..... दोनों सब्र का फल मीठा - मीठा ही देता है। परीक्षा में उत्तीर्ण होते ही खुशी की सीमा नहीं रहती ..... आगे सामाजिक मान प्रतिष्ठा व्यक्तिगत आर्थिक ..... सफलता भी इसी से पार होकर आती है, ... व्यक्ति को बल मिलता है आकाश में मेरे मुठ्ठी पें का भाव आता है। और किसी की प्रतीक्षा किसी बात की प्रतीक्षा किसी बात की प्रतीक्षा नींद उड़ा ..... देती है।

पर, परीक्षाफल की भाँति ही प्रतीक्षाफल की खुशियों से तन-मन घर आँगन महका देता है। जिस व्यक्ति या जिस पल के लिए आपने प्रतीक्षा की घड़ियाँ बिताई हैं ..... वह साल - महीने दिन घंटे - मिनट - सेकेण्ड के हिसाब सें खुशियों से आपका दामन भर देते हैं।

146

ख्याल सबका रखते - रखते
कभी खुद से बेख्याल हो जाते हैं
हमारे सवालों के जवाब बनते - बनते
खुद ही सवाल बन जाते हैं
कुछ लोग - काफी होशियार होते हैं
बिना सवाल - से उलझे सहजता से निकल जाते हैं
फिर पलटकर सवाल - जवाब से उलझे
इसका मौका आने ही नहीं देते
वे तो राह ही बदल लेते हैं

कभी - कभी घर - परिवार - समाज के लिए कुछ बातों का सामुहिक, ध्यान देने की जरूरत पड़ती है ..... कोई गाँधी, कहे विनोबा कोई राम मोहन राय - कोई गणेश शंकर विद्यार्थी कोई ..... इस जमाने में मार्टिन लूथर किंग और जूनिफर मंडेला बन जाते हैं ..... ये सारे लोग हमारे ही बीच के नाम हैं ..... इन्होंने सवालों के हल निकालते-निकालते ..... खुद को अनेक मुद्दों पर सवाल कर लिया और इन्हीं के बीच कुछ लोग होंगे जो होशियारी सें रास्ते ही बदल लिये होंगे ..... उन्हें किसी मुद्दों से कुछ लेना-देना नहीं था ..... मौके की तलाश थी ..... तलाश लिये और पिछले राहों की ओर कभी पलटे ही नहीं।

147

सवाल है इतना
जवाब है इतना
जीना मुहाल है कितना
साँस रुकने से पूर्व का बवाल है
फिर भी बाल के खाल
खींचे जाते हैं
कभी - सोचकर देखना
जीतकर भी हार है
पराजय के बाद भी
जीत है
सच्चे ईमानदार बाजीगर को
अहं
दोनों स्थिति में
दूतकाटता है
बड़ी देर लगी - समझने में
जीवन के इस सत्य को
बेकार ही कोसते रहे
अपने भाग्य को-

जीवन अनबूझ पहेली है ..... जीत - हार - सवाल-जवाब जाने क्या - क्या लगा ही रहता है ..... पर ध्यान से देखें तो इन शब्द की ..... इन बातों की अहमियत बड़ी क्षणिक है ..... आँख खुले तक अहं ..... से छुटकारा नहीं ..... और आँख बंद ..... बात खत्म ।

इतनी छोटी सी क्षणिक खुशी - जीत - हार - के लिए ..... भाग्य - काबिलियत ..... जाने क्या कोसते हैं ध्यान से देखें तो बात खत्म है .... कहीं कुछ भी नहीं है ।

148

एक दिन
'जाना है, जाना है
तय है, कि जाना है'
और एक हम, तय नहीं है
मनुष्य जन्म फिर पाना है
अमृत बन कर जीना था - जिलाना था
जहर पीते - पिलाते रहे
दावा बहुत गलत कर रहे हैं
'हम जीत हैं
हम जिलाते हैं'

मनुष्य जन्म धार्मिक रूप से महत्त्वपूर्ण है उसी तरह भौतिक रूप से भी । हम सबको एक-दूसरे के साथ बहुत सँभल कर बात - व्यवहार - प्यार से जीना चाहिए । जानते हुए भी, हम सबसे गलतियाँ होती हैं, हम भूल जाते हैं इस धरती के मेहमान हैं हम सब चन्द वर्षों के लिए ही आये हैं ..... हम सबके साथ अच्छे से जीयें - जीने दें-

खोखला दावा ..... न करें कि 'हम जीते हैं एक-दूसरे को जीने देते है ।'

149

प्रेम करे,
'पास मत जाना'

भूले-भटके कर जाओ कोई वादा किसी से
भूल कर भी निभाना मत
प्रेम टीस अधूरी रहेगी
दूरी रहेगी - कमजोरी रहेगी
वादा निभाने वालों का
भूगोल होता है,
इतिहास नहीं
ध्यान दो न
बिन निभे वादों का मालिक
शिला लेखों से सरहद पार जाता है
बिछड़ जाए
लैला - मंजनू - सीरी - फरहाद सा तो
या सोहनी - - महिवाल सा,
दरिया में खुद चाँद उतर
आकाश में तारों के पार
ले जाता है-

प्रेम में मिलन - जुदाई का बड़ा महत्त्व है, पर ..... ज्यादा महत्त्व जुदाई का है ..... मिलन चार दीवार में एक न एक दिन दम तोड़ ही देता है..... क्षणिक होता है यह पर जुदाई अमरता - पवित्रता - शाश्वतता का दर्शन करा देता है। किसी ने कभी कहा भी है प्रेम को रिश्ता बनाओ, वह एक इल्जाम है प्रेम के माथे पे।

150

कोई इच्छा पूरी हो जाए
या कोई खास कोना भर जाए
पर क्षण भर बाद ही
लगता है, कुछ और रिक्त स्थान चिल्ला रहा है।

कुछ रिक्त स्थान चिल्लाता है- आदेश देता है 'रिक्त स्थान की पूर्ति करें' और अब ? अब ? शायद यह अन्तहीन प्रक्रिया है ? जिन्दगी बेहद छोटी पर आशाएँ असीम। एक

को पूरी करो ..... दूसरा भी कहीं छुपा अपने भरने की मांगपत्र लिख रहा होता है।

151

अपने विवेक की रक्षा के लिए
मूर्खों के मुँह कभी न लगिए
वो पूरब आप पश्चिम
वो धरती आप अन्तरिक्ष
वरना विवेक जाएगा भाड़ में
आप महा मंझधार में

हर व्यक्ति के जीवन में ऐसा होता है उसे ऐसे व्यक्ति का सामना करना पड़ जाता है, कि वह उसकी कोई बात समझ नहीं पाता .... और उसका असर यह होता है कि वह विवेक शून्य स्थिति में आ जाता है और खुद को महामंझधार में डूबता सा महसूस करता है–

उसमें समझदारी तो इसी में है कि व्यक्ति और व्यक्तित्व को परखे-बिना..... बात - व्यवहार में उतरना नहीं चाहिए - अपने व्यक्तित्व की रक्षा करने वाला कोई दूसरा कभी - नहीं होता - व्यक्ति अपना अपने व्यक्तित्व के प्रति सच्चा रक्षक बन कर खुद रहता है।

152

'जब तुम सचमुच किसी चीज को
पाना चाहते हो, तो
सम्पूर्ण सृष्टि उसकी प्राप्ति में
मदद के लिए - तुम्हारे लिए
षड्यन्त्र रचती है'
सहायता ? षड्यन्त्र ?
कुछ समझ में नहीं आ रहा है
क्या यह दोनों पयार्यवाची शब्द तो नहीं ?

ये दोनों शब्द रचते हैं प्रकृति में - कामनापूर्ति में सहायक भी होते हैं..... पर यदि प्रकृति नहीं चाहती तो षड्यन्त्र रचकर ..... हमारे प्राप्ति में बाधा डालती है- इसलिए मदद और षड्यन्त्र दोनों का सिलसिला जीवन में समान्तर रेखा सी रहती है- इतना तो सत्य - महासत्य है।

153

रातें बीती सोने में
दिन जीने की तैयारी में
इतनी बातों के लिए
बीत गया सब हाहाकारी में

कितना भी काम हो - धरती से सूरज तक की सीढ़ी हो ..... जाने क्या - क्या दिन भर जीने के नाम पर ..... पर वास्तविकता बिना बात का सारा हाहाकार ..... थोड़े दिनों के लिए खुद पर इतना-इतना अत्याचार।

154

तुम भाव थे
भगवान नहीं
इन्सान को इन्सान पूजे, बड़ा कठिन है
मेरे लिए आसान नहीं,
लगने लगे अब तो
तन पे लगे एक घाव से
अब तो धूप और तपती रेत
बेहतर है तुम्हारे छाँव से

आदमी किसी को भी भाव से ही, स्नेह बंधन में बाँधता है पर यदि वह भगवान बनाने और पूजन की जिद कर बैठे तो ? कठिन प्रश्न बन जाता है, और तब तो व्यक्ति इस भावपूर्ण स्नेह छाँव से, तपती रेत - को ही अंगीकार करने में भलाई समझता है।

155

बिगड़ा
वक्त कभी
ऐसे वक्त पर ठीक होता है
जब अपनी अहमियत
खो देता है।

हर उम्र - और वक्त की अपनी अहमियत होती है, पर उस वक्त जब जरूरत हो यह उस समय नहीं मिलती, और जब मिलती है तो उसकी जरूरत नहीं रह जाती।

156

'एक सफल पुरुष के पीछे
एक समझदार सुशील- क्रियाशील नारी होती है
तो आज मन में एक बात आई
यह तो बहुत पुरानी बात
आज एक नई बात आ रही है।
घर में
किसी रूप में
किसी भी रिश्ते में
यानि धरती पर
विवेकशील - पुरुष होता है
तभी तो आकाश का सफर
साध पाती है नारी
कभी पहचान तुम हमारी
आज तक.....
और आज पहचान भी
और सम्मान मैं तुम्हारी

हर जगह तो नहीं पर नारी की निष्पक्षता - भोलेपन, सत्य को समझने की तीक्ष्णता का जवाब नहीं - पुरुष के लिए स्त्री का जो अर्थ है - स्त्री ..... उसी सहजता से उस अर्थ को भी स्वीकारती है, कि तुम्हारी पहचान मैं थी, घर तक सीमित पर

तुम्हारी विवेकशील सहयोग से मैं धरती कौन कहे आकाश का सैर भी कर रही हूँ- वक्त के साथ रूप दूसरे की पहचान है हम ..... एक है हम, न तुम बिन मैं न मुझ बिन, तुम।

157

दुनिया की कोई भी किताब
सार्थक अक्षर भण्डार
पर उसकी सार्थकता ख्याति
पाठकों की संख्या
भौगौलिक सीमाओं के पार
अपना परचम तभी लहरा सकती है
जब कि उसमें एक भी शब्द
एक भी वाक्य
मस्तिष्क को झकझोरने वाला न हो
क्योंकि
आँधी - पानी - भूकम्प
को झेलेगी वही पंक्ति
और सुरक्षित रखेगी एक भी प्रति
दुनिया के किसी कोने में
और,
सदियों-सदियों
मील का पत्थर बन
अक्षर
अक्षय - अक्षय - अक्षय .....

अक्षर की अक्षयता पर लिखकर इस को छोटा नहीं करना है- अक्षर - अक्षय - अक्षय - अक्षय

158

पालन के लिए गाय समझते हो

वंश के लिए स्त्री समझते हो
जिन्दगी भर जो नाचे इशारे पर तुम्हारे
कोल्हू-सा वही बैल समझते हो

चाँद पर भेजो - समुद्र और पाताल में ..... तीर चलवाओ, तलवार की धार बना दो, पर इन सब पर कमाण्ड अपना ही रखना चाहते हों, तुम्हारे इशारे पर कठपुतली सी हस्ती है..... और चौबीस घंटे में बिखरी टूटी - पर हर हालत में कोल्हू के बैल सी..... बस।

159

रिश्तों की परिभाषा के हिसाब से
कोई रिश्ता था, न है न रहेगा
फिर किस जकड़न से जकड़ी हुई हूँ?
आज अपने आप से प्रश्न करना पड़ा
उत्तर भी आज ही मिला, रिश्तों के
कोई एहसास - अर्थ का
सबूत मेरे पास नहीं था।
टूटे-फूटे टूकड़ों में कुछ नाम थे
हम भी उनके लिए बेकाम थे
आखिर क्यों?
इस प्रश्न ने खूब भटकाया
जितना जिससे मिलना था मिला
दिया - लिया - जिया
केयर टेकर की मिली थी नौकरी
रिटायरमेंट तो लेना ही था।

आज सभी रिश्तों में जान की कमी है। अपनापन - मान - प्रेम - एहसास ऐसे शब्दों से यह पीढ़ी चिढ़ती हैं। नाबालिग है तब तक, केयर टेकर की नौकरी सा रिश्ता निभाना चाहिए - फिर रिटायरमेंट लिजिए, वो अपनी रास्ते आप अपने रास्ते।

कभी भी भूलकर अपना अधिकार मत जताइए - कर्तव्यहीन कर्तव्य निभाएँगे नहीं, तो आप दुःख पाएँगे।

160

प्रकृति की, सुन्दरता
सदा सर्वदा से
उसकी, स्वाभाविकता में है
बाढ़ के बहाव में
बेसब्र वयार में
गर्मी के तपन में
तहस - नहस होते भी
आधा अधूरा भी सही
अपना गुण-धर्म बचा ही लेती है
वैसे ही मनुष्य को भी
अपनी इन्सानियत बरकरार
रखनी चाहिए

जिन्दगी का तालमेल प्रकृति के साथ सदा सर्वदा हर हालत में बने रहने की जरूरत है थोड़ा सी सही पर ..... बची रहे ।

1

जीने के लिए-
साँसों की जरूरत है
पर जीवन्त रिश्तों के लिए
दोनों पंक्ष को
साथ - साथ साँस लेना पड़ता है
पर कभी - कभी एक पक्ष साँस नहीं लेता
और एक तरफा साँस - थकता है
कमजोर पड़ता है
सुर ताल ..... खत्म होते ही
अकेला पड़ रिश्तों की छत चरमराती है धीरे - धीरे दीवालें स्वयं कमजोर
होते जाते हैं
कितना भी रक्त का रिश्ता ही क्यों न हो
बिना सैलाव समय की धारा में बह जाता है
रिश्ता सिर्फ साँस, एक साँस नहीं

साँसों की ..... कहानी है
खाद - पानी चाहिए दोनों ओर से
वरना जल्दी हो जाएँगे कमजोर से

जब रिश्ते की बात होती है तो दो पक्ष की बात होती है - दोनों ओर से रिश्तों को खाद - पानी चाहिए तभी निभाया जाता है ..... वरना कमजोर पड़ता .... एक दिन चरमरा कर टूट जाता है-

जहाँ भी रिश्तों की दुर्गति लेती है ..... वहाँ दिखता है एक पक्ष ने खाद - पानी देना बन्द कर दिया है।

रिश्तों - रिश्तों की तासीर में ही जीते हैं यदि एक तरफा तो औचित्यहीन।

2

दर्द - दर्द - बेपनाह दर्दीला दर्द
झेलने के बाद
दुनिया की सबसे बड़ी खुशी
प्रकट होती है
यानि मनुष्य जन्म और उसकी रूदन
पहली किलकारी
पतझड़ - बरसात झेल कर
खिलती है वारी - फुलवारी
बहुत इन्तजार और यत्न के बाद आती है
खिलते हैं फूल - पत्ते - फिर फल की बारी
ध्यान नहीं जाता है हमारा
पर जाना चाहिए
कोई खुशी मुफ्त में मिलती नहीं है
द्वार पर दस्तक से पूर्व
बहुत महँगा मूल्य चुकवाती है

शायद ही कोई हो जो हृदय पर हाथ रखकर कसम खाए, कि उसने खुशी को बेमोल खरीद लिया है। खुशियाँ खुद-ब-खुद उसके पास आ गई हैं। एक अच्छा उदाहरण है मानव जन्म दर्द - दर्द - दर्द खुशी - खुशी - बेहद खुशी ..... प्रथम किलकारी ..... बरसात - आँधी - पानी - ओले झेल खिलती फूलवारी-यानि

दर्द ही दु:ख ही रूदन ही ..... पलटकर खुशियों की बौछार करती है मांगनेवाला ही इसका मूल्य जानता है, कि उसने क्या दिया है तो क्या मिला है।

161

कभी - कभी कोई दु:ख
अव्यक्त ही रह जाता है
न कोई दरो - दीवार
न कोई कांधा
न कोई गर्म हथेली
ऐसे में जीवन आजीवन पहेली
सुलझी थी न सुलझी है
बनाए रहिए - लाख सहेली .....

आदमी अपना सुख-दु:ख किससे कहें ? पूरे जीवन के प्रयास में शायद ही कोई कांधा कोई हथेली - दरों - दीवार मिलते हैं जिनमें राहत की साँस ली जा सकें ..... जिन्दगी इस मुद्दे पर पहेली सी ही दिखती है। उसके पास सहेली सी कोई कर्तव्य नही होता है।

162

किसी ने समझा दिया
न अतीत में जिओ
जिओ तो बस, वर्तमान में
पर वर्तमान ?
अतीत की धुँधली, छाया है
भविष्य के हाथों में सौंपने को
वर्तमान के हाथों में आईना
वह भी अतीत का ही

भूत - भविष्य - वर्तमान - व्याकरण कहता है, पर हमारा अंत:करण उस क्रम में पहले वर्तमान में खड़ा होता है, यही वर्तमान, हमें भूत में घटित जीवन की छाया बन

वर्तमान की तुला पर तुलता है। हमारे सम्पूर्ण जीवन की, नींव की स्थिति बताता है। और तब लगता है- अतीत ही वर्तमान के पायदानों को पार कर, वर्तमान को अपना दर्पण बना ..... जीवन को पार करता है।

163

सूनो सबकी
करो मन की,
यानि अपना निर्णय स्वर्ण सा
बिना किसी को इल्ज़ाम दिए
अपने आप हो जाते हैं
सहज संतुष्ट सा,

भीड़ के विचार नहीं होते - भीड़ के पास भेड़ चाल होती है, किसी का मन दु:खाने से अच्छी बात है, चुपचाप सुन लेना फिर अपने मन- मस्तिष्क के एकलौते सोचे गये - विचार को अपना बनाना।

164

लाख सूइयों को सँभाल कर रखो
लाख यत्न - जतन के बावजूद,
कहीं-न-कहीं उसकी नोंक
सावधान रहती है
भविष्य में उसे आपकी असावधानी का
फायदा जो उठाना है
हर चीज अपने व्यक्तित्व का
गुण - धर्म
किसी-न-किसी के लिए
इस्तेमाल तो करती ही है

सूई के गुण-धर्म को सब जानते हैं पैबन्द की कहानी उसी से शुरू उसी से खत्म हर कोई सँभाल कर वक्त - बेवक्त के लिए रखते हैं अपने भर सावधान उसके

नोक के लिए पर जाने सारी सावधानी को ऐसी - तैसी करती सूई जरा सी असावधानी का..... फायदा उठा चुभ जाती है चूभना उसका गुण - धर्म है . ..... वह उसका इस्तेमाल-असावधानी के वक्त कर लेती है।

165

व्यक्तिगत या सामाजिक
जीवन में सहयोग सबको चाहिए ?
फिर, मन कहता है
दिल दिमाग का ताल मेल
सर्वोत्तम सहयोगी होता है
सफलता का स्वाद
अपनी ही बुद्धि से, खुले तालों से मिलता है-

सहयोग बड़ा सुन्दर शब्द भी है, और सहयोग आनन्ददायक भी । सफलता पाने के लिए सहयोग चाहिए, पर स्वाद में अन्तर हो जाता है, जिस ताल-मेल से व्यक्ति अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है उसकी तासीर लाजबाब होती है ..... उस लिए अपने आप से सहयोग सर्वोत्तम सहयोग है।

166

वातावरण-
सामने वाले का मिजाज,
परखे - निरखे बगैर
कोई शब्द,
कोई वाक्य मत निकालना।
वरना होंगे ये बर्बाद
और समय-समय पर, अपनी मूर्खता आयेगी याद।
शब्द मस्तिष्क और हृदय से
प्रवाहित गंगाजल है
कोमल है, कर्कश नहीं करना है इसे

धैर्य रखकर - सोच समझकर
ही मुँह खोलना है .....

सामनेवाले को समझे बिना-
क्या होता है, अगर हम बोलते हैं ? क्या होता है अगर हम चुप रहते हैं ? बहुत कुछ होता है जब हम बिना सोचे-समझे बोलते हैं बहुत कुछ

यानि अपना मुँह वहीं खोलें - वहीं बोलें, जो आपकी बात समझनेवाला हो..... वरना ऐरे - गैरों के सामने अपने मन के कोमल भावों की तौहीन न करायें।

167

किसी से
अपनी बात मनवाना
बोलकर
ललकार कर या
प्यार कर
आसान नहीं है - कठिन है
थोपी गई बातों को, सम्मान नहीं मिलता है -
हर आदमी अपनी सोच - गति - अपने व्यवहार अलग रखता है
दूसरे दे देते हैं, राय या दखल
उसे न वह इजहार करता है
न उसे कुछ भान भी होता है

किसी पर अपने विचारों का भार नहीं डालना चाहिए..... हर आदमी एक ही मुद्दे को अलग-अलग नजरिए से देखता है, सोचता है, करता हैं, इसलिए अपने राय की कीमत आप अपने-आप सँभालिए, दूसरे के जेब या मस्तिष्क को इसके लिए लाचार मत कीजिए।

168

इतनी खूबसूरत इतनी हसीन
हजारे गर्व

अनेको पर्व, न जाने क्या-क्या
कभी-न-कभी बोझ बन ही जाती है
शायद की कोई गुंजाईश नहीं
सत्य है
चार-कांधों पे संज सँवर
अग्नि साथ अंतिम फेरे ले
समर्पित हो
भष्म हो जाती है

जीवन बहुत खूबसूरती से अपनी शुरुआत करती है जन्मदिन, शादी - व्याह - पर्व त्योहार जाने - क्या से उसे सजाया - सँवारा जाता है, पर एकसमय आता है जब चार कांधों पे सजा - सवार कर अग्नि की समर्पित हो जाता है। जिन्दगी की इतनी करुण परिणति पर भी ये जीवन जीने की ललक - बहुत ही आश्चर्यजनक है।

169

संतान का सच जानते हैं
सब
फिर भी हर संसारी का सच संतान

ये सच ..... ऐसा है। जिस पर ..... सबकी अपनी - अपनी विचार-धाराएँ हैं।

170

जिन्दगी का परिणाम
कभी भाग नहीं होता
कुछ भी करो जोड़ - गुणा
वह घटाव ही होता है

जन्म से बढ़ते सालों को ध्यान देने पर, वह बड़ा खूबसूरत घटाव में बदल जाता है।

171

तुम्हारे संसार में मिल गई
ज्यों पानी से पानी
तुम तो ऐसे ही रहे
दूर ..... अभिमानी के अभिमानी

जो स्नेह करता है ..... बड़े सहज भाव में मिलकर एकाकार हो जाता है, पर जो औपचारिकताओं को निभाता है ..... वह स्नेह-सा, नहीं अभिमान-सा दिखता है।

172

कभी झुकना पड़े-
गलत के सामने तो
कमजोर मत पड़ना
अकड़ - जिद्द थपेड़ों से
टूट जाता है-
लचीलापन इधर झुके या उधर झुके
अपनी जगह पे कायम रहता है

अकड़ कहीं भी हो, पराजित करता है लचीलापन जहाँ भी हो हारने की नौबत नहीं आती है .....

173

प्रबल इच्छा सें कुछ प्रयास करो
इसके समानान्तर निष्फल करने की-
साजिशें निरन्तर चलती हैं
जानते हो यह क्या है ?
यह प्रकृति है-

प्रकृति प्रवृत होती है तो, सारे काम सफल हो जाते हैं और अगर वह नकारात्मक प्रवृति में प्रवृत हो, तो निष्फल होना ही होता है- यह स्वाभाविक चाल है - उसकी किसी से व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं है।

174

हमारी खुशी
हमारे गम
इसके लिए कभी किसी को
क्यों जिम्मेदार ठहराएँ हम,
किसी के थोड़े प्रयत्न से
हँसने का अभिनय हो सकता है
किसी के लाख प्रयास से भी
आदमी रो नहीं सकता है

हँसना आसान है तथा रोना - रूलाना कठिन। हँसी चेहरे का अभिनय-सा कोई भी कर ले, करवा ले, पर हृदय के भीतर प्रवेश किया बिना आँसू कोई नहीं निकाल सकता।

175

मरना आसान है
जीना कठिन - बहुत कठिन - कठिन
मरने के लिए पल
जीने के लिए बरसों
जीने से डर लगता है ?
या इन जीने की परिस्थितियों से ?
या मेहनत से ?
जो भी हो
पता कैसे करे ?
कुछ लोग ऐसे हैं
कमजोर तो ताकतवर भी

ईश्वर के रजिस्टर से
बिना इजाजत
अपना नाम छुपकर, मिटा देते हैं
ईश्वर चुप,
अपनी रचना के करतूत से
या अपनी हार पे ?
ईश्वर किससे कहें ? अपनी रचना है
कहे भी तो क्या कहें ?
अक्सर
या शायद
रचना आगे
रचनाकार पीछे होता है

लोग कहते हैं जीवन-मरण ईश्वर के हाथ है - पर, अब मानने का मन नहीं होता - उन्हीं की रचना उन्हीं के रजिस्टर से, बिना पूछे अपना नाम काट लेता और दूसरे रजिस्टर में बिना इजाजत दर्ज करके, अपनी कहानी खत्म कर लेता है और वे मौन अपनी रचना की कारस्तानी देखते रहते हैं, क्यों ? इसलिए तो नहीं, कि रचना आगे - और रचनाकार पीछे होते हैं।

176

मन पसन्द काम, जीवनी शक्ति कहलाती है
काम में रमा-रूपा व्यक्ति हरदम
जीवन्त - जीवन्त-सा दिखता है
काम छिन कर देखो, एकबार मुर्झाया मानो खत्म।

हर व्यक्ति का एक-न-एक शगल होता है उसमें उसका जी-जान लगा रहता है और उसी से उसके काम में सौन्दर्य आता है यानि पसन्द का काम व्यक्ति की शक्ति है - यादि वह छिन जाए तो उसका टूटना तय है ..... उस इसलिए ईश्वर किसी से उसका पसंदीदा ..... काम - वक्त न छीने।

177

सलीम चिश्ती की मन्नत
सलीम - करता है सम्राट पिता से बगावत
करम का खेल था, या बिगड़ गया वक्त
जो भी हो - ऐसे में बहा था हिन्दू - मुस्लिम का रक्त

संतान चाहिए ? जरूरी नहीं । इतनी बात हम बस समझ नहीं पाते । संतान वरदान भी अभिशाप भी ।

178

मोह ममता के चंगुल में फँस जाता इन्सान
अकबर था - जिसके डर से काँप उठा था, सारा हिन्दुस्तान
नवरत्न - दीने - इलाही - जिसका सदा रहा ईमान
इस अकबर के सामने शस्त्र लिए ..... संतान

जाने क्या बात है, रक्त रक्त सें जरूर टकराता है । क्या रक्त अभिशप्त है ?

179

'रिटायरमेंट के बाद
अब आप ?
बहुत कठिन प्रश्न
सक्रिय रहना ही जीना है
रिटायरमेंट खुद से पहले
दूसरों की निगाहों से भी
फूलस्टॉप नजर आता है

प्रश्न कठिन पर प्रश्नकर्ता भोला - भाला ।

यह थल भी एक समुदर है
इसमें भी लोग बह जाते हैं

यह धरती समुदर भाव से
सदा से पगलाई रही है
किसे - कब - कहाँ बहा दे
बिन पानी ही अनजान दिशाओं में
बड़े नाम
बड़े काम
वैभव - बड़ी - बड़ी बातें
क्षण में समा जाते हैं इसकी परतों में
इसके अट्टहासों से
गगन भी डरता है
सीधी बात है तीनों का ताल है
धरती, गगन, जल, रूप अलग
पर ..... विध्वंसक ..... एक समान

हमारा विचार है धरती ठोस दिखती भी है उसमें बहने का भाव नहीं आता है - बहने का भाव, जल के प्रति भाव आता है-
पर ध्यान से देखो तो, ये धरती हमें विभिन्न विचारधाराओं में बहाती रहती है- बड़े नाम बड़े काम बड़ी - बड़ी बातें सब धरती के बहकावे में आकर बह जाते हैं।

धरती - गगन - भी हमें जल की भाँति ही बहाती है ..... तीनों सृजन करवाता है ..... और विध्वंस भी करता है।

180

आशा - निराशा
उदासी - के बीच भी
एक ..... हँसी ..... की प्रत्याशा,
कभी हवाओं से
कभी पानी से
कभी मिट्टी से दब मर जाते हैं,
हादसाओं का समन्दर यह जीवन
फिर भी, इन सबके बीच बहुत कुछ कर जाते हैं

जो भी हो बहुत कुछ कर जाते हैं
जो भी वक्त के तुला से
तौल कर,
मिलती है साँसें,
उसी में
मील का पत्थर भी तो बन जाते हैं

जीवन में उथल-पुथल - असफल स्थिति - दुःख - निराशा जीवन - मरण और भी न जाने क्या-क्या - हादसाओं के समन्दर में हम सब जी रहे हैं, पर हमारी हौसलों की ये हालत है, कि बेहाल स्थिति में भी इस धरती पर, ऐसा कुछ कर जाते हैं, कि मील के पत्थर सा कायम हो जाते हैं।

आदमी आशा-निराशा उदासी के बीच भी, हौसलामंद होता है यह बड़ी बात है।

181

विनम्रता - मीठी बोली - सहनशीलता
का पाठ पढ़ाया गुरु ने,
परिणाम देख लिए।
अब अपने व्यक्तित्व में नीम की निबोली
चाहिए - जैसे को तैसा करना, सीखना।
बेकसूर चाँद को काला बादल ग्रसता है
काँटों के बीच गुलाब बिखर जाता है
एक तरफा नाता - रिश्ता भी
अर्थहीन - नामायने हो जाता हैं
एक के गरिमामय याद से,
दूसरों को कुछ लेना-देना नहीं है
बिना बात मीठी बोली बोल
उन शब्दों का भी अनादर नहीं कराना है

विनम्रता - मीठी बोली - सहनशीलता - चरित्र के गुण ही गुण कहलाते हैं उसे अपनाने की सलाह दी जाती है

पर निर्दोष चाँद की रोशनी बादल ढँक देता है खूबसूरत सहनशील .... गुलाब

की पंक्तियों ..... काँटों से बिंधती रहती है उसी तरह कुछ लोगों के एकतरफा गलत व्यवहार से दूसरे का मन टूटता है घायल होता है ऐसे लोगों के सामने विनम्रता - स्नेह - मीठी बोली को अपमानित होना पड़ता है, इसलिए उस दौर में पठित पाठ से हटकर जैसे को तैसा ..... वाली कहावत चरितार्थ करना है।

182

एक से तुष्टि
अनेकों असंतुष्टि मिटा देता है
उदास दिनों में खुश रखने के लिए
हँसी - के मोती बिखेरने की क्षमता रखता है
क्षणभंगुर क्षणों के
विपरीत अंकों में
कोई एक अंक
सकारात्मक - मनचाहा था
जिसने संतुष्टि
खुशी देने की जिम्मेवारियों को
निभाया था,
इसलिए खास क्षण को
शिद्दत से, आदर से
मन के तस्वीरों मे ही नहीं
दरो - दीवारों पे सजाइये,
ये दीवारें ही करेंगी
आपस में बातें
सिर उठाइये - सुनिये उनकी बातें
जादूगरी ..... महसूस कीजिए
आजमा कर देखिए
जीवन का यह क्षण
भविष्य में भरता है उत्साह उमंग
संतुष्टि का एक क्षण ही

सारी जिन्दगी को रखेगा
तरो ताजा और मगन

हमें किसी भी बातों, विचारों, कार्यों से संतुष्टि मिले वो अविस्मणीय पल साँसों की तरह तरोताजा रहना चाहिए - आस बन - श्वास बन - खुशी बन - एक भी संतुष्टि पल, इस जीवन को जीने के लिए बहुत है।

183

किसी की ओर
अपेक्षा भाव से मत बढ़ना,
सजीव हो या हो निर्जीव
अपना हो या पराया
अपना कभी अपना हुआ ?
पराया कभी पास आया ?
अजनबी आशना नहीं होता है
बेगाना तो बेगाना ही है तो ?
अपने को
या उसको दोष देना क्या ?
ऐसी स्थिति आने ही नहीं देना
उसके प्रति
रखना उपेक्षा भाव
कारण
आसिक्त-भक्ति
हर हाल में उलझाते हैं
बाद में पछताने से बेहतर है
संसार में सब के साथ होकर भी
रहना चाहिए
सबसे विरक्ति

किसी से अपेक्षा - अपनापन - आसक्ति या भक्ति भाव में आना - किसी-किसी

का अपने लिए खुद व खुद उपेक्षा का पेड़ रोपना है - इन सबमें व्यक्ति कसमसाता सा परेशान दम धुँटता-सा महसूस करता है-

इसलिए इन सांसारिक चीजों के पास रहकर, भी एक विरक्ति भाव होना चाहिए संसार के रहे ..... सांसारिक मोह सें परे रहे ।

184

किसी को चाहना तो
समन्दर बनकर
किसी से मिलना तो
हल्दी चूने सा मिलना
अपना रूप रंग त्याग
किसी के प्यार में रोली बन
माथे पे चमकना
बड़ी मुश्किल से पीला-सफेद
सफेद पीला होता है
समर्पण स्नेह का ऐसा मिलन
अपने-अपने अस्तित्व - अहं
का अनूठा त्याग
भाग्यशालियों को ही मिलता है

जब तक कुछ गँवाते नहीं, कुछ पाते नहीं, समर्पण में यदि समन्दर-सी गहराई है हल्दी- चूने सा त्याग है अपना रूप-रंग गुण-धर्म त्यागकर, जो स्नेह दिया या लिया जाता है वहीं सच्चा - सुन्दर होता है

पर बड़ी मुश्किल है किसी के होने और किसी को अपना करने में ..... बड़े भाग्य से ही किसी-किसी को समन्दर की गहरी लहरों से टकराती पवित्र ..... तरंगों-सा, निर्मल स्नेह मिलता है- या व्यक्ति दे पाता है- काश प्रेम सिर्फ शीशे सा पारदर्शी हो ?

185

कोई तुम्हें चाहता है
प्यार करता है

वही तुम्हारी बात सुनेगा
वरना किसी से, कोई उम्मीद मत रखना
हमेशा तो नहीं पर
अकसर .....
सामने वाला
सामने वाले के लिए
कभी
मेढक
कभी तोता, होता है
समझदार आदमी, शायद ही कभी
किसी के सामने ..... मन की बात कहता है

याद करें - कोई उदाहरण है कि किसने किसको प्यार किया ? किसने आपकी बातों का अर्थ समझा ? जो आप कहना चाहते हैं वह ..... किसी के समझने के लिए नहीं होती – शब्दें बर्बादी के कारण न बनें ।

186

शिक्षा और संस्कार का असर
बड़ा गहरा होता है
शिक्षा
पद - मद - धन प्रदान करता है
पर संस्कार का अभाव
बोली से,
विचार से,
चलने से,
बैठने से,
हँसने से,
रोने से,
सोने-जागने से,
विगत इतिहास बयाँ हो जाती है
कौन कितने पानी से

वर्तमान में सतह पर है या आसमानी
भूगोल बन बताता है, खुद पता
बात इतनी समझ में आई है
लाख ज्ञान-विज्ञान पर
गर्व कर ले कोई
साहित्य एवं
मनोविज्ञान का ज्ञान नहीं
तो जीवन का हर हिसाब अधूरा है
जीरो से शुरू गिनती सी .....
कभी-किसी अंक में नहीं शोभती

शिक्षा अनेक माध्यमों से लिया जाता है, दिया जाता है, पर संस्कार बोली - विचार-व्यवहार यदि देखना है तो जहाँ साहित्य है मनोविज्ञान है वहीं दिखता है। उसके अभाव में व्यक्ति गणित है, और उसमें जीरो बड़ा हीरो बनता रहता है।

187

लापरवाह हुए कट जाएगी –
बेपरवाह हुए - कटवाएगी,
नमी इसकी सच्चाई है
पर पत्थर - जहाँ उगलती है
निगलने पर आएँ, तो विष कन्या बन जाती है
सच्चाई पर हो तो,
गंगाजल - तुलसीदल,
झूठ पे आ जाए तो,
सूरज में कालिख मल देती है।
बेस्वाद पे मुँह बनाती है
सुस्वाद को गले लगाती है,
सारी दुनिया के हर जीवन को,
यही तो नाच नचाती है
अन्न के लिए सेतु बन

अन्नपूर्णा बन जाती है
वाणी के लिए वीणा बन
सरगम भी छेड़ जाती है,
यही दिलाती है दुनिया में
सम्मान भी अपमान भी,
इसके निकले शब्दबाण से
साँसें भी रुक जाती हैं
सदा रखिए पवित्र
छुपी रहकर भी सदा
फैलाएगी इत्र - इत्र - इत्र

शब्दरूपी धन मन में छुपी रहे जिह्वा उसे जूठी न कर पाये - काट - कट ना हो पाये, उसका ध्यान हमें ही करना है।

188

गलती सारी आपकी
भुगत रहे हैं हम
आपने पतली गली पकड़ ली
मेन रोड पर पकड़ाए हम,
न चोरी, एक नहीं फरमान
फिर भी दफाओं को दफनाते
दफन के कगार पर हम,
किस बात की सजा है
जान जाए तो मजा आए
जेल की अंधेरी रातों को
चाँद खुद तारों से सजा जाए,
कुछ लोग कायर होते हैं
अपने सिर की टोकरी दूसरे सिर पे उठवाते हैं
जिस वंश का नामोनिशान नहीं बचता,
उसी वंश के नाम पर चक्रव्यूह रचे जाते हैं
बिना बात अभिमन्यु बना कुछ लोग,

बनते हैं नायक
गुजर जाते वे भी एक दिन बनके खलनायक
इतना छोटा जीवन
इसके लिए चाल पर चाल चले जाते हैं.....

कभी-कभी किसी दूसरे की गलती का फल दूसरे को चखना पड़ता है। अभिमन्यु की क्या गलती थी ? नेपालनरेश की क्या गलती थी ? जीवन कितना छोटा - क्षणिक हैं इसके बनाने के बजाय मिटाने के लिए गोल-गोल षड्यन्त्र गोला ..... वाह रे मनुष्य !

189

ये जो रिश्तों की
बदरंग पतंगें उड़ती फिर रही हैं मेरे आसमान पे,
इन्हें 'कट' - कहकर गिर जाना चाहिए
मेरे आसमान - जमीन - मन के पास
इन सबके लिए नहीं, एक आस - विश्वास .....
न पकड़न की एक ललक .....
न छत - छाँव

पहले जब रिश्तों की बुनियाद हिलती थी, तो हिम्मत जुटा कर समेटा जाता था ... . सहेजा जाता था - जब वे पतंग सी उड़े और कहीं गिरे ..... न पकड़ने की ललक बनी है न ..... कोई ऐसी जमीन है जो इसे थाम सके।

190

धैर्य तो देता है
अंधकार भी
छुपाये रखता, अपने सीने में
नन्हीं शरारें की लौ,
और देता है
हम सबको एक आशा

'लो मैं चला
आ रहा है उजाला'

रात के अंधकार में ..... जैसे - जैसे समय ..... बीतता है ..... एक शरारें की आँखें ..... खुलती हैं ..... और अंधकार सें गुफ्तगू होती है मैं चला ..... तू आ ..... ।

191

भूल गये अपनी पहचान
खुशी-खुशी बन आदिमानव
माता-पिता पुत्र-पुत्री रहा नहीं
कोई विभाजन
गडमड सब हो गये
देह को जितने दिया
संस्कार और धर्म,
मन का भ्रम, भस्म सारा मानव कर्म

कोई रिश्ता खास कर इस सदी के प्रारंभ में नहीं बचा है ..... हम सब में आदिमानव ने सिर उठा लिया है । हम सब बस नर-नारी, स्त्री-पुरुष कहीं कोई बन्धन - प्रतिबन्ध कोई लक्ष्मण रेखा नहीं ..... स्वच्छन्द जंगली - आदिमानव ....

सारी सभयता - संस्कृति वेद-पुराण-रामायण ..... कुरान ..... बह गई ..... समय की धारा में - दुनिया गोल है हम जो थे वहीं आ गये - वैसे ही जिएँगे जंगली जीवन .....।

192

कोई साथ नहीं
कोई साथी नहीं
रात भटका न दें
इसलिए धरौंदे की पनाहे हैं

दिन भर कोई ईमान से कहें कोई साथ साथी रहा है ? ..... रात में भटकने का डर न हो तो कोई अपने घर भी न लौटें - रात का डर है, इसलिए व्यक्ति पनाहगार में आता है।

193

साजिश का गूमा भी नहीं होता है
फिर माहौल में चक्रव्यूह दिखता है
अभिमन्यु की स्थिति बन जाती है
छल - बल - से घेरते हैं ?
नहीं, यह महाभारत काल है इसलिए ?
अत्यधिक आधुनिक काल है इसलिए ?
जो नहीं होता तीर-कमान से अब होता है
मुस्कान से, अभिमान से, अपमान से
कभी-कभी अल्प ज्ञान से-
तथ्य है साजिशकर्ता जीतता है ठहाके लगाता है
आप अपाहिज, मूर्ख से ..... जीने को मजबूर।

चक्रव्यूह हमेशा रचा गया है - अन्तर सिर्फ वक्त का है चक्रव्यूह के शस्त्र बदल गए हैं मुस्कान अभिमान, अपमान अल्पज्ञान में बदल गया है।

194

बच्चा, निर्मल, कोमल, सोनल सी हँसी
तुतली जुबान
घुटनों के बल घिसकता
ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना,
पर इस नन्हीं जान में भी
कहीं-न-कहीं अणु-परमाणु छिपे होते हैं
समय आने पर यही शक्ति
घर, समाज - कभी-कभी देश का नक्शा बदल देता है
तो कभी विश्व भूगोल में ..... भी

जर्मनी का हिटलर हो
या प्रेम के नाम पर कण भर बारूद
नेपालनरेश के दस सौ सालों के दीपकों को दीपा खातिर, दीयेन्द्र बुझाता है
पीछे के इतिहास को देखो
रामायण - लंका
इन्द्रप्रस्थ - महाभारत ....
उसी छिपे अणु-परमाणु की कहानी है
इसलिए ईश्वर के इस रचना से
बचके रहो --
उसके भोली अदाओं पे दिवाने मत बनो
संभल के रहो
मौका मिलने की बात है .....
तो यह -
विस्फोट का बॉक्स है
सँभल के पेश आना है
हर पल याद रखो

बच्चा जन्म लेता है वाह ! क्या निर्मल कोमल, पर जब वह आदमी बन जाता है तो घातक - विस्फोटक परमाणु बम से बढ़कर - कार्य करने की क्षमता रखता है - आदमी से बदसूरत प्रकृति की कोई सच्चाई नहीं।

195

दम लेने को देहरी
रात बिताने को बिस्तर
कोई एक दरवाजा
आवाज दे आजा
इतने में ही संतुष्टि
यकीन नहीं आजमा, जा

100 मंजिलों की इमारतों को बनाकर भी एक आदमी की जरूरत देहरी - दरवाजा

- बिस्तर इतनी ही है, पर अपनी बाँहों को फैलाने की आदत यानि जितना हो जाए मेरा ..... पर संतुष्टि का क्षण मिले तो सोचें, आजमाएँ हमें एक साथ कितने कमरे-कितने बिस्तर कितनी रोटी ..... चाहिए ? फिर खुद ..... समझ जाएँगे।

196

पहली के बाद एक
जब तक एक के बाद सीढ़ी न चढ़े
मंजिल की बात न करें
बहुत गहरा रिश्ता है
मंजिल और राह के हादसों में

पहली सीढ़ी पर मंजिल की बात सोचना भी गुनाह है ..... राह - और मंजिल के बीच ..... हादसों के सन्दर्भ में का भी फासला होता है।

197

कीचड़ से कमल को
शिकायत का हक नहीं
इसी बदसूरती के पैमाने पे
कमल का सौन्दर्य जग जाहिर है

कमल अगर कीचड़ में नहीं खिलता तो उसके सौन्दर्य के प्रति यह भाव नहीं होता जो भाव कीचड़ में खिलने के कारण उसके प्रति उभरता है-
तारीफ करनी पड़ती है कीचड़ में भी उसके व्यक्तित्व को निखार रखा है-
पर इससे भी बड़ी सच्चाई यह है कि कीचड़ ने ही उसे, इतना हसीन बनाया है ..... उसे उससे किसी प्रकार के शिकायत की कोई गुंजाइश नहीं है।

198

रात आई अपने सुबह के लिए
सुबह दिन के लिए

दिन, शाम व रात के लिए,
हम सब इसके आगे-पीछे किस बात के लिए ?

जीव जीवन में निरर्थक दौड़ लगाता है तो निराशा भी हाथ आती है और तब मन दार्शनिक हो उठता है- सबकी सार्थकता दिखती है और अपनी निरर्थक बेचारगी तो मन ..... भटकता ही है ।

निराशा के बादल घुमड़ते हैं प्रश्न जब प्रश्न उभरता है उत्तर ?

199

बेचारगी का समन्दर है सबके अन्दर
लहरों में मचल लेता है, दम तोड़ता है अन्दर ही अन्दर ।

रस्सी जल जाए तो भी ऐंठन दिखती है हम सब में नहीं कुछ लोगों में यह ऐंठन है बेचारगी हैं ..... पर ऊपर की अकड़ बोली व्यवहार में प्रकट नहीं होता - पर, वास्तव में रस्सी की भाँति अन्दर उसे तोड़ - चुकी होती है ।

200

न कुछ देखता है
न कुछ सुनता है
तो सिर्फ अंधकार अंधा है ?
नहीं वह बहरा भी है,
लाख चश्मा चढ़ा दोगे,
उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा
बन्दूक - लाठी चला दोगे
वह चुप ही रहेगा,
न आह - न इनकार
न कोई प्रतिकार
न प्रतिरोध में, एफ. आई. आर.
यदि अधंकार से कुछ कहलवाना है
उसका मौन व्रत भंग करवाना है ?

..... तो
एक जुगनू को गुनगुनाने दो
एक तारे को टिमटिमाने दो
ऐ मिट्टी के नन्हें दिए को जल जाने दो
अब देखो -
अंधकार तुम्हारा स्वागत करता सा
मुस्करायेगा
--- एक दिशा की कौन कहे
दसों दिशाओं का रास्ता दिखावेगा

अंधकार ..... बड़ा सबल-पल भर में सारी बातें ठप ..... मारो-तोड़ो-फोड़ो गाली दो देते रहो अंधा-बहरा..... न इनकार न प्रतिकार चुप मौन साम्राज्य सबल . ..... दूर-दूर तक फैला ।
हराना है उससे कुछ कहलवाना है करवाना है तो धैर्य से एक दीप जला लो..... .... न हो, जुगनू ही ले आओ ..... फिर देखो मौन तोड़ेगा अंधकार मुस्करायेगा स्वागत के साथ मार्ग प्रशस्त करेगा ।

201

ऐसे - वैसे लोगों से
घिर जाती है जिन्दगी
लाख बचना चाहते हैं
दे ही देते हैं कुछ छींटे-गन्दगी

हमारी दुनिया हम इन्सानों से बनी है - पर, उसी में कभी कुछ इन्सान इतना अजीव व्यवहार कर जाते हैं, कि लाख बचके रहो कुछ असर पड़ ही जाता है ।

202

जीवन का अर्थ
भविष्य में दिखता था
भविष्य आ गया

वर्तमान बन-
कहाँ कुछ अनोखा अर्थ
सब व्यर्थ अर्थहीन

सुबह - दोपहर - शाम की जो स्थिति है वही स्थिति वहीं पूरे जीवन की है- ज्यादा वक्त अर्थहीन बीतता है ।

203

दिलों से - दिमागों से - देहों से
खेलते आ रहे हैं सदियों से लोग
इशारों से हो जाए जहाँ काम
वहाँ सिर फोड़वा देते हैं लोग
सब जानते भी गुमराह होते लोग से लोग
न कर्म से न धर्म से न भ्रम से
बस औपचारिक - सारे तथ्य लावारिश
चौक चौराहों पे भटकते
आवारा आशिक से ।

अकसर देह - दिमाग - विचार - बात किसी और को होता है, पर दूसरे दखल देकर ..... गुमराह कर देते हैं तनावपूर्ण स्थिति में डाल देते हैं, फिर ..... सब कुछ डवाँ डोल सा हो जाता है - ऐसी स्थिति आने देने में हम एक तरफा निर्दोषिता नहीं दिखा सकते ..... औपचारिकताओं का निर्वहन करने इसे लावारिश होने से बचाया जा सकता है । पर वो जो बड़े बुजुर्ग कहते आए हैं बेपेंदी ..... ।

204

'हम आपके
हमारे आप'
इस वाक्य से बदसूरत
कोई वाक्य नहीं
'हम किसी के नहीं

कोई हमारा नहीं''
इससे खूबसूरत कोई
दूसरा वाक्य, गँवारा नहीं-
न पूरा होने का गर्व
न अधूरे होने का गम
कोई नहीं मेरा
कोई नहीं तुम्हारा
चाहो तो ले लो
गंगा जल की कसम

वक्त के साथ वाक्य बनाए जाते हैं - वक्त पर ही वाक्यों की शोभा और सार्थकता है। और वो तो वक्त होता है भावुकता का। भावुक पलों में हम सब एक दूसरे के होने जीने - मरने और न जाने क्या .....

पर एक वक्त आता है, भावुकता का नशा उतरता है, और अथार्थ से सामना होता ही सब नकारत लगता है ..... और भीतर एक आजादी का भाव आता ..... हैं ..... वो गंगाजल सा पवित्र और परिष्कृत होकर जीवन को सही धरातल पर ले आता है।

205

शुरुआत
आशा
उमंग
उत्साह
निराशा
अपमान
पश्चाताप
अंत

सच को परखें ..... शब्दों को तौलें ..... सच्चाई को देखें ..... दिख रहा है सब। सबकी जिन्दगी आठ प्रहर सी आठ शब्दों सी

मिलने आएँगे, जो ऐसा कहे तो,
उनसे रहना होशियार
कुछ समस्या ले के आएँगे
आपके वक्त को करेंगे दुश्वार

आज आदमी अपने वक्त के लिए तो परेशान रहता है, पर उसे दूसरों के वक्त से कुछ लेना देना नहीं होता, और अकसर किसी का कीमती वक्त नजदीकी लोग ही बर्बाद कर देते हैं।

206

अपना मान सम्मान - अपना जीवन
दूसरों के भरोसे कभी न छोड़े,
दूसरे नहीं कर पाते, किसी के वजूद को
न कर पाते सहजता से स्वीकार - फिर कैसा मान सम्मान ?

अपना मन - अपना मान सम्मान अपना सामान है।

207

किसी की बोली से, मन का शीशा तड़कता है
सोच ले हर कोई सब के हृदय में
किसी बात का उतरना एक जैसा होता है
बोली मोम रहे - पत्थर बनाना अच्छा नहीं होता है

अच्छी बोली सबको अच्छी लगती है उसके विपरीत खराब बोली सबको खराब ही लगेंगी ..... उसको कड़वी तासीर सबके लिए कड़वी ही होगी इतनी सी बात समझ में आ जाए तो बोली का पत्थर कभी किसी दूसरे का सीना चाक ..... चाक न कर पाये।

पर अभी तक तो हम नहीं समझे देखते कब समझते हैं ?

गुजरा जमाना
जीना जिलाना
पनघट से पानी
गीली लकड़ी सुलगाना
रोटी पकाना
अपने बरामदे पे छत्ते से निकला
मधु के साथ खाना
अंगीठी के ईद-गिर्द
हाथ-पैर गर्म करना,
दिन भर की बातें पूछना
अपनी कहना .....
बेफ्रिक - बोझिल आँखें होते ही
मिलजुल कर सो जाना,
पौ फटते ही नींद निकल जाती थी दूर .....
किसी ने चना भिगोया था,
रहमत अपने घर का बना
गूड़ दे गया था,
गूड़ चना-चबा कर,
अंजूरी दो अंजूरी
कुएँ का पानी पीकर
आज की रोटी के इन्तजाम में निकल जाना,
सब कुछ बदला
जीवन भी मशीन हुआ,
रोटी के लिए होटल - दूकान ही मकान हुआ,
शाम में घर कौन बैठे ? चौक-चौराहे का ही इन्सान हुआ
भला हो सरकार का
इसी आधुनिकता के कारण
सबके लिए सब आसान हुआ
पर यह कैसा विकास, जब भावशून्य इन्सान हुआ ?
विकास की गति देख कर लगता है हम अविकसित ही अच्छे थे .....

209

छत है, चौबारा है, दरो - दीवार है।
खाना है, कपड़ा है, किताबें हैं,
गाना है, कहने को सुख से जीने का
सब साधन सजा, सुहाना है
पर कोई वाक्य बनाना
सुनना-सुनाना मना है
अन्तहीन प्रतीक्षा - बस प्रतीक्षा
फिर भी प्रकट करना नहीं है-
आखिर यह क्या ? कौन सी जगह है ?
महानगर का एक घर है
देर रात लोग आते हैं,
जब घर में प्रतीक्षारत लोग सो जाते हैं
सुबह ..... होते ही फिर परिन्दों सा उड़ जाते हैं
प्रतीक्षारत कैदी सा - घर में रहनेवाले
फिर अपने कैदखाने में खो जाते हैं
यही महानगर का जीवन है
मृगतृष्णा पाले लोग यहाँ सिर्फ साँसें
गिनते - गिनते ..... अजनबी होते - होते
अकेले - मौन .....
सचमुच मौन हो जाते हैं

गाँव से शहर की ओर आकर्षण की डोर खींचती है, तो व्यक्ति उस ओर मुखातिब हो ही जाता है- आधी सदी से यह डोर गाँव घर खाली कर नगर को महानगर में तब्दील कर दिया है। गाँव वाली पहचान - सड़कें उबड़-खाबड़ रास्ते - छोटे घर मकान छूट गए, और मृगतृष्णा से शहर में अजनबी - मौन अपनी पहचान कि मैं कौन ? सुबह से रात ठोकर खाते-अपने आप से बात की फुर्सत नहीं - मौन होते जा रहे हैं - एक दिन तो मौन होने की घड़ी आ ही जाएगी।

210

भाग्य को भाग देते रहने के बाद
भाग - फल शून्य आये
तो भाग देना, बन्द करना चाहिए
भाग्य के सामने
अपने भाव का प्रदर्शन
करके .....
घटाव ही किसी-किसी की नियति है
भाग्य के सामने अपने
अच्छे भावों को कभी नहीं
प्रदर्शित करे
एक तरह से एक तरफा
अच्छी सोच
अच्छा व्यवहार
बात - विचार
मूर्ख महामूर्ख होने की निशानी है
इसलिए अपने मन में
इसे छुपाए रखिए।

भाग को जब भागफल शून्य मिले तो समझना चाहिए भाग्य में ..... कुछ नहीं है- आपकी समझदारी - सच्चाई ईमानदारी ..... अच्छी सोच, सब खाई में, आप अपने मन के साथ मरिए या जीने की कोशिश कीजिए। अपकी कोई ..... कोशिश के सामने नहीं चलने वाली।

211

खुद के मित्र खुद बनने में
बेहद सुख हैं
न अमृत का जिम्मेदार कोई
न हलाहल का डर

अपने मन आँगन में
अकेले - निर्भय जीवन

खुद स्वाभिमानी बनकर जीने से अच्छा कुछ भी नहीं - उसमें एक निर्भयता भी है।

212

अपनी जिम्मेवारियों
का भार उठाकर
अपने-आप में आ जाता है प्यार
स्वयं के प्रति मन झुकता है
प्रकट करता है आभार

किसी अन्य के द्वारा जब किसी जिम्मेवारी को पूर्ण कराया जाता है, या कोई कर देता है तो भी - उस आनन्द का प्रस्फुटन नहीं होता है- जो अपनी जिम्मेवारियों को निभाने के बाद स्वयं के प्रति हिम्मत - उमंग - का आभास होता है और मन अपने मन को आभार प्रगट कर झुकता है।

213

कभी बिना सोचे-समझे - बिना प्रयास
बड़ी-बड़ी बातें समान हो जाती हैं
कभी - कभी एक छोटी सी सोच भी
दिन - महीने - सालों में खो जाती है
प्रकृति - मनुष्य से करता है यह मजाक
आखिर क्यों ..... बात समझ में नहीं आती है

कुछ चाहत-कुछ बातें बड़ी जल्दी पूरी हो जाती हैं और कुछ थका डालती हैं तो प्रश्न उभरता ही है- क्या इसके सिवा कुछ और तकदीर में हैं ?

214

किसी के दुःख का कारण बनना पाप है
पर यह अभिशाप सबके आसपास रहता है

कभी-न-कभी कहीं-न-कहीं किसी-न-किसी का
किसी-न-किसी कारण से, सामने वाले का दिल दुखता है

मानव मन, मानव व्यवहार, कभी न चाहते हुए भी यन्त्रवत या आदतन या किसी कारणवश किसी-न-किसी का मन दुखा ही देता है- यह मनुष्य के साथ अभिशाप सा चलता है, इसलिए उससे बचकर रहे, किसी का दिल दुखाना महापाप है उसके प्रति सजग रहना चाहिए।

215

गुड़िया खेलने के उम्र में दुल्हन
बना दिया
मेरे सारे ख्वाबों को कफन
पहना दिया
आप तो मात्र जन्मदाता थे मेरे
खुद को कैसे ? क्यों ?
मेरा भाग्य विधाता बना लिया।

जन्म देने को कोई आग्रह नहीं करता ..... पर हम जन्म देते हैं, और अगर उस जन्माये अंश के भाग्य विधाता बनने की कोशिश की जाती है तो प्रश्न उठता है।

1

जीवन से मृत्यु तक
स्वधर्म ही,
चेतन अचेतन में
धड़कन बन धड़कता है
इसलिए सचेत रहना चाहिए,
नहीं हो जाए भूल से भी
इसकी मान प्रतिष्ठा भंग
उसकी गरिमा ही साथ जाएगी
अन्त में आपके संग

जीवन धर्म माने, तो सबकुछ न माने तो कुछ भी नहीं, पर समझदारी उसे ही कहेंगे कि हम चेतन - अचेतन में भी, इतने सचेत अवश्य रहे, कि जीवन का मान बना

रहे, सम्मान से खुद भी हृदय धड़के, और दूसरों के धड़कन की भी गरिमा हमसें अपमानित न हों - बस यही सज्जनता ही हम सबके बाद भी रह जाएगी।

2

किसी काम के होने का,
असंभव में संभव का आभास,
असाध्य में साध्य,
देखने से पूर्व
अपने विश्वास पर विश्वास रखें हम
यह आत्मविश्वास ही बता रहा है
नहीं हैं आप किससे कम

साध्य के सधने में - और भी कुछ का हाथ है, पर सबसे ज्यादा हमारे आत्मविश्वास का ही उसमें अस्तित्व रह जाता है।

3

किसी के खुशियों का कारण
बनके देखो तो,
पाँव के काँटे निकाल के देखो तो
जख़्म का मरहम बनके देखो तो
भँवर सें खींचकर, तट पर लाकर देखो तो,
अब इन्द्रधनुष देखने की क्या जरूरत।

हम सब वक़्त के दास हैं- किसी बात के लिए, वक्त नही है, किसी के लिए यहाँ, कहाँ से वक्त लाएँगे ? पर एक बार दूसरों को खुशी दे के देखो - सात रंग उसके चेहरे पर नजर आ जाएगा - सच में इन्द्रधनुष की कसम।

4

माँ भूल जाती है
बच्चों की बड़ी से बड़ी गलतियाँ-नादानियाँ
पर बच्चे सदा याद रखते हैं
उनके ही हित में बोली गईं बातें
और गुस्से की कहानियाँ,

माँ को दिखता है अंधेरे में भी
सोये - जागे में भी
बच्चों के चेहरों पे कोई शिकन
संघर्ष - परेशानियाँ
पाँव के छालों में
बन जाती है जिनकी हथेली मरहम
उनकी ही कहीं नहीं देखते,
ये बच्चे, कोई कुर्बानियाँ
संविधान पढ़ बच्चे हो गए होशियार
माँ रह गई – अनपढ़ और गंवार

माँ - नादानियाँ - कुर्बानियाँ -' संघर्ष 'ये सब बड़े पुराने अल्फाज़ हैं मत बोलो कि तुमने क्या किया ? मत सोचो कि तुमने क्या सहा ? हिम्मत है तो नारा लगाओ 'दुनिया की माँओं एक हो जाओ' वरना बच्चों की उँगली में कठपुतली बन जाओ।

216

सूर्योदय से पूर्व
नहाना ..... कुएँ के पास थर्राते हुए
तिलवा - लाई सें महकते आँगन में
तिल की झकरी के आग के इर्द-गिर्द
चावल - गुड़ - तिल का प्रसाद
बड़ों से ग्रहण - खाने से पूर्व
वहन का शपथ खाना
हथेली में भरे - तिलवे - लाई
फिर भी हथेली सेंकना
याद आ रहा है, दादी का घर
अपना घर - कमराँव
वो बड़गद की छाँव
बड़ा दरवाजा खेत-खलिहान
धूप का पौधों पे खिला-खिला बिखरा नजारा
जाने क्यों आज लगता है
बड़े न होते, तो कायम रहता बचपन हमारा

217

तन का कम
मन का खेल ज्यादा है
वजीर कहीं
पर मन प्यादा का प्यादा है

तन तो मन का गुलाम है
फिर भी भले, या बुरे के लिए
इस तन से ही सवाल है
शतरंज के बिसात पे
दौड़ती दिखती उँगलियाँ
यह सारा खेल
शह या मात
इसके पीछे मात्र मन का कमाल है

218

प्रणय बंधन की डोर
कभी - कभी पाँव की
जंजीर साबित होती है
इसी में बंध
दम तोड़ता है
स्वछन्द जीवन और तकदीर

219

दूर हूँ
फिर भी तेरा आईना हूँ
जिसमें देख सकती है तू अपने-आप को
नींव से दूर परछाईं भी
दिखा देगी ..... तुझे अपनी सच्ची तस्वीर

220

यकीन होगा किसे
जिस मिट्टी और जिस साँचे में वो ढले हैं
जब रक्त तो रक्त जब दूध तो दूध
किसी के गोद में ही वो पले - बढ़े हैं
पहली उड़ान का हकदार जमीन पर है
ऐरों-गैरों की हथेलियाँ आकाश पे हैं।

हर पंक्तियाँ उदास हैं - बहुत कुछ कह रही हैं विश्वास ही नहीं हो रहा जीवन की छोटी-छोटी बातों को धरे जिन्दगी को धैर्य देती रहती है।

221

मैं वटवृक्ष होना चाहती थी
तुमने पहचाना नहीं
अपने स्वार्थ में अंधे होकर
तुमने जड़ समेत उखाड़ दिया
फिर ..... किस कारण
उम्मीद लगाई मुझ से,
कि सुख में शीतल छाया बन
छाँह दूँगी ?
दुःख की बेला में पीठ पे
धैर्य का हाथ दूँगी–
जो वटवृक्ष उखाड़ते हैं
वरदहस्त से बंचित रह जाते हैं

जाने क्यों हम जो होना चाहते हैं वह कभी-कभी किसी की साजिश के कारण हो नहीं पाते - कभी-कभी साजिशकर्ता अपनी करनी पर ध्यान नहीं देकर बस एकतरफा इल्जाम गढ़ देता है कि ..... हम नाकाबिल थे।

222

ख्वाब गुब्बारे की तरह है
ज्यादा हवा सें गुब्बारा फटता है
ख्वाब भी अति हुआ
समझो क्षति हुआ

जिन्दगी को सपने चाहिए - बिना सपने के व्यक्ति निराशा में डूब जाएगा, पर परेशानी यहाँ भी है बुद्ध का मध्यम मार्ग ..... अति हर जगह विध्वंसकारी है ।

223

किसी ने कहा था–
'सजगता - सहजता के साथ
स्थिरता बेहद जरूरी है'
सोचते-सोचते लगा
सच में एकदम सही है ।
स्थिरता ही तो लाएगी
आपके क्षमता को बाहर
और .....
सफलता आएगी थामने
खुद-ब-खुद दामन

अभी जो दौर है उसमें कुछ कमी हो, तो इसके लिए हलचल हर जगह पर्याप्त है । इसी के कारण शारीरिक-मानसिक स्थिति बिगड़ती जा रही है- व्यक्ति को इस पर सोचना चाहिए-

यदि स्थिरता को अपना कर, कदम बढ़ाया जाए, तो सफलता ..... खुद व खुद दौड़ी आएगी ।

224

कमरे में उजाला हो जाए
खिड़की खुद खोलनी होगी

चाहिए क्या ? कुछ ? कोई पूछेगा नहीं
अपने लिए - अपनी बोल - आप ही बोलनी होगी,

1

उसे पहचानने में वक्त लगा
यह इल्ज़ाम खुद दिल पे मत लेना,
दिमाग और आँखों को दोष देना
जिसका हुआ था - उससे, अनेक बार सामना

2

न किसी से प्यार है
न इनकार ही है
तटस्थ रहना भी
स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है

3

रात की तन्हाइयों में
मुमताज के संग
ये परिन्दे
मायूष होते होंगे
प्रेम के उस पर्वत के
इर्द-गिर्द
न जाने कितने
चेहरे उदास होते होंगे

4

गुजर रही है गुजर जाएगी
सबकी जीवन कश्ती
हर युग के पुरूरवा की यही हस्ती
राम को मरना पड़ा, सरयू के आगोश में
कृष्ण मारे गये धोखे से, वन प्रदेश में
याद करो ये वही थे
धनुर्धर
गोवर्धनधारी

वंशीधर जो प्यार से पुकारे गये
सच्चाई की राह चल कर ही
हरिश्चन्द्र लाशों के चौबारे गये
इसलिए सब भूल
कीचड़ है कमल बन खिलें
अपने मन को दे के लगाम
करते रहे मौन काम - काम - काम
सबका सूरज उगता है,
तो डूबता भी है
जीवन मरण के बीच
यही सब कुछ भी होता है

जीवन में खास लोगों का जीवन आकर्षक लगता है उनके जिन्दगी सें प्रेरणा मिलती है ..... यानि कुछ ही लोग खास होते हैं बाकी आम।

पर हकीकत है ..... न कोई खास, न कोई आम, जैसे सूरज उगता-डूबता है यह नियति सबके साथ है। वक्त के साथ उभरता, वक्त के साथ मिटता है, सबकी जिन्दगी का बस यही हकीकत है।

225

दूसरो के गुणों-
अवगुणों के अन्वेषण से
लाख गुना बेहतर होगा
अपने एक अवगुण तलाशें
और दूर करने के प्रयास करें-
काश ! ऐसा ही होता, तो कितना अच्छा
होता - बहुत अच्छा होता।
अपने को जानना बड़ी बात
है ..... प्रयास तो करें।
जिससे प्रेम हो सच्चा
उसके हथेली की गर्माहट,
साँसों की महक से,

अनजान रहना-
बस जानना उसकी
आँखों को - पलकों को
उसमें दिखे कभी - बादल तो
उन टपकते बूँदों को
अपने रूमाल में सँभाल लेना
यकीन करो ..... या नहीं
भविष्य में यही हो जाएगा
गीता और रामायण

प्रेम में मन की नजदिकियों का ज्यादा अर्थ है ..... स्पर्श भी करना है तो एक दूसरे के आँसुओं को सँभालकर यादगार बनाने में, ... जो आनन्द है, पवित्रता है - वह गीता और रामायण से कम नहीं।

226

अपने तन - मन से
आश रखो
अपने निर्णय पर विश्वास रखो
दूसरों से लाख मिले
आश्वासन
उस पर थोड़ा - बहुत ही
आश्वस्त रहो

ऐसा नही है कि दूसरे ..... सहयोगी नहीं होते- पर अपने तन - मन से जो निर्णय ..... या इसका आश्वासन जो होता है तो कमाल होता है

227

समय के साथ समय खेलना है
सूरज को भी बादल छुपा लेता है

कुछ लोगों को अपनी सफलता का
ऐसा नशा होता है
चौबीस घंटे ? जी नहीं
चौबीस वर्षों में भी नहीं उतरता है
इसका असर उसके जीवन पर पड़ता है
दृष्टिदोष, कर्णदोष, मस्तिष्कदोष
कभी-न-कभी उसे चकनाचूर करता है

समय के आँख मिचौली का सबको आभास नहीं होता है ..... वह अपनी सफलता के सिवा कुछ देख नहीं पाता ..... और एक न एक दिन ऐसे को ही झटका खाना पड़ता है ।

228

किसी ने सच ही कहा होगा
'यदि दैनिक जीवन में
अपनी प्राथमिकताएँ नहीं हो,
तो उस स्थान पर
दूसरों की प्राथमिकताएँ
स्थान ग्रहण करती हैं
उसे पढ़कर लग रहा है
कोई बेहद संजीदा हो
समझा रहा है
अपने लिए - अपने पास
महत्त्वपूर्ण लक्ष्य, होने ही चाहिए

किसी-न-किसी से कभी किसी प्रसंग में कहा था - सबकी साचों पर ..... सबसे पहले अपने लिए सोचो - यानि यदि स्वयं सबल होंगे, हर तरह से तभी दूसरों की मदद कर पाएँगे ।

229

जब आसपास अनचाहा
परिवेश हो

अनदेखा करके रहे
वरना उसको देखते - सोचते समझते
खो जाएगा अपना वजूद
किसी भी कीमत पर
अपने स्वभाव की बलि
नहीं देना चाहिए

कभी-कभी दूसरों के वर्चस्व में अपना वजूद हिलने लगता है, खो जाता है, और व्यक्ति खत्म सा होने लगता है, इसलिए किसी दूसरे के कारण खुद का वजूद गँवाना अच्छा नहीं है।

230

झूठ चुपके-चुपके
चलता है
सच मचाये चलता शोर ?
नहीं - हरगिज नहीं
झूठ दहाड़ता है
सच छुप कर - दूर कहीं
मुस्कराता है।

झूठ मुखर होकर अपनी बात जताना चाहता है, पर इसके ठीक विपरीत सच ..... मौन कहीं छुपा भी रहता है तो सच है, कि वह सूरज - धरती - चाँद - बादल दिन-रात की तरह ..... अपनी पहचान से निश्चित है, क्योंकि वो है ..... उसे साबित करने की उसे कोई, जरूरत नहीं है। इसलिए चुप उसकी पहचान सी है।

231

टेढ़े - मेढ़े रास्ते
टेढ़े - मेढ़े लोग
शायद इस लिए ही
दोनों चलते एक रास्ते

जो रास्ते टेढ़े हैं ..... वे उन लोगों को जरूर, पसन्द आते हैं ..... जो थोड़ी टेढ़ी चाल में विश्वास करते हैं ..... यानि टेढ़ा को टेढ़ा ..... मिलता है तो ठीक ही होता होगा।

232

जिन्दगी हादसाओं का समन्दर है
तो ? जंगल में भाग जाओ ?
नहीं कभी नहीं ? हौसलों के साथ
इन्हीं गलियों में जी के दिखाओ

233

जिन्दगी के लिए सीधी पटरी
ढूँढ़ना नहीं - कभी नहीं
यह ट्रेन नहीं कि मनचाहे
स्टेशन पर रुक जाएगी

234

कितनी कम होती खुशियों के पलों की तारीखें
कुछ लोग मानते नहीं, उन्हें चाहिए 365 दिनों की खुशियों,

235

आप अच्छे हो लोग बुरा कहे, चलेगा
आप बुरे हो, लोग अच्छा कहें कभी नींद उड़ा देगा

236

लाख बोले कोई, अपने हिस्से का हक
मिलती नहीं चिल्लाओ न जब तक,

237

मन बेबस है कोई दिन में कोई रात में
कोई पलंग पर, कोई तो जमीन पर खर्राटे में है

238

बड़े ? तार खजूर अट्टालिकायें
एक न एक दिन धराशायी होते हैं
हमारी तुम्हारी क्या बिसात ?
हम लोग तो पाँच-छः फीट के होते हैं।

239

कुछ मेहमान आए तो सोने-सुलाने में
परेशान हो जाते हैं
धरती को पूछो, उसको गोद में तो
सारी दुनिया के इन्सान सोते हैं

मन उदास हो तो ..... ये छोटी-छोटी भावनाएँ ..... बड़ी-बड़ी बातें समझ कर ..... हमें हौसला मंद बनाती हैं।

240

मौन होकर भी-
सबसे ज्यादा मन ही बोलता है
उत्तर दो न दो
वह प्रश्न फेंकता रहता है

241

लाख छुपा के करे चालबाजियाँ
खुश होकर किसी को दुःख दे ले
कोई है जो कहीं से

सब देखता रहता है

242

हक नहीं है किसी में गलती निकाले
तो शायद यही होगा
अपनी खूबियों की
आप ही सूची बना लें

243

तमाम उलझे लोग, लोगों से उलझते रहे
जो सुलझे - समझदार थे
सबसे परे ही अकेले
आगे - बढ़ते रहे

244

मिलता जो मजबूत हथेली का सहारा
कदम से कदम मिला, चलने वाला पाँव
कंधे पे होता, किसी बाँहों का आश्वासन
यूँ न बीतती तमाम जिन्दगी होके आवारा

मौन मन तो आँखें मुखर - किसी से कुछ छिपा लो पर एक सबको देख रहा है - सुलझे - सबल लोगों का सहारा मिलने पर ..... बहुत कुछ बिगड़ा भी सँवर जाता है ..... पर कुछ ऐसे हिम्मती भी हैं, अकेले दम भी कठिन राहों में निकलने का हौसला रखते हैं। आवारगी उनकी राह नहीं रोकती।

245

विचारों के बादल को
बरसने दो
उन्हें घोलने दो मटमैली स्याही
समय आने पर पढ़ो

लाल - पीले - हरे - नीले
फूलों की कहानी
कमाल दिखती है
बेमिसाल लिखती है
मटमैली स्याही की लेखनी

मन में सुन्दर भाव - बातें - चिन्तन ..... अच्छाई खराबी ..... जों भी सोच नहीं सकते ऐसे भाव आते जाते रहते हैं ..... क्या मन में आया, थमा गया - यानि विचार का आना अति क्षणभंगूर होता है, हम उसको बुलाते नहीं बस बिना बुलाए मेहमान सा आता है ध्यान दो - दो ..... तब तक भाग भी जाता है। प्रकृति ने मनुष्य को बुद्धिमान बनाकर, उसपर बड़ी कृपा की है ..... भागते विचारों को लिपिबद्धता की जंजीर सें जकड़ने की युक्ति देकर।

स्याही का निर्माण करने की बात, जब पहली बार जिनके दिमाग में आयी होगी वह पल मनुष्य जीवन पर सरस्वती की बड़ी कृपा का पल होगा-
पर हम ध्यान से देखें, धरती की एक सच्चाई बादल बरस कर मिट्टी को गीला करते हैं और जमीन समय के साथ लाल-नीले फूल - फल पौधे ..... न जाने कितने रंग अपनी मटमैली स्याही से लिख देती है ..... मटमैली होकर भी यह स्याह धरती का हर ..... कोना रंगीन कर देती है ..... बेमिसाल है यह लेखनी।

246

सिन्दूर रूठा - रूठी बिन्दी
लगने लगी, हर बात झूठी
वक्त का तिनका उड़ता रहा,
चूमती रही, आँखों के कोरों में
रिसता रहा बूँद - बूँद
कतरा - कतरा खरा मन
सोते - से एक दिन जागा
आशा हिम्मत भरा कोई कदम
पहले सिर उठा, फिर बाहें
न जाने कैसे प्रशस्त होने लगीं
दुर्गम - राहें

किसी ओर से आई
हिम्मत - हौसलों की बयार
पतझड़ बीती - टहनियों में आने लगी बहार
यही तो जिन्दगी है यही है मौसम

जिन्दगी में अकेले हो जाना - गम है ..... टूटन है ..... घूटन है व्यक्त करना कठिन है ।

पर जब हिम्मत का मौसम आ जाता है, तो उसके सामने पतझड़ दूर खड़ा होता है जीवनसाथी को साथी यदि प्रकृति ने रहने नही दिया, तो हिम्मत ही साथी है सहारा है यही जीवन है-

आगे-पीछे तो सबको आना-जाना ही है - हिम्मत के पेड़ों में इस सत्य का फल फलता है ।

247

कमरे में उजाला हो जाए
खिड़की खुद खोलनी होगी-
चाहिए क्या ? कोई नहीं पूछनेवाला
इसके लिए खुद ही बोल बोलनी होगी
कभी - ऐसा ही लगता था
पर अब लगता है
कोई - कोई होता है
किसी - किसी की जिन्दगी में,
सूरज को ही हथेली में लिए
चाँद को आँचल में
और वही होता है
आँखों के गंगाजल से
जीवन के पतझड़ को सींचने के लिए

कभी-कभी अंधेरे में उजाला, जीत में हार, दु:ख में खुशी लेकर नि:स्वार्थ भाव से प्रवेश करता है और तमाम परिदृश्य पर छा जाता है अब आभार भाव प्रकट हो जाता है ।

248

शब्दों के गेंद खेलते रहते हैं
बोली और वर्त्तनी का दायाँ-बायाँ
नाता है आदत है
ठीक है-
पर यदि दूसरे खेमे में
हो जाए गोल तो
गोला - विस्फोट ..... बारूदी धमाका
इसलिए शब्दों से
फूलझड़ी सा खेले
पटाखे ..... कभी - ना बनने दें।

अक्सर अपनी बातों को ऊपर रखने के लिए अजीब - अजीब, डरावने - खतरनाक अप्रिय शब्दों के बम बरसाते हैं कभी नहीं सोचते कि यदि पलटवार हो जाए तो ? कभी ..... कभी नहीं होता कभी-कभी हो जाता है-

इसलिए शब्दों को हमेशा हल्का - फुल्का - काम चलाऊ फूलझड़ी ही रहने दें - बम - पटाखों में शब्दों को तब्दील नहीं करना चाहिए।

249

जिसे नायक समझ रहे हैं
खलनायक भी नहीं हो सकता
हाँ इस धरती के चलते - जीते
भीड़ का एक हिस्सा हो सकता है-

कभी-कभी धोखे में जीरो को हीरो समझने लगते हैं ..... पर वक्त बता देता है कि ..... वह एक गिनती का अंक है बस।

250

अपने से मिलो
अपनों की बातें
परायों से मिलो - धरती - गगन - पाताल

पूरब - पश्चिम - उत्तर - दक्षिण
मिला-जुलाकर - इतनी सी बात है
कुछ भी नहीं खास नहीं
भूख लगे तो खाना - नींद आए सो जाना
खुशी में हँसना - हँसाना
दु:ख में वही रोना - गाना
वाह ! जिन्दगी
तेरे साथ इतनी ही बातों के लिए
इतना ताना - बाना

कभी - कभी जिन्दगी के असलियत पर पल दो पल विचार करने पर बड़ी शांति मिलती है ..... जिन्दगी में ऐसा कुछ खास कहाँ है कि हम सब इसके लिए मरे जा रहे हैं। जन्म-मृत्यु - भूख-प्यास - रोना-गाना - बस इसके लिए इतनी जद्दोजहद ? अरे छोड़ो भी इसे, जिन्दगी ही तो है जैसे जा रही है जाने दो, कोई तनकीद नहीं।

251

सिर्फ उसी के पास, आँख, नाक, कान है
बाकी सब विकलांग है
हर क्षेत्र में सर्वेसर्वा वही
बोली किसी की कोई औकात नहीं
सिर्फ हँसे तो अनार बम फूटे
कहीं पे निशाना - शिकार कहीं
उसके इर्द-गिर्द के संसार को समझना
साधारण इन्सान के लिए मुमकिन नहीं
कहीं पे निगाहें - कहीं निशाना
हर वक्त दूसरो पे उँगली उठाना
उसकी हर बात तब्जों के काबिल
दूसरों की बातों को अपमान हासिल
जाने क्यों कुछ लोग ऐसे होते हैं ?
प्रश्न ही प्रश्न .....

जिन्दगी में अनेक जटिलताएँ हैं उनमें एक जटिलता है व्यक्ति का दुरूह स्वभाव -

कृत्य और सोच ..... इससे वह सीधे - सादे लोगों का जीवन नर्क कर देता है। अपने अहं भाव में वह सबका स्नेह खोता है इसका उसे भान भी नहीं वह बस अपने मान - से महान बना रहता है।

252

कोई तोड़ - मरोड़ दिया है बातों को
जो सीधे - सादे होते हैं
उन्हें सीधा करने में महीनों - साल लगा जाते हैं
वक्त का रोना सब रोता है
अपनी करनी सें ही
सबके वक्त कम होता है
राई के पहाड़
पहाड़ को राई करने के कारण
बहुत कुछ होता है
विद्वान हो कोई
मैथ - फ़िजिक्स, केमिस्ट्री
रटने को तोता रटन हिस्ट्री
छोटी सोच के कारण
बातों की जलेबी
कड़वा करने की सजा पाता है।

दो प्रतिशत लोग ही, प्रश्न एक बार में समझ कर, उत्तर देते हैं बाकी लोग राई को पहाड़-अंधेरे को उजाला कड़वा को मीठा ..... सब गड्मड कर के रख देते हैं। और सब जलेबी-सा हो जाता है, मीठा स्वाद तो है, पर उसकी सारी कड़ियाँ उलझे धागे सा अनसुलझा ही रह जाती हैं।

253

मुझ जानते हो, पहचानते नहीं हो
जानना मैथ है पहचानना साहित्य
मैथ जीवन हो नहीं सकता
साहित्य बिना जीवन समझ में आ नहीं सकता

हृदय हीन लोगो से ..... जब वास्ता पड़ता है तो सारी बुद्धि ..... एकदम जड़ सी हो जाती है कि करे तो क्या करें।

254

नि:शब्द भी हाहाकार भी
किनारा भी मँझधार भी
नफरत - प्यार - तकरार, मनुहार
चुनौती और ललकार यही है जीवन, कभी जीत कभी हार

जीवन में जिल्द की भाँति ..... ये चढ़ी होती हैं ..... जिल्दों को उतारना मत।

255

कितने मधुर सपने, वक्त की रौ में बह गये
सबके सपनों में अपना भी सपना शामिल था,
अब तो ऐसा मन फटा, घर संसार सब छूटा
अच्छा हुआ समझ गये, इस संसार में सब कुछ झूठा

सपने पूरे होते हैं तो कुछ पता नही चलता है पूरे नहीं हों तो, सच्चाई समझ में आती है।

256

उनकी बुराइयों सें लड़ नहीं सकते
बेहतर होगा एक अच्छाई उनमें ढूँढ़िए
वक्त से या बेवक्त सें उसी से हाथ मिलाइये
बर्दाश्त की सीमा पार न हो, तब तक, साथ निभाइए

मन चाहा आदमी ..... न मिलना, हर आदमी की बिडम्बना है ..... और रहना यही आधे - अधूरों के साथ है तो रोने से अच्छा है हँसकर उसकी किसी सच्चाई - अच्छाई का हाथ थाम लें - जब तक हिम्मत जवाब न दे साथ निभाइए।

257

धरती मत बनना
एक सिरे से दूसरे सिरों में
बँटना पड़ेगा
कटना पड़ेगा कठ्टों - एकड़ों में बँटना पड़ेगा
बहना पड़ेगा विभिन्न धाराओं में
कभी बर्फ सा जमना
पिघलना
तो हिमालय बने अड़े रहना भी -
कभी फटना - भूकम्प सा हिलना
कभी अथाह सागर में बिखरना
इसलिए बेहतर है आकाश बनना
दिन में उष्णता बन
रात में शीतलता बन
गर्व करना
देखो ध्यान से
अब-
कटोगे नहीं
बँटोगे नहीं
सबसे बड़ी बात
झुकोगे कभी नहीं

आकाश के पास अनेक सुरक्षा हैं - जब कि धरती माँ के पास अनेक असुरक्षा। इतनी सी ही है ? नहीं ..... नीचे जितना जाएँगे कष्ट पायेंगे ..... ऊँचे ..... सुरक्षित रहेंगे। धरती सी सहनशीलता भी बड़ी बात है पर इसका अं टूटना - कटना - झुकना है ..... ऊँचे रहे तो काट-पीट से बचे रहेंगे .....

258

धरती पास होकर भी करती है पक्षपात
सूरज दूर रहकर भी ..... देता है एक समान साथ

सबसे बहूत दूर रहो - बहूत दूर रहो
पर बरसों बूँदों की तरह - सबके लिए बराबर स्नेह लिए
महलों - झोपड़ियों, पौधों, नदियों, नालों, खेतों - खलिहान
सब पर एक सा स्नेहदान
सबमें समाओ - पत्तियों को हँसाओ
हवाओं की तरह
झपकती पलकों सा
थोड़ी ही देर का खेल सारा है
फिर इतिहास के पन्नों पे
या कभी - भूगोल के चौराहे पर
मूक बन जाएगा
सबका अस्तित्व बेचारा है

धरती अपनी सम्पूर्ण अस्तित्व में अनेकों विरोधाभास रखती है । धरती कही समतल-कहीं उबड़ खबड़, कहीं चिकनी कहीं बलुआही ..... कहीं नदी - नाले - पेड़ - पहाड़ कहीं धान - गेहूँ - कहीं ज्वार ..... यानि हर हालत में धरती में कहीं न कहीं पंक्षपात दिखता है । इसके विपरीत सूरज - चाँद - हवा - बरसात - पक्षपात नहीं करते वे सबको एक सी रोशनी - चाँदनी अपनी शीतलता ..... हवा अपनी बयार, बरसात अपनी बूँदें सब पे एक सा बरसाती हैं । ..... सबके प्रति एक ही स्नेह ..... यह अपने-आप में सुखद हैं यानि पास रह कर भी कोई स्वाभाविक स्नेह दे नहीं पाता और कोई दूर रह कर भी ..... स्नेहदान एक समान करता रहता है ..... इसलिए पास - दूरी कोई अर्थ नहीं रखते, अर्थ रखता है व्यक्ति का स्वभाव - स्नेह जो सबके लिए बराबर रखता है ।

259

जितनी जल्दी हो
तकदीर के तकरार सें सुलह हो जाए
आज - अभी - यही एक पल मौका है ।
फिर न जाने कोई कहाँ जाए ?

जब वक्त मिलता है उसकी तासीर से हम अनजान जाने कहाँ तकदीर के चक्कर में रहते हैं .....

260

ऊपर वाले को किस नोटिस के तहत
कटघरे में लाएँगे
नीचे वाले भी बड़ी मुश्किल से
कटघरे में आ पाएँगे

हर बात में ईश्वर को दोष नहीं देना चाहिए, क्योंकि उन्हें कहाँ लाकर सवाल करेंगे ?

261

झुकने में सजदे का भाव हो जाता है
अड़े रहो - खड़े रहो
नहीं दिखें ..... पर - कहीं-न-कहीं
अहंकार भाव होता है

अकड़ भी अहंकार का भाई-बंधु है - सजदा विनम्रता एक-दूसरे की सखी है।

262

कितना जरूरी है एक मनचाहे चेहरे पे
उन्मुक्त हँसी आपके लिए हो
करार दे गुनहगार कोई
कोई एक बेगुनाही का विश्वास लिए आपके लिए हो

हर आदमी की दिली ख्वाहिश होती है, कि कोई हो जो उसे पसन्द करे उन्मुक्त हँसी से स्वागत करे ..... और विश्वास के पराकाष्ठा से परे होकर विश्वास करे सही समझे - पूरी दुनिया एक तरफ और उसका विश्वास एक तरफ ..... जो आपकी बेगूनाही ..... के सिवा अपने बारे में कुछ और सोच ही नहीं सकता - ऐसी प्यारी विश्वासी रिश्तों की सबको जरूरत है, पर मिलता किसी-किसी को है।

263

कभी-कभी सूरज भी
चाँदी सा चमक जाता है
चाँद भी - कभी
सोने-सा दमक दिखाता है
ऊपर वाले का असर कहे
या नकल करने की आदत है
तेवर बदलने की यह अदा या कला
हम लोगों ने इन्हीं से तो नहीं सीखा

प्रकृति के बदलाव में भी एक तेवर है ..... पल - पल बदलना - कभी - कभी लगता है हम सब में गिरगिट का स्वभाव है वह प्रकृति की देन भी हो सकती है या हमारी नकल की कला।

264

यहाँ से वहाँ
वहाँ से यहाँ करने में,
मेरे हिस्से की साँसें गुजर गईं
लगता है एक टेंट की कहानी सी-
मेरी जिन्दगी गुजर गई
धूप बिन जाड़े की सुबह - दोपहर -
छत बिन उमस, भरी शामें गुजर गईं,
मुझे छुए बिना शाम की सुहानी हवा
और देर रात मुझे नहाए बिना, चाँदनी गुजर गई

प्रकृति के अंश होकर भी जिन्दगी भर प्रकृति से दूर रहना हमारी नियति है - वो आर्थिक हो - भौगोलिक हो या मानसिक हो ..... कभी-न-कभी इसका पछतावा होता ही है, हम क्या होना चाहते थे और क्या होकर रह गये ? जीवन की प्रक्रिया हमें जीवन के स्वभाविक रंग में रँगने नहीं देती - हम चाहते कुछ है जिन्दगी करवाती कुछ और है।

सुबह की धूप हमारे छत - बरामदे पर इठलाती है हम उस वक्त सोये हैं - शाम की चम्पई धूप, हवा के साथ मुँडेर पर इठलाती रहती है ..... हम घर आने के लिए किसी सड़क पर जाम में फँसे रहते हैं। जिन्दगी में हमारे आस-पास इतनी कृत्रिम रोशनी का जाल बुन रखा है कि हम उसी में उलझे रहते हैं न हमें हँसिए सा चाँद दिखता है ..... द्वितीया का, न रोटी सा पूर्णिमा का। - छत पर जाना सर उठाना, बड़ा कठिन काम है। बाकी काम जरूरी है- पर चाँदनी रात - अषाढ़ के बादल बसन्ती हवा शाम की सूरमई चम्पई धूप ..... यानि प्राकृतिक कुछ भी हमारे कामों के लिस्ट में नहीं आते - और इसलिए उनसे दूर होते चले जा रहे हैं- पता नहीं यह प्रकृति ये हवाएँ - पेड़, पौधे धूप - चाँदनी हमें फिर मिले न मिले, मनूष्य जन्म मिले न मिले, इसलिए अपने जरूरी कामों में, इसे भी शामिल क्यों नहीं करते ?

265

झूठ चिल्लाता क्यों हैं ?
वह भी जोर - जोर से
सच भाग खड़ा क्यों होता है
क्या झूठ के साये से सच डरता है ?
नहीं - छुपकर देखता है दूर से
सच अपने रौशन रंग को
झूठ के साये ..... से बचाये फिरता है खुद को

सूरज कभी नहीं कहता मैं आ गया - चाँद कभी नहीं कहता चाँदनी छा गई - दोनों सत्य है एक-दूसरे से अलग रंग रूप अस्तित्व ..... वही हाल झूठ - सच का है सत्य सिमटा - सिकुड़ा - दबा - छुपा भी दुनिया का बेशकीमती - एकलौता धरोहर हैं - और झूठ से निकृष्ट शायद तुलना लायक कुछ है भी नहीं - इसलिए दोनों कभी नहीं मिलते हैं झूठ के चिल्लाने से सत्य भागता है उसकी परछाईं भी उसे कबूल नहीं।

266

तरस आता है, समय से खेलने वालों पर
जिन सवालों का कोई हल न हो शायद,
ऐसे बाल के खाल निकालने वालों पर,
न जीत की बात, न हार की
फिर भी शतरंज बिछाने वालों पर
क्या किनारा, क्या मँझधार
क्या नफरत, क्या प्यार
खुली आँखों का खेल सारा
फिर ये जीवन न हमारा - न तुम्हारा
जीवन हर शै को लेकर, बहने वाली एक धारा

खुली आँखों का खेल सारा है- फिर जीत-हार सच-झूठ के भौतिकता में जीवन को व्यक्ति खोता जा रहा है- जीवन को उसकी वास्तविकता से दूर ले जाकर ..... हम सब जीत नहीं रहें - हर पल एक खूबसूरत पल खो रहे हैं हमारी नादानी, हम सबकी अपनी परेशानी है।

267

ईख की कुछ बून्दों से
मिट्टी की महानता से
प्रकृति की हरियाली से
गौ माता के घृत - दूध से
निर्मित प्रेम कहे - स्नेह कहे
या किसी जन्म का अनजाना
बाकी - बकाया नाता
इसलिए तो इतनी अजीबो-गरीब
स्थिति में डाल रखा था विधाता
परेशान करना नहीं दुबारा
पर सच है मन से चाहते हैं हम सभी
कोई हादसा हो जाए दुबारा

ताकि नमन में नमस्ते करने आ जाए
हार्डवेयरों से घिरे माहौल में
कुछ सॉफ्टवेयर भी खेले अपना पाशा

जहाँ हार्डवेयर स्थित होती है, वहां सॉफ्टवेयर की संभावना नहीं होती होगी ऐसा मानते हैं, पर सच्चाई विपरीत भी हो जाती है। सॉफ्टवेयर सा मन सबके पास होता है- मिट्टी की खुशबू लिये - ईख के ताजे रस का मिठास लिये - गौ दूध - घृत सा पवित्र और जब उसें गंगा की गहराई और मन की पवित्रता का भान हो जाए, तो ..... हार्डवेयर हाथ मलता रह जाता है।

268

आपसे प्यार है
इसलिए करीब है,
आपको यकीन है ?
बिन्दी की बन्दिनी
रस्म की ओढ़नी
रिवाज़ की पायल
हो सकता है
अभिनय की मशीन हो।

कोई किसी का है, यह स्वाभाविक और सामाजिक भी हो सकता है।

269

आदर किसे कहते हैं
सम्मान क्या होता है ?
किसी ने बताया
अपमान - अनादर सहते - सहते
सम्मान का अर्थ
डिक्शनरी में भी देखो
समझ में नहीं आता है

जब किसी चीज की अंत हो जाती है तो उसको तासीर गुम जाती है यही सच है अपमान सहन की आदत, मान को खत्म कर देती है।

270

किसी को कोई बेकसूर क्यों सताता है
कुछ लोगों को बिन पीये ही, नशा और मजा आता है
साँप मर जाता है बिन लाठी के, शोर नहीं होता है
ऐसे लोगों को सिर्फ अपने से प्यार - प्रदर्शन से सरोकार होता है

जब नजर आये - खराबी-ही-खराबी
तो संयम से ढूँढ़नी चाहिए
कहीं-न-कहीं बुराइयों के ढेर में ही छुपी होती है
अच्छाइयों की एक नन्हीं चिनगारी

सबके हाथ में आरी होती है
काटने की वर्षों सें तैयारी होती है
परीक्षा फल - या प्रतीक्षा फल-सा मौका होता है
हर्षाने वाला वो मधुर पल होता है

कुछ का स्वभाव - चरित्र - विचार इतना उलझा होता है कि व्यक्ति उसके चक्कर में फँसा तो मौत।

271

कहीं पढ़ी थी वर्षों पहले
"कोई सवाल हो, हरगिज जवाब मत देना
किसी को अपने गमों का हिसाब मत देना"
अर्थ अब समझी - पछता रही हूँ
अपने गमों का उपहास क्यों कराती रही

272

आदमी जब खुद को देखता नहीं, जानता नहीं
दूसरों को क्या देखेगा - जानेगा ?
जो दूसरों को जानने का दावा करेगा
एक दिन पछताएगा - बेमौत मारा जाएगा

273

सबके लिए कुछ न कुछ है प्रकृति के पास
किसी के हिस्से की धूप चोरी सें, खिड़की से उतरे
या सीना जोरी से खुले आँगन में
रोशन तो होगा उसी का मन - आई है जिसके पास

274

खुदा भी दु:ख दूर नहीं करता, तब तक, याद रखना
अपने दु:ख के साथ, खुद आदमी नहीं लड़ता जब तक,
जीवन जंग के भीड़ में हर आदमी, अकेला होता है
रोकर या हँसकर इस करवट या उस करवट, हर का अकेला सबेरा होता है

275

मन का हो तो अच्छा, न हो तो प्यादा अच्छा
किसी ने कही, इतनी अच्छी बात
अच्छा होना किसी के सहयोग से ही होता है
ईश्वर हो या इन्सान - किसी के एहसान से दबना अच्छा नहीं होता है

इन पंक्तियों की सच्चाई ..... के सामने बोलती बन्द है ..... मनन करे मौन।

276

काजल की कोठरी है
यह जीवन

बच के निकलना नामुमकिन
ऐसे में कौन सी
तनकीद काम आएगी ?
जो कोरे कागज सा
जीवन के पार ले जाएगी

बस एक तनकीद है जो ज्यादा न सही थोड़ा ही सही कालिख से बचाएगी - हम आदमी हैं सबको आदमी समझें बस .....

277

सपने भी सहारे होते हैं
बेशक हमारे होते हैं
दिन जिस सच से घबड़ाता है
वो निडर रात में - आँखों में उतर आता है

278

ये जो रिश्ते कहलाते हैं
रक्त - मतलब का सारा किस्सा है
प्रश्न कौंधता है मन में
संसार है यहाँ कौन किसी का होता है ?

279

तराशने से तस्वीर ऐसी या वैसी बन ही जाती है
मन पसन्द तस्वीर गढ़ने में
न जाने कितने ब्रश - कूँची हाथ में लिए
बरसों गुजर जाती है

280

जो पसन्द नहीं हो चेहरे
उन्हें दिल की दीवाल से उतार दो
पसन्द का चेहरा मिलना मुश्किल है
नामुमकिन नहीं - कुछ तो खुद को इन्तजार दो

281

संख्या कोई भी हो बढ़े तो अच्छा
इसलिए अच्छों को बुरा करने की साजिश चलती है
किसी विधि अच्छे को बुरा करके
बुराई अपनी बढ़ती संख्या पे मचलती है

सपने भी सहलाते हैं गहरी निद्रा में ले जाते हैं। जिन रिश्तों के नाम जिन्दगी फना हो जाती है तस्वीर गढ़ना बड़ी बात नहीं है- पर मन पसन्द तस्वीर गढ़ना ही रवि वर्मा बना जाती है। कभी - कभी पसन्द के चेहरे के लिए परेशान हो जाते हैं, पर मिलना होता है तो मिलता ही है ..... अच्छे को बुरा साबित करना दुनिया की पुरानी आदत है।

282

कच्चा धागा वह भी
कपास का
बिना जोर भी टूट
जाने वाला था
परिश्रम और खर्च
सब बेकार गया
वाकया तो एक ही
वाक्य में खत्म हो जाने वाला था
'मत रहो मेरे जीवन में'
इतने बहाने, कसीदे - झूठ - सच इल्ज़ाम

की कोई जरूरत नहीं थी
प्रदर्शन करते - करते वे थक गये
सहते - सहते सहनेवाले रो धो लेते हैं,
पर हैं तो गुनाहगार हो कोई
एक गायब एक सहने को खड़ा
जन्म देने की सजा मिलनी चाहिए
मोम सा जलने से कुछ नहीं होगा
लोहे की भट्टी में जा छुपना चाहिए

जो रिश्ते जितने नजदीकी होते ..... हैं वे कपास के बने होते हैं ....., इसलिए जरा सी असावधानी हुई कि इनका टूटना तय है ..... इस लिए इसको ऐसा सम्मान देना चाहिए कि टूटे नहीं, पर हम सब समझदार नहीं है ..... बचा नहीं पाते - इसलिए इन रिश्तों से सजा पाते हैं सजा देते हैं।

283

माता पिता अंधे थे
तुम तो नहीं,
तुम धोखा खाते रहे
जानते थे, शायद या नहीं भी।
पर जानते हो
चल दिये वन
तुम्हारा कदम कृत्य
जन्मदाता के लिए प्रति
निर्दोष पवित्र-जीवन
सदा स्मरणीय पूजनीय
पर जब
बाण लगता है दशरथ का,
प्रकृति काँप जाती है
अचंभित दसों दिशाएँ आह ! आह !
श्रवण सुपुत्र का ऐसा अन्त ?

पर ध्यान दो
ज्ञान वान - विद्वान होकर भी
आँख रहते - वातावरण के अनजान
इसकी 'आह' थी-
तुम्हारे ही ईर्द-गिर्द छुपी
सही मौके तलाश में उसे तो निकलनी ही थी,
दृष्टव्य रहना था, सिर्फ श्रव्य रह गये
एक को इस्तेमाल न करने की
खोए रहने की, सजा मिलनी ही थी
कुछ भी हो,
श्रवण का मिसाल दूसरा नहीं है
सुपुत्र की परिभाषा बन
धरती के अंत तक
धड़कते धरती माँ ही नहीं, हर माँ के दिल में

वातावरण के प्रति सचेत न रहना भी एक अपराध है, प्रकृति ने इसकी भी सजा तय कर रखी है।

284

सुख के दिन हो
तो भी
दु:ख का एक कलेण्डर,
घर के किसी कोने में
अदना सा
टँगे ही रहने देना-

1 जनवरी से 31 दिसम्बर तक महत्त्वपूर्ण - बस कलेण्डर का इतना ही जीवन ? नहीं ..... 365 दिनों के दरम्यान हर किसी के लिए सुख-दु:ख - अपमान - मान ..... और भी जाने क्या ? इनमें छपा रहता है यह साल अच्छा वो आगे का और भी अच्छा। नहीं किसी बात सें कोई मतलब नहीं, बस सुख-दु:ख का सालाना दस्तावेज ..... सँभाल के रखना।

285

सपने किसी और के थे
हक - राय - सच्चाई पर
सवाल किसी और ने उठा रखा था
ऐसे प्रसंग बहुत बार .....
यदा-कदा यहाँ-वहाँ
दिखते हैं
लोग अपने सपनों से परे
दूसरों के सपनों पर
किस हक से हक जताते हैं ?

आदमी की विडम्बना है, कि एक बोलता है तो सामने वाला सुनता नहीं, यदि सुनता है तो ..... भाव बिना समझे राय देने लगता है ..... और तब दूसरे को एहसास होता है। अपने मन की बात हो या कोई सपनों की गठरी कभी किसी के सामने न खोलें। मजाक उड़ता है, गलत राय सामने रखता है और ..... सब पर गौर करें तो अन्त में साबित कर दिया जाता है, आप गलत - आपके सपने गलत ..... अब आप न अपने, न उनके यानि प्रश्न अनुत्तरित प्रश्न।

286

सूरज - चाँद की तरह
सच्चाई, आकाश में जाकर
छुप जाए
तो भी टूटे तारे सा
धरती की गोद में जरूर आएगी
यह ऐसी शय है
लाख चादरों से ढँको
वह एक न एक दिन
खुद व खुद नंगी हो जाएगी

कमाल है यदि 'सच' शब्द ..... लाख छुपे पर उसका छुपना अस्थायी ही होता है।

287

काश ऐसा होता
बच्चे-बच्चे ही रहते
बड़े नहीं होते
नन्हे परिन्दों की भाँति
घोसलों में बाट जोहते
माँ जो दाना दूलका लाती
डैनों में सबको समेट,
चोंच से सबको खिलाती
पर ऐसा कहाँ होता है
उनके पर, निकलते ही
सब कुछ उलट-पलट जाता है
पर ही, गंगाजल - तुलसीदल जैसे होते हैं
परन्तु इन रिश्तों को परे करता चला जाता है

माँ और भूख की कोई परिभाषा नहीं पर ही माँ के पास पानी पीकर भी बच्चे भूखे नहीं होते माँ से दूर स्वादिष्ट पकवानों से भी बच्चों की भूख नहीं मिटती। अपनी उड़ान के बाद परों की उड़ान के साथ-साथ भूख भी मुँह चिढ़ाती उड़ती - फिरती रहती है।

288

देखो तो लगता है, संसार सारा भ्रम है
फिर भी इसमें मरना जीना-रोना-गाना
रूठना - मनाना चलता है
पर ध्यान से देखो,
इनके बीच मानव मन कितना सबल
भ्रम में सोता है,
पर भ्रम में जगता नहीं
प्रभात होते ही

नवजीवन नव ऊर्जा से भर,
भ्रम को ललकारता सा
उठ आ खड़ा होता है।
कर्म सत्य है।
कर्म सत्य है दुहराता है

दैनिक जीवन सर्वश्रेष्ठ और कर्मयुक्त है उसी लिए यह बस यही सत्य है।

289

जल समाधि राम लेते हैं, कृष्ण खाते हैं तीर
युग निर्माताओं बताओ - किसने लिखी खुद तेरी तकदीर

सीता का सतीत्व, राधा का हठी प्यार
धर्म के पन्नों पे - धड़कता रहा है धड़कता रहेगा
पर सत्य थोड़ा अजीब है दोनों प्रेमी कर्म जीव हैं
सीता के कभी राम न हुए - न हुए राधा के श्याम
एक का जीवन वन में - एक का वृंदावन में

तदवीर से बड़ी तकदीर है वरना कृष्णा अपना भाग्य वैसा क्यों लिखते ? राम सबके तारणहार और अपने लिए मारण मार्ग यानि जल समाधि तय करते हैं यह क्या है ? जो भी हो - है समझ से परे।

सीता वन में - राधा वृन्दावन में कर्मयोगी से प्रेम की सजा दोनों काटती हैं पर यही सजा, उन्हें एक-दूसरे का पर्याय बना दिया।

राधे बिन श्याम - सीता बिन राम - कल्पना से परे की चीज हो गई मील का पत्थर और यह जुदाई ज्योत न बुझी है न बुझेगी कभी धरती तो क्या आसमान भी झुक जाए अपने सम्पूर्ण ..... बादलों के साथ तब भी नहीं बुझेगी।

290

ये कैसी नजदीकियाँ हैं
ढूँढ़ते अपने ही अपनों में खामियाँ हैं
दूसरे दूर होकर भी, मिटाते हैं दूरियाँ

मिलने के लिए गिनते हैं तारीख
देखते हैं घड़ियाँ
तन से दूर रह कर भी
मन से मन के तार-
जोड़ते हैं एक-दूसरे से स्नेह कड़ियाँ

हमेशा अपने-परायों का फर्क दिख जाता है- जिन्हें अपना या रक्त का रिश्ता कहते हैं वे नजदीकियों में खामियाँ ढूँढ़ते हैं-स्वस्थ भाव नहीं रखते, पर कुछ रक्त से परे रिश्ते बन जाते हैं- ये रिश्ते निर्दोष घड़ियाँ - तारीखों - सालों के कलेण्डर में ये ..... एक पर्व-त्योहार सा - मोती सा चमकाकर ..... स्नेह-भाव रखते हैं चाँद बन जाते हैं - चकोर बन जाते हैं निःस्वार्थ सा इन्तजार करते रहते हैं हमारी एक मुस्कान पे ..... एक नजर में कुर्बान होने के लिए।

दिल की कसम, यह सच हम स्वीकारते हैं।

291

जिन्हें हम अच्छे लगते हैं
या जो हमें अच्छा कहते हैं
वो अक्सर तस्वीर लेते हैं
जो प्यार करते हैं या जिन्हें हम प्यार करते हैं
उबड़ - खाबड़ रास्तों में हाथ थाम लेते हैं
सम्पूर्ण जीवन का वादा न भी निभे दोनों से
चलो कुछ दूर - कुछ देर ही सही हम राह होते हैं

कोई किसी को किसी स्तर पर मन को भाये वो अपने अस्तित्व को एक-दूसरे में अनुभव करते हैं - कोई मानता है कोई नहीं मानता है..... कोई फर्क कहाँ पड़ता है ..... मन के घोड़े का बेलगाम अल्हड़, लगाम, जो पकड़ ले वही हृदय से लग जाए - तो ही एक-दूसरे के सजदे में आजीवन झुका रहता है-

292

मन का मिलना - मस्तिष्क झुकना
वक्त का रुकना - परिभाषा से

परे मसला है-
जिसका जैसा भाग्य
शायद वैसा ही
करने की प्रवृति
प्रकृति देती है,
या व्यक्ति विवेक से
सुन्दर-असुन्दर निर्माण कर लेता है

भाग्य या विवेक कौन हमें सही सही दिशा देती है ? प्रकृति भी और प्रवृति भी उसमें योगदान देकर सुन्दर या असुन्दर बनाती है यह भी सत्य है महासत्य है ।

293

लोगों तुममें एक
भाव होता है
कि तुम सही
सारी दुनिया गलत
पर कभी ध्यान देना
खुद तुम सा गलत कोई नहीं

दूसरों की गलती देखने से अच्छा है अपनी ओर देखा जाय और जो त्रुटि हो दूर किया जाय

294

कितनी भी भयानक रात हो
कितनी ही बड़ी क्यों न बात हो
वक्त के साथ - तितली के परों पे
उड़ जाती है ..... जिन्दगी अपनी रफ्तार में
गुजरते आई है गुजरती जाएगी
जिन्दगी ज्यादा तवज्जो देने से
बिगड़ जाती है-

295

दूर से आशीर्वाद
देते हैं भगवान
पास नहीं आते
'पास आना मना है
तख्ती टाँग देते-
हम मनुष्य कुछ समझते क्यों नहीं
महान बन बच्चों के पास चले जाते हैं
भगवान से बढ़कर जीने की सजा मिलती है
मोह-ममता के आडम्बर में फँस जाता इन्सान
भूल जाता अकबर - सलीम
शाहजहाँ और औरंगजेब की
न जाने जाने-अनजाने कितनों की कहानियों
इसलिए तो इन रिश्तों को पड़ती है
ठोकरे - खानी और अपने ही संतान से अपमान।

ईश्वर अपने पास हम सबको आने देते हैं पर एक दायरा बना कर - आशीर्वाद देते है। यानि जनक - जननी ..... भी अपनी रचनाओं को पास एकदम पास पसन्द नहीं करते-

फिर महामूर्ख - मनुष्य ..... अपनी रचनाओं के सिर पर सवार होने से बाज नहीं आता ..... और ऐसे मोह में चिपक जाता है जैसे खुद अपने ही मधु में मधु मक्खी।

इसलिए रचना से बचो या न बच पाओ तो चिपककर प्राण त्यागने से बेहतर है जहर खा के सो जाओ।

296

जगे की बात छोड़ो, सोते में भी बोलते हैं
हम सब रात दिन पेंडुलम सा डोलते रहते हैं

297

जहाँ तिल की जरूरत, ताड़ खड़ा करते हैं
किनारे खड़े रहकर, मँझधार की बात करते हैं

298

जो पाते हैं उनका सम्मान नहीं, न पाने का शिकवा होता है
जहाँ नम रहना चाहिए, वहाँ अभिमान हो जाता है

299

जोड़ भाग न गुणा जिन्दगी - सिर्फ घटाव है
क्षण जो, जब रूप दिखाये, वही शुक्र मनाए

300

कभी लगता है कठपुतली बन गये, नाचने के लिए
कभी लगता है हास्य-व्यंग्य की मूरत है हँसाने के लिए

301

फूँक-फूँक कर कदम रखते हैं, फिर भी ठोकर खाते हैं
गलती अपनी पर, खरी खोटी सड़क को ही सुनाते हैं

302

भाग्य है आवार पौधा, बिराने में भी फल-फूल जाते हैं
कुछ गमलों क्यारियों में भी सींचो, तो भी मुरझा जाते हैं

303

तकदीर का कमाल इतनी मीठी बोली पर, कोयल काली होती है
इतने गन्दे पैरों पर भी, मोरनी नाच के, सावन को भी लुभाती है

304

भाग्य ही है, वीरांगना होकर भी मनु, धरती पे बिछ जाती है
कल्पना को साकार, करके भी कल्पना आकाश में बिखर जाती है

जीवन के सोलहवें साल पर अनुराग - बाद के सालों पर विश्वास पर पचास के बाद भाग्य पर भरोसा होने लगता है ।

305

खण्ड - खण्ड लोग
अखण्ड हो नहीं सकते,
अखण्ड को खण्ड करने की
आदत छोड़ नहीं सकते

306

भौतिकता में जी रहे हैं लोग
आत्मिकता से नाता तोड़ रहे हैं लोग
कितनी भी मजबूत डोर हो
व्यंग्य की छुरी से काट रहे हैं लोग

307

जाने क्या सोच कर सबके लिए
कलंक का टीका थाली में सजा कर
घूम रहे बस्ती - शहर में लोग
कोई कहे या नहीं, दूसरों को बुरा, खुद को भला कह रहे हैं लोग

308

इतनी खिड़की खोलना
कि साँस चलती रहे-
इतनी ही भूख मिटाना
हिलती-डुलती रहे
उतना ही बोलने देना
कि एक रूसी सरकार
एक नागरिक लगे

309

डराता है पहाड़ दूर से
बड़े होने के गर्व में भी रहता है
पास जाओ चढ़ते जाओ ऊपर निरन्तर
ध्यान से समझो देखो
तुम्हारे हौसलों के संग
पीठ पे हाथ दिए वो भी चलता है

इन सहज वाक्यों के लिए जुवाँ मौन मन मनन कर रहा है।

310

गर्व के दरिया में
डूबते-इतराते लोगों के साथ तैरना
बहुत कठिन है
सोचना भी मत
सही होगा, किनारे पर लौट आना
वरना तय है
भँवर में फँसेंगे
बचने की कल्पना मत करना
जान जाने की पूरी संभावना फिर लगाया जाएगा
आप ही पर कहकहा

साधारण शब्द सुन्दर - साधारण जीवन सुन्दर गर्वीले लोगों से ..... बचना, वरना डूबने की संभावना है।

311

आडम्बर नहीं तो और क्या है रोज मरते हैं उसे जीना कहते हैं
सच में जीने के दिन को, सब मरना कहते हैं

312

परछाईं भी अपनी नहीं होना चाहती, हट के चलती है
फिर किसी दूसरे को अपना कहने में बता किसकी गलती है ?

313

धोखे में जीता है ..... जीता चला जाता है धोखे में ही मरता है
जिसे सबसे अपना कहता है उसी के हाथों जलता है

314

जन्म लेने की सजा, जिन लोगों से मिलती है
जन्म लेनेवाले के मन में उसी पल से, उसके प्रति नफरत की आग सुलगती है

315

जीवन भर सुख-दुःख जो देता है, दे लेता है, ले लेता है
साँसों का भय था, निकलते ही रीति-रिवाज से निर्भय हो, चिता सजा देता है

316

इतनी सी सच्चाई का इतना रोना - गाना है
आडम्बरों के आगे पीछे करते जीना - मरना पड़ता है

सुबह से शाम उपर्युक्त सच्चाइयों का दर्शन होता है ..... फिर भी मनुष्य समाज-घर - रीति-रिवाज मोह - ममता ..... बहुत कम त्याग पाता है काश ..... मृत्युशैय्या से पूर्व यह समझ में आ पाये। जीवन का प्रारंभ अनुराग से होता है तो पर मध्यवस्था में कर्मयोग में विश्वास - बाद के साल तो सिर्फ भाग्य पर भरोसा करता है।

317

कभी दिन में
कभी रात में
मन साथ देता है
दिन घड़ी के काँटों के साथ गुजरता है,
इसलिए रात सुला कर
बेफ्रिक मनमानी पर उतर आता है
रात सखी बन, जहाँ चाहे ले जाती है
गाँव घर, देश-विदेश की छोड़ो
वो तो आजादी मिलते ही तीनों लोक घूम आता है
जश्न मना कर लौटते ही
सोये चेहरे पे तरस आता है
अखिर इसी तन का, मन ठहरा
जो आपको नहीं मालूम अपना
वो भी रहस्य जानता है आपका
आपके पसन्द या पसन्द का मालिक
मनोदशा समझने वाला इकलौता मन
स्वप्न ही सही, पर सुन्दर लोक में
सैर पर ले जाता है
कभी-कभी अपनों से ही नहीं
अजनबी से भी मिला देता है
दोस्त-दुश्मन अच्छा-बुरा
खास संकेत से समझा देता है
कभी - कभी स्वप्न भी हकीकत हुआ
अखबार की सुर्खी बन
मुख्य पृष्ठ पे छप जाता है

मन ही तो अपना है ..... सपना दिखा सही में कुछ राहत देता है- जो दिन के उजाले में नहीं हो पाता। वह रात में यही तो कर देता है।

318

माली क्यारियों
सींचता है
फूलों से जाता हार
पंखुड़ियाँ उड़ जातीं
हवाओं के संग
फिर हो जाता आसपास
बदरंग.....
माली फिर दम भरता है
कर्म फल - से फिर सँवारता है
अक्सर कर्म करनेवालों को
फल नहीं मिलता है
माली से बेहतर
इस मर्म को
शायद ही कोई समझता है

माली से फूलों - क्यारियों - रख-रखाव का रिश्ता, बहुत ही एक तरफा कर्म की मिसाल है। माली को पता है फूल का पराग भ्रमर का है उसकी सुन्दरता दूसरे की आँखों के लिए है उसका रस मधुमक्खियों की धरोहर है- पँखुड़ियाँ ..... धरती की शोभा है खुशबू हवाओं नें अपने नाम कर रखा है- फिर भी माली ..... किस आस से सींचता है ? शायद माली को अच्छी तरह पता है कर्म हूँ मैं मेरे भाग्य मे फल नहीं। माली को गीता पढ़ने की क्या जरूरत वह खूद गीता है।

319

जिस खेल में, पासा पलट जाए
उसे दुबारा मत सजाना
माखौल भरी निगाहें तुम्हारे मात का
आनन्द ले रही है

पासा ही ठहरा, दुबारा पलट वार का
मौका मत देना

कोई भी खेल शुरू करने में जो आनन्द है, वह हार जाने के बाद, दुबारा जीत की कामना से खेला जाता है जो - व्यापार है आनन्द नहीं।

320

जिन्हें आपकी मर्जी की जरूरत नहीं
उन्हें भूल कर भी आवाज मत देना
बेकार शब्दों से वाक्यों से
अन्तरिक्ष भरते रहने से
बेहतर है-
उन शब्दों का हृदय में
समाधि ले लेना

कभी-कभी अपनत्व - प्रेम - अधिकार के चक्कर में वाक्य - बात-विचार व्यवहार बर्बाद होता है, इसलिए इस प्रसंग में जाने से पहले हमें सचेत रहना चाहिए, क्योंकि अपने भावों का अपमान कराना नहीं चाहिए मन की बात मन में रहे, यही बेहतर है।

321

अजीब पेशो पेश है
यहाँ तो सब एक से
बढ़के एक है
उसका गुजारा हो नहीं-
सकता, इस बस्ती में
जो ज़रा भी नेक है

किसी-किसी माहौल से जब एक बारगी पाला पड़ता है तो उसकी विचित्रता से व्यक्ति भौचक रह जाता है और उसे अन्दाज ही नहीं हो पाता ऊँट किस करवट लेनेवाला है और नतीजा ..... अशान्त - डर - भय ..... पेशोपेश .....।

322

चोट लग जाती है
रो - रो परेशान
अनेकों विक्स बाम
मिट्टी से पूछो
कितना काट कूट
कील - पीलर
ठोक - ठाक के
एक मकान होते हैं

323

देखने सुनने से सब
एक जैसे ही हैं
फर्क ये है
एक आदमी एक इन्सान होते हैं

324

हाथ धो के, किसी के पीछे वह ही पड़ते हैं
खुद जिनके हाथ पहले से गन्दे होते हैं
अपने को गुणवान दूसरों को अवगुणकारी बताते हैं
इसी गलती फहमी में वे न खुद को, न दूसरों को पहचान पाते हैं

325

अपनी नाइंसाफी - गद्दारी - लज्जा में जो डूबते हैं
अपनी इसी बात को रफा-दफा करने के बहाने ढूँढ़ते हैं

326

ये अजीब बिस्तर है
रातें बड़ी परेशान हो जाती है

नींद के बगल में अनिद्रा
दोनों में सारी रात गुफ्तगू होती है

धरती की सहनशीलता, एक आदमी, एक इन्सान का फर्क अपने को महान - जाने क्या - क्या दिन भर दिखता है और ज्यादा संजीदा हुए, तो अपनी नींद के बगल में अनिद्रा को सुलाइये ..... सारी रात करवटें बदलते रहिए।

327

जो जैसा है है
याद रखना है
अपना गुण, गुणकारी होता
वक्त बेवक्त सब पे भारी होता है
अपने गुण से कभी नहीं
रूठना चाहिए,
यह वह पौधा है
जो मुश्किल में पनपता है
कभी पड़ जाए कम
बरसात का पानी, तो
ऐसे में गुणों को
मुरझाने मत देना
आँसुओं से पड़े सींचना
तो भी सींचना

अक्सर किसी-न-किसी कमी के साथ हम सब जीने पर मजबूर हैं ..... और ऐसा भी नहीं है कि हम ..... सब एकदम बेनूर हैं हममें कोई हूनर नहीं

इसलिए जैसा जिसमें गुण हों उसको सम्मान से अपने में हरा - भरा रखना चाहिए ..... यही अपना गुण मौके, बे मौके हमें मान सम्मान दिलाता है। जरूरतें पूरी करता है इसको किसी हालत में मुरझाने नही देना है ..... बरसात का पानी कम हो तो आँसुओं का सैलाब इसमें लिए रखना।

328

सामने वाले का भूत,
कहीं आपको याद न जाए
आप इस पर कुछ प्रतिक्रिया करे
उससे पूर्व ही आप वर्तमान में उलझा दिए जाए
आपके सारे तर्क तकरार झूठे साबित होते रहे
ऐसे लोगों से बच के रहा जाए
शातिराना. अंदाज मुस्करा कर
ये आपको वहाँ बुलायेंगे
आपको दूर - दूर तक अंदेशा भी न हो
ऐसी चाल पे चाल चलते जाएँगे
आप आगे-पीछे सोच-सोच - इससे पूर्व हार की घोषणा कर जाएँगे
गलत हों वे, फिर भी
आप पे हावी हो - अपने को निर्दोष बताएँगे
चोर चोरी करता है
सीनाजोरी के बल पर –
अक्सर निर्दोष सलाखों में कैद हो जाते हैं
दोषी पतली गली से निकल जाता है

जो दोषी होता है उसके मन में हमेशा एक शंका भाव होता है, पर आपने को सही साबित करने के लिए ..... या भाव दिखाने के लिए वह जब तक कोई कुछ सोचे इससे पूर्व ही वह ..... वातावरण का ऐसा काया-पलट अपने ..... खोटे विचारों से कर देता है, कि लोग अप्रत्याशित स्थिति का सामना एकाएक करने के कारण ..... अन्य चीजों सें - बातों वे कट, वर्तमान में ही उलझ जाते हैं - और कुटिल की, कुटिलता जीत जाती है ..... इसलिए ऐसे लोगों से उसके बात व्यवहार से बचकर रहना भी मन का सम्मान है-

329

कुछ लड़कियाँ
अजीब होती हैं

जो कुबूल हो
वो कुबूल करता नहीं है
फिर आजीवन कुबूल है, कुबूल है कुबूल है
बोल ही नहीं पाती हैं

मन टूटता है तो भावुक मन - किसी हालत में उसे जोड़ नहीं पाता - अनचाहा कुबूल - सबके मन और होठों का हो जाए, जरूरी नहीं।

330

जीवन में कम चेहरा, पूनम का चाँद बन
दुपट्टे के कोने पे सलमे सितारे सा उतर आता है
कोई चेहरा कन्हैया की बाँसुरी सा .....
मधुर राग लोरी, तो रास सजा जाता है

331

पहचाने नहीं हो तो पहचानो
पंचतत्त्व के हैं हम सभी हैं
अपने को आसमानी समझने की भूल
मूर्ख-महामूर्ख ही करते हैं

332

चारों ओर बिखरे हैं-
क्षणिक साँसों की वो कहानी है
फिर इनके हकदारों की आँखों में
दिखती नहीं, क्षणभंगुरता की कोई निशानी है

333

सीधे सच्चे लोगों की तलाश चलती रहती है
उम्मीद नहीं है।

पर क्या करें हम सब नादान
एक आस सबमें पलती रहती है

334

कभी सोची नहीं, गलत हर्फों से सजा दी जाएगी
सजाने वाले सबल है
पढ़नेवालों के लिए
गलत किताब में ही कहलाऊँगी

मनुष्य की विचित्रता भी अपने-आप मे एक ..... चिन्तन का विषय है ..... न जाने कितने रूप रंग - व्यवहार के आदमी जगते हैं, ... सोते हैं, हँसते हैं- रोते हैं, खोते हैं, सारी बातों का सार ..... अपने-आप से अजनबी होना .... सबसे बड़ी हार है मनुष्य की।

335

मनुष्य एक रिश्तों के
रूप अनेक होते हैं
हर रूप के अलग-अलग रंग होते हैं
इन्द्रधनुष के सारे रंग लेकर,
रिश्तों को रँगते रहते हैं अपने लिए कोई रंग नहीं
बस इसलिए ?
खुद को स्याह कर लेती है
स्याह पर कोई रंग चढ़ता कहाँ
इसलिए रह जाते तन्हा - तन्हा।
संभव हो तो अपने लिए
सफेद रंग बचा के रखो
फिर सारे रिश्ते - रंगों का प्रभाव देखो
सातों रंग तुम्हें भी रँग जाएगी
प्रेम मनुहार सें रिश्तों की झोली

प्रकृति का अंश हम सभी
प्रकृति के साथ क्यों नहीं बनाते पसन्द की
रँगोली
प्रकृति का साथ भूल जाते हैं
इसलिए सारे रंग फीके
स्याह रंग जीत जाते हैं

हम सबको जितने भी रिश्ते मिले हैं उनके जो भी रंग हैं ..... उसकी स्वाभाविकता ..... खुद हम सबसे ही ..... बिगड़ती है ..... । हम सब प्रकृति से सीख पाते । उनका कितना सुन्दर ताल मेल है एक-दूसरे के साथ- हम सब सभी रिश्ते के रंगों को बदरंग स्याह कर लेते हैं ..... काश सफेद रंग बचा लें हम तो ..... प्रकृति कें तरह ही इन्द्रधनुषी ..... रंग सें हम भी स्वप्रेम की रंगोली सजा पाएँगे ।

336

जो जैसा होता है
वैसा ही रहता है
बदलने की उम्मीद कभी रखना भी नहीं
वरना खुद के गालों पे
तमाचा लगता है
रिश्तों को उपजाना मत
काँटेदार फसल या फल खट्टा ही फलता है
अपने उगाए समस्याओं कभी नहीं मिलता हल
फसल कटेगा - दर्द देगा
फल पकेगा - रक्त सा रिसेगा
यानि जो रिसेगा वही रिश्ता होगा
विश्व साहित्य ही नहीं
महाभारत यही कह कर गया है
कैसा वंश ?
कौन सा रिश्ता ?

आदमी तो
विश्ववृक्ष का एक सूखा पत्ता
गर्व से भरा लहराता है
एक दिन मिट्टी में मिल जाता है

हम सबको किस बात का गर्व है ? कितने वंश कितने-कितने बड़े साम्राज्य .... महाभारत - रामायण सब वंश के नाश - वह भी अपने और अपने रक्त के द्वारा - तो न वंश बढ़ाइए - न रिश्तों को रिसने का मौका दीजिए - विश्व वृक्ष के एक सूखे पत्ते सा हमारा जीवन ..... लहराता है ..... जल्द ही सूखता है झरता है मिट्टी में मिलता है फिर किस बात का वंश ?????????

337

रात कभी बेख्वाब बन
रात कभी ख्वाब बन
आँखों में उतरती है
गुजरना है गुजर जाती है
दिन पहाड़ सा
सुबह की हथेली पे उतरता है
ढलता है शाम में पहेली सा
फिर सहर तक का सफर करता है
टूटते तारों का धरती पर बिखरना
चाँद का धरती पर सागर में उतरना
चकोर की चोरी का भी गवाह बनता है

रात की रहस्यमयता ..... जटिल सी है तो साधारण सी भी।

338

एक अधूरा शब्द
एक आधा-अधूरा वाक्य भी

जानलेवा हो सकता है
फिर क्यों ?
अधिक बोलते हैं कष्ट देते हैं जुबान को
क्यों नहीं बोलने से पूर्व
सोच समझ लेते हैं।
हमारी ना समझी - उसे पता है
इसलिए जुबान हममे जुबान नहीं लड़ाता है
मुफ्त का हथियार है
कभी किसी से मदद माँगता नहीं
उसकी निरर्थकता
सार्थकता हमारे हाथ है
अपने इस्तेमाल की तुला से
दरअसल अपने मालिक को तौलता है

ईश्वर सें एक शिकायत है ..... उन्होंने ऐसा हिसाब बैठाया, कि हम उसे पाने के लिए व्यय करते हैं तभी मिलता है। यानि देन-लेन। पर, एक गज़ब कि बोली को, बेमोल दे दिया ..... यानि इसके लिए कोई मोल नहीं चुकाना पड़ता है, मुफ्त की चीज के कारण व्यक्ति, बोली को बड़े आराम से ..... खर्च करने से झिझकता नहीं है ..... दिन भर बिना सोचे-समझे बोलता रहता है ..... नतीजा जो बोलना नहीं है वह भी बोल जाता है ..... सामने वाले पर इसका क्या असर पड़ता है अच्छा या बुरा कुछ उसे यह समझ में, बोली भी सार्थकता और निरर्थकता का अन्तर नहीं दिखता है ..... वह मुफ्त के हथियार से, किसी को रक्त निकाले बिना काट डालता है।

बेचारी बोली अपनी कीमत कभी नहीं माँगती, इस्तेमाल होती रहती है, पर वह अपने इस्तेमाल की तुला से ..... अपने मालिक को तौलती रहती है ..... इसलिए हम सबको भी चाहिए कि अपनी बोली को निरर्थक न गँवायें - उसका सार्थक इस्तेमाल करें बोली की तुला पे अपने सम्मान का पलड़ा ऊँचा रहने दें।

339

शक्ति पाने के लिए नौ दिनों का व्रत समझते हैं
जन्म पाने के नौ महीनों का रक्त का रिश्ता साध लेते हैं

सारी दुनिया में ढोल बजा कर नारी को पूजते हैं
कुछ ग्रंथों का दुहाई देकर मंदिर बना
मौन मूर्ति सीता को सजाते हैं
कभी उसकी अग्नि परीक्षा
कभी धोखे से वन में भेज देते हैं
संविधान पढ़-पढ़ा ले भले
पर व्यवहार में हक कहाँ देते हैं
प्रदर्शन चाँद पर भेजने का
परवाज़ दिखा स्वप्न आँखों में भर
वास्तव में-
दहेज - हत्या - तलाक - का दंश ही देते हैं

हमारे हक में नारे, प्यारे - प्यारे लगा बस में, ट्रेन में, सड़कें, गलियों, चौराहों दिन के उजाले हो या रात के अंधेरे ये शारीरिक उत्पीड़न के लिए

अपने भी पराये भी .... कतार में नजर आते हैं अब तो इतनी तरक्की कर लिये हैं

भेड़िया बन - अपनी, भूख के सामने उम्र भी भूल जाते हैं

माफ करो

ऐसे दौर में मुझे मत पूजो - दिखावा करो बंद नौ दिनों फूल - चन्दन दीप - नव चीर अलंकरण फिर वहीं कीचड़ - कालिख तनमन और चीरहरण अपने को शिकार कराने के लिए अपनी ही मिट्टी से अब नहीं कोई पुलिंग गढ़न। आध्यात्मिक भाव से परे जो दुनिया है उसके कटघरे में, स्त्रियों के कोई प्रश्न यक्ष-प्रश्न या अक्षय प्रश्न बन, पुरुष और स्त्री के बीच खड़ा है अपमान - मान - सम्मान का रामायण काल से सिर झुका के खड़ा है- सीता को धोखे से वनवास आज डंके की चोट पर दहेज हत्या, तलाक, और भी न जाने कितने तरह के अत्याचार किये जा रहे हैं। न घर सुरक्षित, न ट्रेन, न बस, न रात, न दिन सब असुरक्षित, यानि अपमान की पराकाष्ठा-पर दिखावे के लिए पूजा-पाठ का दस दिनों का कर्मकाण्ड शक्ति स्वरूपा मान, आशीर्वाद कामना से पूजन, सब दिखावटी बनावटी दिखते हैं कोई श्रद्धा नहीं - कोई पवित्र भाव नहीं - बस दस दिन का खेल अब मत खेलो - अभी फूल - फल, चन्दन फिर कालिख - वनवास चीरहरण - नौ दिनों तक महाशक्ति मानना, सिर्फ

इसलिए कि कार्यभार नौ महीने ढोते हुए एक रिश्ता गाठें ..... अब मुझे मंजूर नहीं नौ महीने के गर्मभार की कीमत नौ दिनों पूजन वाह !

340

जब तक में मान न हो
व्यक्ति दे नहीं पाता सम्मान
कोशिश करनी चाहिए
जिन नजरों में मान न हो - उनके सामने नहीं जाना चाहिए

नैनन नहीं स्नेह तुलसी वहाँ न जाइए ..... वाली बात है ।

341

किसी - किसी बात को बेफिक्र होकर सुनिए
दिल न स्वीकारे उसे दिमाग के हवाले करिए
दिल नाजुक डरा सहमा छिपा सदा धड़कता रहता है
दिमाग कठोर बोझ उठा लेता है, पड़ती है लाठी प्रहार सह लेता है

दिल दिवाना होता है सच है ..... दिमाग धैर्यवान है सब सहता है ।

342

दिल दिवाना होता है नाराज हुआ हार्ट अटैक की धमकी देता है
किसी को अपनी सेवा के बदले रोज गोली खिलवाता है
दिमाग संयत है सर दर्द भी दे तो तेल, विक्स, वाम लेकर दफा हो जाता है
सेवा दे थकता है तो सो जाता है ब्रेन हेमरेज की धमकी कम ही देता है

दिल - दिल - दिल सुनते - सुनते ..... दिल भाग खड़ा होता है या तंग आ गया तो हार्ट अटैक ।
दिमाग - संयत होकर - सहता समझता है थोड़ी सेवा से भी खुश रहता है कभी - कभी ही अति होने पर ब्रेन हेमरेज की धमकी देता है ।

यानि जो सिर्फ दिल की गली में चक्कर लगाते हैं ..... उन्हें कभी - कभी पछताना भी पड़ता है, पर जो दिमाग का दामन थामते हैं वे ज्यादा नहीं पछताते।

343

सीता को भेजा वन में
दावा किया है मेरे मन में,
यह भी नहीं सोचा
तुम्हारा ही अंश पल रहा तन में।
राम-सीता-वनवास-समझ में होना आता नहीं, विश्वास होता नहीं
अजीब थे, अजीब ही रहोगे
बहुत हुआ अब तो समझो
हाड़-मांस के हम भी हैं
धड़कता है दिल इस तन में
वनवास भेजो - कभी सोचना हाड़-मांस के हम भी हैं।
सहन-शक्ति की सीमा है
मेरे लिए धरती की गोद
अब यह पाठ नहीं पढ़ेंगे
सीता गई थी बाजी हार,
फिर भी दे गई संदेश
अब कोई नहीं उपदेश
अब तो है मेरी आवाज में
तीनों सेनाओं का बल। मेरा अस्तित्व
अब नहीं निर्बल।

सीता की सहनशीलता - भक्ति ..... चुप्पी ने एक प्रतिरोध पैदा कर दिया है - राम से नहीं सीता से ही सवाल करने का मन है उतनी कमजोर कैसे हो गई माँ।

धरती के लिए इतनी लगन थी ..... कि अपने वजूद पर प्रश्न - प्रश्न - प्रश्न। क्षमा माँ - अब कोई उपदेश - प्रति भक्ति ..... नहीं - बस अब हमारे व्यक्तित्व को कोई कमजोर आकर दिखाए तो तीनों सेनाओं की शक्ति न लगा दूँ तो तुम्हारी बेटियाँ नहीं।

344

संकल्प करने से नहीं
संकल्प कर्म बने तो बात बनती है
बात करने से नहीं
बात समझने से बात बनती है
संघर्ष की रात कितनी
लम्बी क्यों न हो
हिम्मत जुटाने से बात बनती है
रात है अंधेरी होगी ही-
एक पक्ष है अमावसं
फिर देखो चाँदनी कैसे धरती पे
उतर आती है-

दृढ़ विश्वास ..... मेहनत के सामने अंधेरे को उजाले में तब्दील होना पड़ता है ।

✦✦✦